

॥ वयं राष्ट्रे जागृत्याम पुरोहिताः ॥



वैदिक उपासना



राष्ट्र एवं धर्मके पुनरुत्थान हेतु धार्मिक मासिक पत्रिका



श्याम मने चाकर राखो जी। चाकर रहसूं बाग लगासूं।
नित उठ दरसण पासूं। वृन्दावनकी कुंजगलिनमें तेरी लीला गासूं ॥

उपासना कार्य

पितृपक्षके मध्य हुए साधना शिविरके क्षणचित्र

वैदिक उपासना पीठके इन्दौर आश्रममें दिनांक ६, ७, ८, अक्टूबरको साधना शिविरका आयोजन किया गया जिसमें स्थानीय एवं भारतके भिन्न राज्योंसे तथा जर्मनीसे जिज्ञासु तथा साधक सहभागी हुए। इस शिविरमें योग निद्राद्वारा चित्त शुद्धि, ब्रह्मनाद ध्यानद्वारा चिकित्सा तथा साधना विषयक जानकारी दी गई।



पुरुषोंमें श्राद्ध एवं तर्पण सम्बन्धी जागृति निर्माण करने हेतु ७ अक्टूबरको पिण्डदान एवं तर्पण विधियुक्त पार्वण श्राद्धकी विधि रखी गई जिसमें सभीने उत्साहपूर्वक भाग लिया और सभीको अनुभूतियां भी हुईं।



शिविरके अन्तिम दिवस भक्तवात्सल्य आश्रमके महिला मण्डलद्वारा भक्तराज महाराजके चैतन्यदाई भजनोंका कार्यक्रम रखा गया और उसके पश्चात भण्डारा हुआ।



इसी शिविरके मध्य भगवान परशुरामजीकी जन्मस्थली जानापाव जो इन्दौरसे ५० किलोमीटरपर एक पहाडीपर स्थित है, वहां भी साधक दर्शन हेतु गए। उसी क्षेत्रमें रहनेवाले सन्त पूज्य हीरा बाबाका भी सभीको दर्शन एवं आशीर्वाद प्राप्त हुआ। बाबाने हिन्दू राष्ट्रके विषयमें मार्गदर्शन करते हुए कहा कि यदि हिन्दू संगठित हो जाएं तो हिन्दू राष्ट्रकी स्थापना त्वरित हो जाएगी! बाबाको वैदिक उपासना पीठद्वारा प्रकाशित पत्रिका 'वैदिक उपासना' भेंट की गई।

महालक्ष्मी अष्टकम्

नमस्तेस्तु महामाये श्रीपीठे सुरपूजिते ।

शङ्खचक्रगदाहस्ते महालक्ष्मि नमोस्तु ते ॥१॥

अर्थ : श्रीपीठपर स्थित और देवताओंसे पूजित होनेवाली हे महामाया, तुम्हें नमस्कार है। हाथमें शङ्ख, चक्र और गदा धारण करनेवाली हे महालक्ष्मी, तुम्हें प्रणाम है।

नमस्ते गरुडारूढे कोलासुरभयङ्करि ।

सर्वपापहरे देवी महालक्ष्मि नमोस्तु ते ॥२॥

अर्थ : गरुडपर आरूढ हो कोलासुरको भय देनेवाली और समस्त पापोंको हरनेवाली हे भगवति महालक्ष्मी ! तुम्हें प्रणाम है।

सर्वज्ञे सर्ववरदे सर्वदुष्टभयङ्करि ।

सर्वदुःखहरे देवी महालक्ष्मि नमोस्तु ते ॥३॥

अर्थ : सब कुछ जाननेवाली, सबको वर देनेवाली, समस्त दुष्टोंको भय देनेवाली और सबके दुःखोंको दूर करनेवाली, हे देवी महालक्ष्मी ! तुम्हें नमस्कार है।

सिद्धिबुद्धिप्रदे देवी भुक्ति मुक्ति प्रदायिनि ।

मन्त्रपूते सदा देवी महालक्ष्मि नमोस्तु ते ॥४॥

अर्थ : सिद्धि, बुद्धि, भोग और मोक्ष देनेवाली हे मन्त्रपूत भगवती महालक्ष्मी, तुम्हें सदा प्रणाम है।

आद्यन्तरहिते देवी आद्यशक्तिमहेश्वरि ।

योगजे योगसम्भूते महालक्ष्मि नमोस्तु ते ॥५॥

अर्थ : हे देवी ! हे आदि-अन्तरहित आदिशक्ति, हे महेश्वरी, हे योगसे प्रकट हुई भगवती महालक्ष्मी, तुम्हें नमस्कार है।

स्थूलसूक्ष्ममहारौद्रे महाशक्तिमहोदरे ।

महापापहरे देवी महालक्ष्मि नमोस्तु ते ॥६॥

अर्थ : तुम स्थूल-सूक्ष्म एवं महारौद्ररूपिणी हो, महाशक्ति महोदरा हो और बड़े-बड़े पापोंका नाश करनेवाली हो। हे महालक्ष्मी, तुम्हें नमस्कार है।

पद्मासनस्थिते देवी परब्रह्मस्वरूपिणि ।

परमेशि जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोस्तु ते ॥७॥

अर्थ : हे कमलके आसनपर विराजमान परब्रह्मस्वरूपिणी देवी ! हे परमेश्वरी, हे जगदम्बे, हे महालक्ष्मी, तुम्हें नमस्कार है।

श्वेताम्बरधरे देवी नानालङ्कारभूषिते ।

जगत्स्थिते जगन्मातर्महालक्ष्मि नमोस्तु ते ॥८॥

अर्थ : हे देवी, तुम श्वेत वस्त्र धारण करनेवाली और नाना प्रकारके आभूषणोंसे विभूषिता हो। सम्पूर्ण संसारमें व्याप्त एवं अखिल लोकोंको जन्म देनेवाली हो। हे महालक्ष्मी, तुम्हें मेरा प्रणाम है।

महालक्ष्म्यष्टकं स्तोत्रं यः पठेद्भक्तिमान्नरः ।

सर्वसिद्धिमवाप्नोति राज्यं प्राप्नोति सर्वदा ॥९॥

अर्थ : जो मनुष्य भक्तियुक्त होकर इस महालक्ष्म्यष्टक स्तोत्रका सदा पाठ करता है, वह सारी सिद्धियों और राज्यवैभवको प्राप्त कर सकता है।

क्र. विषय विवरण**पृष्ठ क्रमांक**

१. महालक्ष्मी अष्टकम्	१
२. सम्पादकीय	३
३. श्रीगुरु उवाच	६
४. धर्मधारा	
अ. सुवचन	७
आ. शंका समाधान	११
इ. सूक्ष्म जगत	१४
ई. उत्तिष्ठ कौन्तेय	१८
५. साधकोंकी अनुभूतियां	२६
६. व्रत-त्योहार	२८
७. सन्त चरित्र	३२
८. हिन्दू राष्ट्रकी स्थापनाकी दिशा	३५
९. स्वास्थ्य रक्षक सैन्धव लवण (नमक)	३८
१०. आइए सीखें संस्कृतनिष्ठ हिन्दी	४०

शास्त्र वचन

धर्मेण हन्यते व्याधिः हन्यन्ते वै तथा ग्रहाः ।

धर्मेण हन्यते शत्रुः यतो धर्मस्ततो जयः ॥

अर्थ : धर्मसे व्याधि दूर होता है, ग्रहोंका हरण होता है, शत्रुका नाश होता है। जहां धर्म है, वहीं जय है।

卐卐卐卐卐

धर्मस्य फलमिच्छन्ति धर्म नेच्छन्ति मानवाः ।

फलं पापस्य नेच्छन्ति पापं कुर्वन्ति सादराः ॥

अर्थ : लोगोंको धर्मका फल चाहिए; परन्तु धर्मका आचरण नहीं करना चाहते हैं। पापका फल नहीं चाहिए; परन्तु गर्वसे पापाचरण करते हैं!

卐卐卐卐卐

धर्मो मातेव पुष्पानि धर्मः पाति पितेव च ।

धर्मः सखेव प्रीणाति धर्मः स्निह्यति बन्धुवत् ॥

अर्थ : धर्म माताके समान हमें पुष्ट करता है, पिताके समान हमारा रक्षण करता है, मित्रके समान प्रसन्नता देता है और सम्बन्धियोंकी भांति स्नेह देता है।

卐卐卐卐卐

न क्लेशेन विना द्रव्यं विना द्रव्येण न क्रिया ।

क्रियाहीने न धर्मः स्यात् धर्महीने कुतः सुखम् ॥

अर्थ : क्लेश बिना द्रव्य नहीं, द्रव्य बिना क्रिया नहीं, क्रिया बिना धर्म सम्भव नहीं और धर्मके बिना सुख कैसे हो सकता है?

卐卐卐卐卐

वैदिक उपासना

अर्पण मूल्य - ₹ १०

सम्पादक : तनुजा ठाकुर

वार्षिक सदस्यता शुल्क - ₹ १००

सह-सम्पादक : नागराज इजंतकर

पञ्चवार्षिक सदस्यता शुल्क - ₹ ४००

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक, वैदिक उपासना पीठके लिए मैसर्स युगंधर प्रिन्टर्स, ३७० उषा नगर एक्स., इन्दौरसे (म.प्र.) मुद्रित कराकर कार्यालय : १५०/बी वैशाली नगर, इन्दौर (म.प्र.) से प्रकाशित ।

ईमेल : vedicupasanapeeth@gmail.com जालस्थल (website)- www.vedicupasanapeeth.org

सम्पर्क : +९१ ९७१७४६२५२३, ९९९९६७०६१५ (+ 91 9717492523 / 9999670915)



सबरीमाला की प्रथापर न्यायालयका हस्तक्षेप अनुचित

विगत दिनों देशके सर्वोच्च न्यायालयने महिलाओंको सबरीमाला मन्दिरमें जानेकी अनुमति दे दी है। विगत वर्ष १३ अक्टूबरको उच्चतम न्यायालयके तीन न्यायाधीशोंकी खण्डपीठने संविधानके अनुच्छेद-१४ में दिए गए समानताके अधिकार, अनुच्छेद-१५ में धर्म और जातिके आधारपर भेदभाव रोकने, अनुच्छेद-१७ में छुआछूतको समाप्त करने जैसे प्रश्नों सहित चार विषयोंपर पूरे प्रकरणकी सुनवाई पांच न्यायाधीशोंकी संविधान पीठको स्थानान्तरित कर दी थी। याचिकाकर्ता 'द इंडियन यंग लायर्स एसोसिएशन'ने सबरीमाला स्थित भगवान अयप्पाके इस मन्दिरमें विगत ८०० वर्षोंसे महिलाओंके प्रवेशपर लगे प्रतिबन्धको चुनौती दी थी। याचिकामें केरल शासन, मन्दिरका व्यवस्थापन देख रहे 'द त्रावनकोर देवस्वम बोर्ड' और मन्दिरके मुख्य पुजारी सहित जिलाधीशको १० से ५० आयु वर्गकी महिलाओंके प्रवेशकी अनुमति देनेकी मांगकी थी जबकि वहां १० सालसे ५० वर्ष आयुकी महिलाओंका प्रवेश वर्जित है। विशेषरूपसे जिनके रजस्वला होनेकी सम्भावना रहती हैं, उन महिलाओंका मन्दिरमें प्रवेश निषेध है; क्योंकि धार्मिक मान्यताके अनुसार, यहां आनेवाले श्रद्धालुओंको ४१ दिनोंका व्रत करना होता है और इस अवधिमें 'शुद्ध' रहना आवश्यक है, जबकि १० से ५० वर्ष आयु समूहकी महिलाओंके लिए प्रकृतिके अनुसार यह सम्भव नहीं है। धार्मिक मान्यताके अनुसार भगवान अयप्पा ब्रह्मचारी हैं और श्रद्धालुओंका विश्वास है कि जो महिलाएं रजस्वला हो सकती हैं, वे उनसे दूर रहें अन्यथा वे कुपित हो शाप दे सकते हैं।

पौराणिक कथाओंके अनुसार अयप्पाको भगवान शिव और मोहिनीका (विष्णुजीका एक रूप) पुत्र माना जाता है। इनका एक नाम हरिहरपुत्र भी है। इनके दक्षिण भारतमें कई मन्दिर हैं, उन्हींमेंसे एक प्रमुख मन्दिर है सबरीमाला। इसे दक्षिणका तीर्थस्थल भी कहा जाता है।

सबरीमाला प्रकरणपर आए इस अयोग्य निर्णयका देशमें कुछ मुस्लिम मतोंके लालची राजनीतिक पक्षों और धर्माभिमान रहित कुबुद्धिवादियोंके एक वर्गने स्वागत किया है, वहीं अधिकांश सन्तों, भाजपा, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ आदि राष्ट्रवादी समूहोंने इस निर्णयका प्रतिकार करते हुए तथा इसे हिन्दुओंकी धार्मिक आस्थापर न्यायालयका अनुचित हस्तक्षेप निरूपित करते हुए, इस निर्णयपर पुनर्विचारकी मांग उच्चतम न्यायालयसे की है और प्रसन्नताका विषय है कि राज्यकी धर्मनिष्ठ महिलाओंने इसके विरोधमें तीव्र आन्दोलन भी चला रखा है।

हम भी उच्चतम न्यायालयके इस निर्णयका विरोध करते हैं और न्यायालयसे जानना चाहते हैं कि यह देश यदि संविधानसे चल रहा है तो इस प्रकारके निर्णय माननेको केवल हिन्दू ही बाध्य क्यों हैं? क्या सभी मस्जिदोंमें मुसलमानी महिलाओंको प्रवेश नहीं दिया जाना चाहिए?

वस्तुतः इस देशका संविधान मात्र सात दशक पुराना है; किन्तु धर्मनिष्ठ यह राष्ट्र अर्वाचीन है और धार्मिक विश्वासके आधारपर ही संचालित है; अतः केरल शासनको भी चाहिए कि वह इस निर्णयके विरुद्ध हिन्दुओंकी धार्मिक मान्यताके अनुसार कोई विधान बनाए और धार्मिक परम्पराओंमें अनुचित हस्तक्षेपको रोके! भारतके सभी हिन्दुओंने भी इस सन्दर्भमें अपने विरोध व्यक्त करना चाहिए क्योंकि यह दक्षिणके कोई देवालयपर दिया गया अयोग्य निर्णय नहीं यह हिन्दू धर्मके आस्थापर किया गया आघात है; अतः इस सर्वत्र विरोध होना चाहिए! न्यायालयको यह भान होना चाहिए कि यह हिन्दू बहुल देश है अतः हिन्दुओंकी धार्मिक भावनाओंको ध्यानमें रखते हुए अपना निर्णय दें। वस्तुतः ऐसे निर्णय लेनाका अधिकार मात्र साधू-सन्तोंद्वारा संचालित धर्म संसदको ही होना चाहिए; किन्तु निधर्मी लोकतन्त्रसे ऐसी अपेक्षा रखना व्यर्थ है!

हिन्दुओंकी एकताका परिणाम अब दिखने लगा है

एक समय था जब हिन्दुओंको स्वयंको हिन्दू कहते हुए संकोच होता था; परन्तु अब स्थिति परिवर्तित हो रही है। वे राजनीतिक दल जिन्होंने विगत ७० वर्षोंमें मतोंके लालचमें मात्र और मात्र मुसलमानोंका तुष्टिकरण करनेका कुकृत्य किया, वे भी अब हिन्दुओंके मतोंके लिए उनके चरणोंमें बिछे जा रहे हैं। उदाहरणके लिए इस देशमें सबसे अधिक अवधितक शासन करनेवाला दल कांग्रेस, जिसने रामसेतुके प्रकरणपर न्यायालयमें शपथ पत्रके माध्यमसे भगवान श्रीरामके अस्तित्वको ही अस्वीकार किया था और 'रामजी'को काल्पनिक पात्र कहा था, उसकी नेता सोनिया गांधी आज रामलीलामें रामजीका पात्र करनेवाले कलाकारोंको पूजती दिख रही हैं।

कभी भी कोई हिन्दू उत्सव सार्वजनिक रूपसे नहीं मनानेवाले राहुल गांधी भी स्वयंको शिवभक्त कहनेको विवश हैं। सोमनाथके मन्दिरमें दर्शन करनेसे पूर्व जिन्होंने वहांके अभिलेखमें अपना नाम एक अहिन्दूके रूपमें प्रविष्ट कराया हो, ऐसे अहिन्दूको भी 'कैलाश मानसरोवर'की यात्रा और भारतके अनेक मन्दिरोंमें दर्शन करने जानेकी विवशता क्यों है? कारण मात्र एक है, हिन्दुओंका संगठन!

१९९० में अयोध्यामें कारसेवकोंपर 'गोली' चलानेवाले और निर्लज्जतासे यह वक्तव्य देनेवाले कि यदि हिन्दुओंको मारनेसे मुस्लिमोंके मत मिलते हैं तो मैं और हिन्दुओंको मारूंगा। ऐसे हिन्दूद्रोहीके पुत्र अखिलेश यादवको भी घोषणा करनी पड़ी कि वह यदि सत्तामें आए तो भगवान विष्णुके नामपर नगर बसाएंगे। वैसे तो अब हिन्दू किसी भी हिन्दूद्रोहीको सत्तामें आने नहीं देंगे तथापि उनसे पूछा जाना चाहिए कि जब वे सत्तामें थे, तब उन्हें यह विचार क्यों नहीं

आया? क्या सैफई महोत्सवके नामपर, अश्लील गतिविधियोंमें, जनताके धनका नाश करनेवाले, कभी विष्णुजीके नामपर नगर बसा सकेंगे? मात्र कुछ दिनों पूर्व प्रयागराजके मूल नामको उत्तर प्रदेश शासनद्वारा पुनः रखे जानेपर आपत्ति जतानेवाले, क्या विष्णुजीके नामपर नगर बसाएंगे? क्या यह मात्र घोषणा नहीं है? तथापि उन्होंने यह घोषणा की है तो इसका मात्र एक ही कारण है और वह है कि वे हिन्दू मतोंको अपने पक्षमें डलवाना चाहते हैं। आजके हिन्दू इन षड्यन्त्रोंको भलीभांति समझते हैं और अब भी किसी कपटका ग्रास नहीं बनेंगे।

प्रखर हिन्दुत्वनिष्ठ वीर सावरकरजीने कहा था कि यदि हिन्दू एकत्र होकर मतदान करने लगे तो राजनेता अपने वस्त्रोंके ऊपर जनेऊ पहने दिखेंगे, आज उनका कथन सत्य सिद्ध हो रहा है और हिन्दू संगठनके परिणाम भी दिखने लगे हैं। इसका नवीन उदाहरण शबरीमलय (सबरीमाला) प्रकरणपर उच्चतम न्यायालयके निर्णयके पश्चात् भी किसी 'अयोग्य' व्यक्तिको दर्शन करने नहीं देना, यह मात्र हिन्दुओंके प्रतिरोधके कारण हुआ है।

हिन्दुओ! आज कुछ ही हिन्दू एकत्र हैं तो यह परिणाम दिख रहा है। विचार करें! आधेसे अधिक हिन्दू अपने अधिकारोंकी लिए सचेत हो जाएं तो क्या हिन्दू राष्ट्रकी स्थापना नहीं हो सकती? अवश्य हो सकती है। हिन्दू राष्ट्रकी स्थापना होनेपर बंगालमें हिन्दुओंपर अत्याचार, लव जिहाद, गंगाकी स्वच्छता, गौ हत्या, राम मन्दिरका निर्माण, अन्यायपूर्ण और विलम्ब करनेवाली न्यायालयीन व्यवस्था आदि सभी समस्याएं स्वतः ही समाप्त हो जाएंगी; इसलिए अपनी सारी ऊर्जा और ध्यान हिन्दू संगठनमें लगाएं!

भारतके कुछ मन्दिर जहां पुरुषोंका प्रवेश है प्रतिबन्धित

भारतके कुछ ऐसे देवालय जिनमें पुरुषोंका प्रवेश आज भी प्रतिबन्धित है!

जिस नारीवादका आधार लेकर तथाकथित बुद्धिजीवी महिलाएं रोना रो रही हैं, उन्हें पता होना चाहिए कि भारतके कई ऐसे देवालय (मन्दिर) हैं जहां पुरुषोंके प्रवेशपर प्रतिबन्ध है। इसका अर्थ कोई भेदभाव नहीं; अपितु धार्मिक आस्थासे जुड़ा हुआ है। अनेक शतकोंसे स्थापित इन व्यवस्थाओंमें कभी पुरुषोंद्वारा देवालयोंमें बलात (जबरन) प्रवेश करनेका प्रयास नहीं किया गया।

आइए जानते हैं भारतके कुछ ऐसे ही देवालयोंके विषयमें जहां पुरुषोंका प्रवेश वर्जित है-

*** नारी सबरीमला :** सबरीमाला केरलमें हैं और सबसे अधिक यह देवालय इस समय चर्चामें हैं; इसलिए हम केरलसे ही आरम्भ करते हैं। केरलके तिरुवनंतपुरममें देवी पार्वतीका देवालय है। इस देवालयमें हर वर्ष प्रायः ३० लक्ष (लाख) महिलाएं दर्शनके लिए आती हैं। इसे 'नारी सबरीमला'के नामसे भी जाना जाता है। इसमें पुरुषोंका प्रवेश वर्जित है।

*** चक्कूलातुकावु देवालय :** यह केरलके अलापुझा जनपदमें स्थित है। इसमें प्रतिवर्ष पोंगलका विशेष त्योहार मनाया जाता है। इस देवालयमें लाखों महिला श्रद्धालु भाग लेती हैं। यह कार्यक्रम प्रायः १० दिनोंतक चलता है, जिसे 'नारीपूजा'के नामसे भी जानते हैं। इस मध्य यहां पुरुषोंका प्रवेश विशेषरूपसे वर्जित होता है।

*** देवी कन्याकुमारी :** तमिलनाडुके देवी कन्याकुमारीका यह देवालय ५१ शक्तिपीठोंमेंसे एक है। देवी भगवतीके इस स्वरूपको सन्यासकी देवीके रूपमें भी जाना जाता है। यही कारण है कि इस देवालयके गर्भगृहमें विवाहित पुरुषोंका प्रवेश पूर्णतः प्रतिबन्धित है। माना जाता है कि विवाहित पुरुष देवीके इस स्वरूपके दर्शन कर लें तो उनके विवाहित जीवनमें नकारात्मकता आ जाती है। इसी कारणसे देवालयके गर्भगृहमें विवाहित पुरुषोंका प्रवेश वर्जित है।

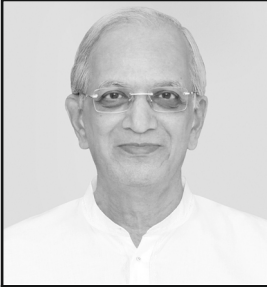
*** ब्रह्मा मन्दिर :** राजस्थानके पुष्करमें ब्रह्माका यह एक मात्र देवालय है। यहां गर्भगृहमें विवाहित पुरुष श्रद्धालुओंका

जाना वर्जित है। एक मान्यताके अनुसार देवी सरस्वतीके शापके कारण विवाहित पुरुषोंको भीतर जानेसे रोका जाता है।

*** कामाख्या मन्दिर :** आन्ध्र प्रदेशके विशाखापत्तनममें कामाख्या देवीका देवालय है। इस परिसरमें मात्र महिलाओंको पूजा करनेका अधिकार है। इतना ही नहीं इस देवालयकी पूजा भी एक महिला ही करती है। इस देवालयमें पुरुषोंका प्रवेश वर्जित है।

*** कोट्टनकुलांगरा श्रीदेवी मन्दिर :** इस देवालयका उल्लेख किए बिना यह सूची अधूरी ही रहेगी, यहां पुरुषोंको प्रवेश तो मिल जाता है; किन्तु उसके लिए उन्हें स्त्री रूप धरना पड़ता है। यहां प्रत्येक वर्ष चाम्याविलक्कू त्योहार मनाया जाता है, जिसमें देवीकी पूजा करनेके लिए पुरुष पहुंचते हैं। कोत्तनकुलांगरा देवीके देवालयमें पुरुषोंके लिए एक पृथक्सा कोना भी है। जहां वस्त्र और शृंगारकी व्यवस्था है। देवालयमें प्रवेशसे पहले सभी पुरुष साड़ी और आभूषण ही नहीं पहनते; अपितु पूरे सोलह शृंगार करते हैं। विशेष बात यह है कि इस प्रकार महिला बननेकी प्रथाके पश्चात भी यहां पुरुषोंकी बहुत भीड़ लगती है और पुरुष बड़ी संख्यामें विशेष पूजामें भाग लेते हैं। इसमें पुरुष न मात्र साड़ी पहनते हैं; अपितु सर्व शृंगार कर, केशमें गजरा लगानेके पश्चात ही उन्हें देवालयमें प्रवेशकी स्वीकृति दी जाती है। इस देवालयमें बृहन्नल अथवा क्लीब (हिजडे, ट्रांसजेन्डर) भी आते हैं।

इसी प्रकार बिहारके मुजफ्फरपुर जनपदमें माता मन्दिर है, जहां पुरुषोंकी प्रवेश प्रतिबन्धित है, उत्तरप्रदेशके चंदौली जनपदके नगर सकलडीहामें एक १२० वर्ष पुराना मन्दिर है। यह देवालय सन्त श्रीपथकी स्मरणमें स्थापित किया गया था। कहा जाता है कि श्रीपथने बेटियोंके विजय और बेटोंकी पराजयकी कामना की थी। ऐसी मान्यता है कि इस देवालयमें जब कभी भी कोई पुरुष प्रवेश करता है, उसका कुछ न कुछ बुरा अवश्य होता है। उसका भाग्य बिगड़ जाता है और सब कुछ उल्टा-पुल्टा होने लगता है।



परात्पर गुरु डॉ. जयंत आठवले
सनातन संस्थाके संस्थापक

माता-पिताके प्रति होना चाहिए कृतज्ञता

किसीने थोड़ी बहुत सहायता की, तब भी हम उनके प्रति कृतज्ञ होते हैं। माता-पिता तो हमें जन्म देते हैं, हमें शैशव अवस्थासे बड़ा करते हैं;

अतः उनके प्रति कितनी कृतज्ञता होनी चाहिए ?, माता-पिताके वृद्ध होनेके पश्चात अन्तिम समयतक उनका ध्यान रखना, यह कृतज्ञता व्यक्त करनेका एक मार्ग है।

॥ ॥ ॥ ॥ ॥

हिन्दू धर्मके महत्त्वसे अज्ञात सर्वधर्मसमभावी हिन्दू सन्त

केवल हिन्दू सन्त ही 'सर्वधर्मसमभाव' शब्दका उपयोग करते हैं। अन्य किसी भी धर्म या पन्थमें इस शब्दका उपयोग नहीं किया जाता। प्रत्येक जन हमारा ही धर्म अथवा पन्थ श्रेष्ठ है, ऐसा कहता है।

॥ ॥ ॥ ॥ ॥

हिन्दू राष्ट्रकी स्थापनासे मिलेगा सर्व हिन्दुओंको आधार

पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका इत्यादि देश ही नहीं, भारतके कश्मीरसह सभी हिन्दू आधारहीन हो गए हैं। यह आधार देने हेतु हिन्दू राष्ट्रकी स्थापना करना अपरिहार्य हो गया है।

॥ ॥ ॥ ॥ ॥

ईश्वर अश्रद्धावान व्यक्तिकी नहीं करते हैं सहायता

बन्दरियाके बच्चेको अपनी मांपर पूर्ण श्रद्धा होती है; इसलिए बन्दरिया जब १०-१५ फीटकी दूरीपर, एक वृक्षसे दूसरे वृक्षपर कूदती जाती है तब भी उसके पेटको भींचकर बैठे बच्चेको डर नहीं लगता। इसके विपरीत

मानवकी ईश्वरपर श्रद्धा नहीं होनेके कारण वह उन्हें पूर्ण श्रद्धासे पकड़कर नहीं रखता; अपितु उन्हें छोड़ देता है, इसलिए ईश्वर उसका उत्थान नहीं कर पाते।

॥ ॥ ॥ ॥ ॥

क्रान्ति यशस्वी होने हेतु प्रखर राष्ट्राभिमानके साथ ही साधनाका बल होना है आवश्यक

साधनाका बल और समर्थ रामदास स्वामीके मार्गदर्शन होनेके कारण छत्रपति शिवाजी महाराज हिन्दू धर्मराज्यकी स्थापना करनेमें सफल हुए। अनेक क्रान्तिकारी, प्रखर राष्ट्रवादी होनेपर भी साधनाका बल न होनेके कारण वे यशस्वी नहीं हो पाए और उन्होंने अपने प्राण भी गंवाए ! इस सन्दर्भमें समर्थ रामदास स्वामीने दासबोधमें कहा है -

सामर्थ्य होता है आन्दोलनमें

जो जो करते हैं उनमें;

परन्तु उनमें परमेश्वरका

अधिष्ठान आवश्यक है ॥ - दासबोध

अर्थ : आन्दोलन करना अपने हाथमें होता है; परन्तु कार्यका योग्य नियोजन एवं कार्यके यशस्वी होने हेतु परमेश्वरका अधिष्ठान और साधना आवश्यक है !

॥ ॥ ॥ ॥ ॥

आध्यत्मिक अभ्यास क्या है ?

जब अभिलाषा एवं प्राणिमात्रकी सहज प्रवृत्तियां, रुचि एवं अरुचि तथा स्वभाव सम्बन्धी विशिष्टताएं आदि तीव्र संस्कार अवचेतन मस्तिष्कसे धुल जाते हैं, केवल तभी अज्ञानता नष्ट होकर चिरस्थायी आनन्दका अनुभव किया जा सकता है। तीव्र संस्कार एवं अज्ञानता नष्ट करनेकी यह विधि आध्यात्मिक अभ्यास कहलाती है।

- परात्पर गुरु डॉ. जयंत आठवले,

साभार : मराठी दैनिक सनातन प्रभात

(<http://sanatanprabhat.org>)

धर्मधारा (सुवचन)



तनुजा ठाकुर

वैदिक उपासना पीठकी संस्थापिका

राज्यकर्ताओंद्वारा
राष्ट्रके शत्रुओंके दमन
हेतु मात्र सतही स्तरपर
उपायका किया जाना
निधर्मी लोकतन्त्रमें

राष्ट्र-हित और समाज-
हित हेतु सर्व प्रयास,

यहांतक कि शत्रुओंके दमन हेतु उपाय योजना जैसे प्रयास भी सतही होते हैं। जैसे पाकिस्तान सतत आतंकवादी निर्माण कर उन्हें सीमा पारसे अवैध रूपसे घुसपैठ करवाता रहता है और हमारे सैनिक उन्हें मारते रहते हैं, इसी क्रममें अनेक निर्दोष नागरिक एवं सैनिक भी मारे जाते हैं और यह छद्म युद्ध अनेक वर्षोंसे चल रहा है। आतंकके पर्याय बने इस देशको ही यदि अच्छेसे पाठ पढ़ाया जाए तो क्या इस समस्याका स्थाई समाधान नहीं हो जाएगा?

इसलिए हिन्दू राष्ट्रमें राज्यकर्ताओंको भी प्रशान्त वर्ग समान राजधर्मकी परीक्षामें उत्तीर्ण होना होगा तो ही वे राज्य करनेके अधिकारी होंगे ! नागरिकों और सैनिकोंके जीवनके साथ खिलवाड़ करनेका अधिकार राज्यकर्ताओंको नहीं है, यह ध्यान रहे ! जिनके कालमें ऐसा होता है वे राज्यकर्ता महापापके अधिकारी होते हैं !

॥॥॥॥॥॥

धर्मान्ध, धर्मशिक्षण मिलनेके कारण उच्च शिक्षित होनेपर भी अपने धर्मको प्राथमिकता देते हुए चुनते हैं जिहादका मार्ग

धर्मान्ध उच्च शिक्षित होकर भी आतंकका मार्ग सहज ही चुनते हैं और अपने तथाकथित धर्मके नामपर हिंसा करते हैं, निर्दोषोंकी हत्या करते हैं और हंसते-हंसते मूर्खों समान अपने प्राण गंवा देते हैं और अन्य धर्मान्ध उन्हें 'शहीद' (हुतात्मा) समझते हैं ! इससे दो

बार्ते समझमें आती हैं: एक तो कि वे चाहे जितने भी उच्च शिक्षित हों, उनके लिए धर्मका सर्वाधिक महत्त्व होता है। उनके धर्मगुरु, उन्हें धर्मकी घुट्टी बाल्यकालसे मंदिरसे और मस्जिदमें पिलाते हैं, वहीं हिन्दुओंको सामान्य धर्मशिक्षा भी देनेमें यहांकी सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक व्यवस्था असफल रही है, अन्यथा हिन्दू बहुल देशमें इतने धर्मान्ध आतंकवादी कैसे जन्म लेते और अधिकांश हिन्दू धर्मशिक्षणविरहित क्यों रहते ? हिन्दू धर्मान्तरित क्यों होते ? वह अपनेको गर्वसे धर्मनिरपेक्ष क्यों कहते ? वह हिन्दू धर्मद्रोही क्यों बनते ?

॥॥॥॥॥॥

सामान्य समस्याओंसे छुटकारा पाने हेतु अवसादग्रस्त बुद्धिजीवी कर रहे हैं आत्महत्या

कभी कोई पुलिस अधिकारी तो कभी प्राध्यापक तो कभी कोई सामाजिक कार्यकर्ता मात्र पारिवारिक कलहके कारण आत्महत्या कर लेते हैं, इससे ही आजकी शिक्षण पद्धति कितनी दोषपूर्ण है ?, यह समझमें आता है ! ये सभी समाजमें प्रतिष्ठित व्यक्ति होते हैं और कुछके तो अनेक अनुयायी भी होते हैं ! जो व्यक्ति सामान्य समस्याओंसे जूझनेके स्थानपर अपना बहुमूल्य जीवन क्रोध या अवसादके वेगमें नष्ट कर लेता है, वह बुद्धिजीवी कहलानेका अधिकारी होता है क्या ? जो अपनी समस्याओंका समाधान नहीं कर सकता है वह दूसरोंकी समस्याओंको कैसे सुलझा सकता है ?, उन्हें दिशा कैसे दे सकता है ?, ऐसे व्यक्ति समाजके मार्गदर्शक कैसे हो सकते हैं ?

आत्महत्या करना पाप है, यह ईश्वरीय नियोजनमें हस्तक्षेप है, यह यदि पाठ्यक्रमोंमें सिखाया जाता तो आज बुद्धिजीवी अपनी कुण्ठासे ग्रस्त होकर आत्महत्या नहीं करते ! मात्र धर्म और साधना ही विपरीत परिस्थितियोंमें व्यक्तिको मानसिक सन्तुलन बनाए रखनेकी शक्ति देता है; इसलिए हिन्दू राष्ट्रमें

बाल्यकालके ही पाठ्यक्रमोंसे धर्म, अध्यात्म और साधनाका महत्त्व सिखाया जाएगा।

卐卐卐卐卐

अधिक सन्ततिको जन्म देनेकी अपेक्षा, हिन्दू धर्मद्रोही समाजकंटकोंसे उपाय हेतु हिन्दू अपनी सन्तानोंको धर्माभिमानी बनाएं

आजकल अनेक हिन्दू संगठन एवं धर्मगुरु, हिन्दुओंको अधिक सन्ततिको जन्म देनेका सुझाव दे रहे हैं जिससे अहिन्दुओंद्वारा हो रहे आघात एवं जनसंख्या वृद्धिपर रोक लगाई जा सके; किन्तु यदि आज १०० कोटि हिन्दुओंके रहते हुए प्रतिदिन हिन्दुओंके आस्थाकेन्द्रोंपर एवं हिन्दुओंपर इतने आघात हो रहे हैं तो क्या २०० कोटि हिन्दू होनेपर यह स्थिति परिवर्तित हो जाएगी ? ध्यान रहे, निद्रिस्त हिन्दू चाहे सौ कोटि हों या दो सौ कोटि, उनका होना या न होना एक समान है। इसी देशमें कुछ शतक पूर्व ही मुट्ठी भर मराठों, मेवाड़ियों, सिखों और भीलोंने मुगल आक्रान्ताओंको गाजर-मूली समान काटकर इतिहास रचे हैं; अतः हिन्दुओ, जब यह देश पहलेसे ही जनसंख्या विस्फोटकी समस्यासे निर्मित अनेक समस्याओंसे जूझ रहा है तो ऐसेमें जनसंख्यामें और वृद्धि करना कहांकी बुद्धिमानी है ? इसके विपरीत आपकी जितनी भी सन्तानें हों, उन्हें धर्मशिक्षण देकर छत्रपति शिवाजी महाराज, महाराणा प्रताप, गुरु गोविन्दसिंह, महारानी लक्ष्मीबाई, रानी दुर्गावती इत्यादि समान तेजस्वी बनाएं ! क्षात्रतेज एवं धर्मतेजसे युक्त एक हिन्दू योद्धा अनेक धर्मकंटकों, समाजद्रोहियों एवं राष्ट्रद्रोहियोंपर भारी पड़ेगा और ब्राह्मतेजसे युक्त होनेके कारण ईश्वर उनका रक्षण भी करेंगे।

卐卐卐卐卐

चंचला प्रकृतिवाले मनको स्थिर करनेका एक मात्र माध्यम है साधना

**चेतश्चञ्चलावृत्त्या चिन्तानिचयचञ्चुरम्।
धृतिं बन्धाति नैकत्र पञ्जरे केसरी यथा॥**

- श्रीवशिष्ठदर्शन (१.१६.१०)

अर्थात् मनका मुख्य कार्य चिन्ता करना है, अपनी अस्थिर वृत्तिके कारण एक स्थानपर उसी प्रकार स्थिर नहीं रहता जैसे बद्ध सिंह अपने पिंजरेमें अस्थिर रहता है। वस्तुतः मनकी परिभाषा ही है कि वह संस्कारोंका एक पुंज मात्र है; अतः उसका अपनी प्रकृति या संस्कार अनुरूप वर्तन करना स्वाभाविक है। मनको हम विषयके किसी भी भोगसे लिप्त कर अधिक समयतक स्थिर नहीं कर सकते हैं, मात्र साधना करनेपर जब बुद्धि सात्विक होकर विवेक-बुद्धिमें परिणित हो जाती है और उसके बलपर हम मनको नियन्त्रित करनेका प्रयास कर सकते हैं और सतत इन्द्रिय निग्रह करते रहनेपर मन विषयोंके प्रति अनासक्त हो जाता है तथा साधनामें अखण्डता बनाए रखनेपर उसका लय हो जाता है एवं मन तभी सदैवके लिए स्थिर और शान्त हो जाता है।

卐卐卐卐卐

मांके मनको जीतनेके लिए उनकी सन्तानोंसे निष्काम प्रेम करना पड़ता है, वैसे ही परमेश्वरका मन जीतनेके लिए उनकेद्वारा रचित इस सृष्टिके प्रत्येक जीवसे प्रेम करना परम आवश्यक है।

卐卐卐卐卐

पापियोंको दण्ड देना उनका हित साधने समान ही है

एक जिज्ञासुने धर्मधाराके उपर्युक्त सुवचनका सन्दर्भ देते हुआ पूछा है कि आपने लिखा है कि परमेश्वरका मन जीतने हेतु सभीसे प्रेम चाहिए तो ऐसेमें जो समाजकंटक हिन्दू धर्म विरोधी हैं या जो राष्ट्र विरोधी तत्त्व हैं और जो सतत हिन्दू धर्मपर एवं राष्ट्रपर आघात करते रहते हैं क्या उनके प्रति भी प्रेम रख, उनके अक्षम्य अपराधोंको क्षमा कर उनसे प्रेम करना चाहिए ?

इसका उत्तर बड़ा ही सरल है। यदि हमसे कोई अक्षम्य चूक होती है तो हमारी माता क्या हमें दण्डित नहीं करती हैं ? क्या उनकेद्वारा दण्डित किया जाना, क्या उनकी हमारे प्रति घृणाका सूचक है ? तो सभीका उत्तर होगा नहीं। हमारी माता हमारी अक्षम्य चूकोंपर हमें

प्रेमवश दण्डित करती हैं, जिससे हम पुनः वैसी चूक न करें एवं अधर्मकी ओर प्रवृत्त न हों। उसी प्रकार समाजकंटकों, राष्ट्रद्रोहियों, हिन्दू धर्मद्रोहियों, दुर्जनों एवं भ्रष्टाचारियोंको भी हमें इसी भावसे पाठ पढ़ाना चाहिए, जिससे उन्हें अपने अपराधोंका बोध हो एवं उन्हें दिए गए दण्डके परिणामस्वरूप, वे इस जन्ममें या अगले जन्ममें सन्मार्गका अनुसरण कर सकें ! धर्मसिद्धान्त अनुसार पापकर्म करनेवालेको दण्ड देना, एक प्रकारसे उसके प्रति अपने प्रेमकी अभिव्यक्ति ही है, जिससे उसका हित साध्य होता है। जब कोई प्रेमसे समझानेपर या बौद्धिक रूपसे उसे सावधान करनेपर भी कुमार्गसे नहीं हटे तो उसे दण्डित करना धर्म एवं न्याय सिद्धान्त अनुसार उचित है; क्योंकि वे दण्डके ही पात्र होते हैं एवं दण्ड ही उसे अपनी चूकका भान कराता है और अधर्मसे विमुख करता है।

॥॥॥॥॥

भोगमें लिप्त उद्देश्यहीन निधर्मी जीवन प्रणालीका विदेशमें है बोलबाला

हम अधिकांश हिन्दू, बिना धर्मके अपने जीवनकी कल्पना नहीं कर सकते हैं; किन्तु जब धर्मयात्रा अन्तर्गत विदेश गई तो मुझे ज्ञात हुआ वहां एक ऐसी मानव प्रजाति भी है जो बिना धर्मके सम्पूर्ण जीवन व्यतीत कर देती है। मैंने विदेशमें देखा कि वहांके अनेक निधर्मी लोगोंको अपने जीवनका उद्देश्य ही पता नहीं है, क्षणिक एवं नश्वर सुख भोगना ही उनके जीवनका उद्देश्य होता है। उनके मुख तो मेकअपसे पुते होते हैं; परन्तु मुख तेजस विहीन, जीवन प्रेमविहीन होता है। एक ही जीवनमें अनेक सहचरोंको अपने शारीरिक सुख हेतु परिवर्तित करते रहना, भौतिक सुखप्राप्तिमें उलझे रहना, कुटुम्ब व्यवस्थासे दूर रहकर नीरस सा जीवन व्यतीत करना, यह सब उनके जीवनका अविभाज्य भाग है। दिखावटी मुस्कान, दिखावटी प्रेम, निधर्मी उद्देश्यहीन जीवन, व्यसनाधीनता, यह सब देखकर समझमें आया कि धर्मविहीन ऐश्वर्ययुक्त जीवन जो भौतिकवादसे लिप्त है

वही आसुरी जीवन प्रणाली है एवं मानवमात्रके कल्याण हेतु सम्पूर्ण विश्वमें हिन्दू धर्मराज्यकी स्थापना करना अत्यन्त आवश्यक है। आश्चर्य और क्षोभका तथ्य यह है कि यह पाश्चात्य शिवत्वविहीन भौतिकतावाद भारतीयोंको भी अति प्रिय लगने लगा है एवं यहां भी विवेकहीन तमोगुणी तथाकथित बुद्धिजीवी एवं नास्तिक वर्गमें वृद्धि होने लगी है, जो इस दैवी वैदिक संस्कृतिके लिए अत्यन्त घातक है।

॥॥॥॥॥

अपने इन्द्रियोंके सम्बन्धमें साधकने एक योद्धा समान सतर्क रहना चाहिए

**इन्द्रियाणां तु सर्वेषां यद्येकं क्षरतीन्द्रियं ।
तेनास्य क्षरति प्रज्ञा दृते पात्रादिवोदकं ॥**

- मनुस्मृति

अर्थात् पञ्चज्ञानेन्द्रियों तथा पञ्चकर्मेन्द्रियोंमेंसे किसी भी एक इन्द्रियके विषयमें रुचि होनेसे वह उसमें प्रवृत्त होने लगती है, इससे तत्त्वज्ञानी व्यक्तिका सारा विवेक एवं साधना धीरे-धीरे उसी प्रकार नष्ट हो जाता है जैसे एक छोटासा छिद्र होनेपर पात्रका सारा जल शनैः शनैः बह जाता है और पात्र रिक्त हो जाता है। अपने दोष एवं अहंके प्रतिबिम्बित होनेवाले लक्षणपर एक साधकने एक सतर्क योद्धा समान ध्यान देना चाहिए अन्यथा विषयोंके प्रति किंचित मात्र भी आसक्ति उसकी साधनाके सारे तपोबलको नष्ट कर सकती है। इतिहास साक्षी है कि अनेक उन्नत अर्थात् आध्यात्मिक दृष्टिसे अच्छे साधकोंका अधःपतन उनके एक दोषके कारण हुआ है। इसलिए साधकने सदैव अपना आत्मनिरीक्षण करते रहना चाहिए और अपने मनके संस्कारोंके विरुद्ध अपने संग्राममें मोक्ष पानेतक निरन्तरता बनाए रखना चाहिए। ध्यान रहे, अधिकांश बड़ी दुर्घटनाएं दक्ष चालकद्वारा तब होती हैं, जब उनका आत्मविश्वास, अति आत्मविश्वासमें परिवर्तित हो जाता है।

॥॥॥॥॥

सामान्य युवाकी शिक्षाके स्तरमें घोर पतन हुआ है

आजकी शिक्षाका स्तर इतना गिर गया है कि आजके स्नातक किए हुए विद्यार्थी भी पांच पंक्तियां बिना चूकके अपनी मातृभाषामें नहीं लिख पाते हैं। प्रथम मुझे लगा कि झारखण्ड और बिहारमें ऐसा है; किन्तु उसके पश्चात उत्तर प्रदेशके युवावर्गके साथ भी मैंने ऐसा ही पाया, तत्पश्चात देहली और अब मध्य प्रदेशकी भी स्थिति ऐसी ही है। मुझे यह समझमें नहीं आता है कि कोई विद्यार्थी यदि पांच पंक्तियां शुद्ध वर्तनी एवं व्याकरणके साथ नहीं लिख सकता है तो उसने स्नातकतककी पढ़ाई की कैसे ?

यदि सचमें इस देशके सामान्य युवा वर्गकी स्थिति ऐसी है तो यह घोर चिन्ताका विषय है ! अभी कुछ दिवस पूर्व एक युवती आश्रममें आई थी वह स्नातक कर चुकी थी; किन्तु उसे 'कृपया' यह शब्द लिखना नहीं आता था, वह एक वाक्य हिन्दीमें शुद्ध नहीं लिख पा रही थी और अब वह संगणकमें डिप्लोमा कर रही है ! यह तो मैंने एक उदाहरण बताया है, मेरे पास ऐसे अनेक उदाहरण हैं, जिसे जाननेपर मैं आरम्भमें हतप्रभ हो जाया करती थी किन्तु अब मुझे युवाओंकी इस स्थितिको देखकर बहुत ग्लानि होती है। मैं सोचमें पड़ गई हूं कि इनमें सुधार कहांसे आरम्भ किया जाए और कैसे किया जाए ? फेसबुक, व्हाट्सएप्प इत्यादि सामाजिक जालस्थलपर (सोशल नेटवर्किंग साइट्स) भी भाषाकी विकृति देखकर मन दुःखी हो जाता है ! क्या आपने भी ऐसा ही कुछ अनुभव किया है ?

❖❖❖❖❖

हमारे श्रीगुरुका द्रष्टापन

हमारे श्रीगुरुने बहुत समय पूर्व ही हिन्दू राष्ट्रकी स्थापनाका समयपत्रक कुछ इस प्रकार लिखा था -

“हिन्दू राष्ट्रकी स्थापनाका समयपत्रक

हिन्दू राष्ट्रकी स्थापनाका स्वरूप

ख्रिस्ताब्द २०१५ से आरम्भ

ख्रिस्ताब्द २०१६ से २०१८ हिन्दू विरोधियोंके

विजयकी चढती कमान

ख्रिस्ताब्द २०१९ से २०२१ हिन्दू विरोधी तथा धर्मप्रेमियोंमें निर्णायक युद्ध (आरपारकी लड़ाई)

ख्रिस्ताब्द २०२२ से २०२३ धर्मप्रेमियोंके विजयकी चढती कमान

ख्रिस्ताब्द २०२३ हिन्दू राष्ट्रकी स्थापना

ईश्वरकी भक्ति करनेवाले तथा असुर, इनके युद्धके समयपत्रकमें भक्तोंकी भक्तिके प्रमाणमें परिवर्तन हो सकता है।” - परात्पर गुरु डॉ. जयंत आठवले

उन्होंने जो अनेक वर्ष पूर्व लिखा था वह आज सौ प्रतिशत सत्य सिद्ध हो रहा है, आए दिन न्यायलयद्वारा हिन्दू विरोधी निर्णय देना एवं हिन्दू विरोधी तत्त्वोंको एक साथ आते देखकर, श्रीगुरुकी द्रष्टापन एवं सर्वज्ञताका पुनः भान हुआ एवं मन कृतज्ञताके भावसे भर उठा; किन्तु इस बातका अवश्य ही आनन्द है कि इस घोर तिमिरके पश्चात हिन्दू राष्ट्रकी स्थापना होगी और सर्वत्र वैदिक सनातन धर्मका धर्मध्वज लहराएगा ! ऐसे द्रष्टाओंके कारण ही यह भारत भूमि, देव-भूमि और पुण्य-भूमि कहलाती है, ऐसे सभी द्रष्टाओंके श्रीचरणोंमें नमन !

❖❖❖❖❖

प्रत्याहारका पालन कर अपनी इन्द्रियोंको रखें अपने वशमें

द्रष्टा, दृश्य देखकर बद्ध हो जाता है और उसे उस दृश्यसे सम्बन्धित विचार आते हैं। जैसे ग्रीष्म ऋतुमें आमको देखकर आम खानेका विचार सहज ही आता है, वैसे ही अश्लील चित्र, गीत, जालस्थान, चित्रपट इत्यादि देखकर मनमें कामवासनाके विचार प्रबल हो जाते हैं। कलियुगका वासना रूपी भस्मासुर अपने पूर्ण वीभत्स स्वरूपमें सर्वत्र विचरण कर, सभीको अधर्मके पथपर ले जाने हेतु प्रवृत्त कर रहा है, ऐसेमें विवेकका प्रयोग करें ! न बुरा देखें, न बुरा सुनें और न ही बुरे लोगोंकी संगतमें रहें, यह एक मात्र उपाय है, अध्यात्ममें इसे ही प्रत्याहार कहते हैं।

शंका समाधान

१. मेरी कुलदेवी समुदा मां हैं परन्तु मुझे मेलदी मांके जप करनेका मन करता है; कृपया मेरा योग्य मार्गदर्शन करें - अल्पेश, सूरत

उत्तर : शीघ्र आध्यात्मिक उन्नति हेतु अपने गुरुमन्त्रका या वह न मिला हो तो अपने कुलदेवताका (जिसमें कुलदेव एवं कुलदेवी दोनों ही होते हैं) और यदि कुलदेवताका नाम नहीं ज्ञात हो तो सप्त उच्च देवता (शिव, गणेश, दत्तात्रेय, हनुमान, कृष्ण, राम या दुर्गाका) जप करना उचित होता है। ध्यान रखें, अध्यात्ममें मुझे क्या अच्छा लगता है?, इसका कोई महत्त्व नहीं होता; अपितु मेरे लिए क्या योग्य है?, यह अधिक महत्त्व रखता है; मनानुसार साधना करनेसे कोई लाभ नहीं होता, मात्र मानसिक सन्तुष्टि प्राप्त होती है। इसे एक उदाहरणसे समझ लेते हैं, जैसे किसीको गलेका कर्करोग है और चिकित्सक उसे शल्यक्रिया करने हेतु कहते हैं; किन्तु वह कहता है कि शल्यक्रिया मुझे अच्छी नहीं लगती, मेरे रोगको आप मुझे कोई मीठी चूसनेवाली वटी (गोली) देकर ठीक कर दें, तो क्या आप ठीक होंगे? इसी प्रकार हम मनुष्य, जन्म-मृत्युके बन्धनरूपी रोगसे पीड़ित हैं; अतः या तो जो इस बन्धनसे मुक्त हो चुके हैं, उनके मार्गदर्शनमें साधना करें या अध्यात्मशास्त्र अनुसार साधना करें, इस भवसागरसे मुक्त होनेका तीसरा कोई पर्याय नहीं है। आपके सूक्ष्म पिण्डमें जिस तत्त्वकी न्यूनता (कमी) होती है, जीवनमुक्त सन्त (गुरु) आपको उस तत्त्वके अनुसार जप बताते हैं; किन्तु इस हेतु आपको अपनी पात्रता सिद्ध करनी पड़ती है। यदि जीवनमें गुरु न मिले तो उसे ढूँढने न जाएं! गुरु, ईश्वरीय तत्त्वके प्रतिनिधि होते हैं, वे आपके जीवनमें जब आपको आवश्यकता होती है तब स्वयं आ जाते हैं; और जबतक उनका आपके जीवनमें स्थूल रूपसे पदार्पण न हो तबतक आप अपने कुलदेवताका ही नाम जपें! गुरु ढूँढना चाहिए, ऐसा कुछ लोग कहते हैं, हां, कुछ

धर्मशास्त्रोंमें लिखा है कि गुरुप्राप्ति हेतु प्रयास करना चाहिए; किन्तु उन्हें यहां-वहां जाकर ढूँढना चाहिए इसका यह अर्थ नहीं है; अपितु अपनी साधना और मुमुक्षुत्वको बढ़ाकर, योग्य गुरुकी प्राप्ति हेतु प्रयास करना चाहिए, इसका यह अर्थ है।

वर्तमान कालमें धर्मग्लानिकी परिसीमा हो चुकी है, ऐसेमें अधिकांश लोगोंमें सन्तको अभिज्ञान (पहचान) करनेकी क्षमता नहीं है और वर्तमान कालमें तो ९९% सन्त तो गुरु पदके अधिकारी हैं ही नहीं, वे अध्यात्ममें उन्नत हो सकते हैं; किन्तु उनका आध्यात्मिक स्तर ७०% नहीं होता, ऐसेमें ढोंगी गुरुओंके चक्रव्यूहमें फंसनेकी आशंका हो सकती है; इसलिए गुरु नहीं ढूँढना चाहिए!

जिनके मन, बुद्धि और अहंका लय हो गया हो या जिनका ईश्वरसे अनुसन्धान स्थापित हो चुका हो, उन्हें सन्त या गुरु कहते हैं, अब यह तो सूक्ष्म बात है, इसे एक सामान्य साधक तबतक नहीं समझ सकता है जबतक उसकी स्वयंकी साधना प्रगल्भ न हो; इसलिए गुरु नहीं ढूँढना चाहिए!

अभी कुछ दिवस पूर्व एक व्यक्तिका हमारे आश्रमके व्हाट्सएप्पपर सन्देश आया था कि मुझे लगता है कि मेरा आध्यात्मिक स्तर ५५% हो गया है; अतः आप मुझे मेरे पिण्डमें किस तत्त्वकी कमी है वह बता दें, मैं उसी अनुरूप जप करूंगा! यह तो वही बात हुई कि छह वर्षका बालक अपने पिताजीसे जाकर कहता है कि मैं विवाह योग्य हो गया हूं; अतः आप मेरा विवाह करवा दें! आपका स्तर ५५% हो जाएगा तो गुरु आपके जीवनमें स्वयं आकर गुरुमन्त्र देंगे, मांगनेसे गुरुमन्त्र थोड़े ही मिलता है!

जब भी कोई व्यक्ति, जिज्ञासु, साधक या मुमुक्षु पूरी उत्कण्ठासे साधना करता है तो ईश्वरीय तत्त्व उसका मार्गदर्शन उसकी तडप, श्रद्धा, आध्यात्मिक स्तर एवं प्रारब्ध अनुरूप करने लगता है; इसलिए एकनिष्ठ होकर,

साधना करें! 'बिन मांगे मोती मिले और मांगे मिले न भीख', अर्थात् मांगनेसे कुछ नहीं मिलता और पात्रता निर्माण हो जाए तो सब कुछ स्वयं मिलता है, इस तत्त्वाका ध्यान रखकर अपनी आध्यात्मिक पात्रता बढ़ाएं!

卐卐卐卐卐

२. मैं जागृत भव गुट २१ का साधक हूँ, जिसमें सूक्ष्म इन्द्रियोंको जागृत करनेकी प्रक्रिया सिखाई जा रही है। दो दिन पूर्व मैंने आपके दो सत्संग सुने। एक सत्संगमें आपने बताया है कि आप भी बाल्यावस्थामें बुद्धिवादी थीं और हमारे परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीका मार्गदर्शन मिलनेके पश्चात् आपने आध्यात्मिक प्रगति की; परन्तु ये करते हुए आपने अपनी बुद्धिको आपकी आध्यात्मिक प्रगतिके मार्गमें अवरोध बनने नहीं दिया। क्या आप मुझे मार्गदर्शन करेंगी कि ये आपने कैसे किया? क्योंकि मेरी ये समस्या है कि मैं कुछ भी सुनता हूँ तो तुरन्त तर्क-बुद्धिसे विचार करने लगता हूँ! उदाहरण हेतु, आपके एक सत्संगमें आपने गुरु गोरक्षनाथजीके जन्म और कार्यके विषयमें बताया है। जैसे ही मैंने उनके जन्मकी कथा सुनी मैं विचार करने लगा कि यह कैसे सम्भव है, इत्यादि? एक ओर मन कह रहा था कि माने कहा है तो सत्य होगा। दूसरी ओर मन इसे मान नहीं पा रहा है! क्या आपने भी कभी ऐसी दुविधाका सामना किया है? इससे मुक्ति कैसे पाएं? आध्यात्मिक पथपर बुद्धिकी क्या भूमिका होती है?, मुझे क्षमा करें मैं बहुत प्रश्न पूछ रहा हूँ!

- वैभव देशपाण्डे, पुणे

उत्तर : सर्वप्रथम कृपया क्षमा न मांगे, हमारे श्रीगुरुके श्रीगुरु, परम पूज्य भक्तराज महाराजने कहा है, "जिज्ञासु ही ज्ञानका खरा अधिकारी होता है;" अतः यदि आप साधना करना चाहते हैं या साधना कर रहे हों या मुमुक्षु हों या जिज्ञासु तो प्रश्नोंका उभरना स्वाभाविक है। यदि प्रश्न पूछनेका हेतु विशुद्ध हो और वह साधना हेतु पूरक हो तो उत्तर देना हमें भी अच्छा लगता है और आपके सर्व प्रश्न समष्टिके लिए भी बहुत उपयोगी होते हैं; इसलिए भी इसे प्राथमिकता देती हूँ। आप शिक्षक हैं और मैकाले शिक्षित

बुद्धिजीवी हैं, ऐसेमें धर्म और संस्कृतिसे सम्बन्धित सूक्ष्म तत्त्वज्ञानसे सम्बन्धित प्रश्न उठने स्वाभाविक हैं; क्योंकि इस शिक्षण प्रणालीमें हिन्दू धर्म और संस्कृतिसे सम्पूर्ण हिन्दू समाजको विमुख रखा गया है, ऐसेमें गूढ़ अध्यात्मसे जैसे-जैसे हमारा परिचय होता है, प्रश्न निर्माण होने लगते हैं। गीताका ज्ञान, अर्जुनद्वारा श्रीकृष्णके समक्ष व्यक्त की गई शंकाओंके समाधानका ही परिणाम है; अतः प्रश्न पूछना अच्छी बात है, यदि आप साधनारत हैं तो आपके प्रश्नका उत्तर हम प्राथमिकतासे देते हैं; क्योंकि शंका समाधान होनेपर आपकी साधनाको गति मिलती है।

जी हां, मैं बुद्धिवादी थी और जब अपने श्रीगुरुसे जुड़ी तो मैंने एक ग्रन्थ पढ़ा, अध्यात्मका प्रस्तावनात्मक विवेचन। मैंने उस ग्रन्थका सूक्ष्मतासे अभ्यास किया, उसमें उन्होंने शंका समाधान, बुद्धिका उपयोग एवं बुद्धिका कितना उपयोग करना चाहिए?, कैसे प्रश्न पूछने चाहिए?, कैसे प्रश्नोंके उत्तर दिए जाने चाहिए?, सब विषयोंपर मार्गदर्शन किया है। बाल्यकालसे ही मेरी प्रवृत्ति रही है, मैं जो भी कुछ पढ़ती हूँ उसमें यदि मुझे लगा कि इसे जीवनमें उतारनेसे लाभ होगा तो उसे तत्परतासे अपने जीवनमें आत्मसात करनेका प्रयास करती हूँ। वैसे ही जब मैंने यह श्रीगुरुके मुखारविन्दसे सत्संगमें सुना कि अध्यात्ममें कुछ बातें हमारी साधनामें प्रगति होनेपर स्वतः ही समझमें आती हैं तो मैंने ऐसे विषयोंमें बुद्धिको उलझानेका प्रयास नहीं किया, जितना मुझे समझमें आता था, मैंने उतना ही जीवनमें उतारनेका प्रयास करती गई और हमारे श्रीगुरुने यह भी कहा है कि अध्यात्मको हम मात्र २% बुद्धिसे समझ सकते हैं शेष ९८% अध्यात्म बुद्धि अगम्य है, उसे मात्र साधनासे ही समझा जा सकता है। मुझे सम्पूर्ण अध्यात्मशास्त्र सीखना था और बुद्धिसे इसे पूर्ण रूपेण सीखना सम्भव नहीं था। श्रीगुरुके सत्संगोंको सुननेसे मुझे ज्ञात हुआ कि इसे सीखनेका दो माध्यम है एक गुरुके मनको जीत लेना अर्थात् वे जो चाहते हैं या बताते हैं, वही साधना करना और दूसरा स्वयं साधना करते हुए

इसे सीखना। मैंने पहलेवाली पद्धतिको सीखना अधिक उचित समझा ! इसलिए गुरुने जब जो आज्ञा दी उसे ही ब्रह्मवाक्य मानकर उसका अनुसरण करने लगी ! साथ ही मेरी निरीक्षण क्षमता अच्छी है; इसलिए अन्य बुद्धिजीवी सहसाधक कैसे साधना कर रहे हैं ?, साधनामें कैसी चूकें कर रहे हैं ?, कौन अपनी बुद्धिका उपयोग कैसे करते हुए गुरुकृपा पानेका प्रयास कर रहे हैं ?, इन सबका भी सूक्ष्मतासे बिना किसीको बताए अभ्यास करती रही ! यह मेरा सौभाग्य था कि हमारे ज्येष्ठ साधक और सहसाधक सभी उच्च शिक्षित एवं प्रखर बुद्धिजीवी थे; इसलिए मुझे उनसे शब्दोंसे सीखने हेतु भी मिला ! साथ ही मैंने श्रीगुरुके सभी ग्रन्थोंका गहन अभ्यास किया ! इस कारण या गुरुके कारण, मेरे मनमें श्रीगुरुकी बताई बातोंके कारण, मेरे मनमें अध्यात्मके तत्त्वज्ञानके विषयमें विकल्प नहीं आया और न ही कोई अविश्वास उत्पन्न हुआ। श्रीगुरुसे जुड़नेसे पूर्व मेरे मनमें आपके समान अनके द्वंद्व अवश्य उत्पन्न होते थे; किन्तु यह उनकी विशेष कृपा रही कि उनके प्रथम दर्शनके पश्चात ही मेरे मनमें ऐसे द्वंद्व कभी नहीं उठे; अपितु मैं पूर्ण उत्कण्ठासे अध्यात्मको सीखने हेतु संकल्पबद्ध हुई, इसका एक कारण उनके ग्रन्थों और तत्त्वज्ञानका स्थूल और सूक्ष्मसे अभ्यास और विश्लेषण करना था !

एक बार उपासनाकी एक साधिकाने मुझसे कहा कि मैं जैसे ही सनातन संस्थाका कोई ग्रन्थ उठाती हूं तो आपके शब्द और ग्रन्थके विचार मिलते-जुलते नहीं; अपितु शब्दशः वही होते हैं, मैंने कहा, “बहुत ही सटीक विश्लेषण किया है आपने, मैंने सनातनके ग्रन्थोंको घोलकर पी लिया है, आप ऐसा कह सकती हैं; इसलिए मेरे लेखन और सत्संगमें वे सहज ही प्रतिबिम्बित होते हैं ! साथ ही मैंने अपने श्रीगुरुसे जुड़नेके पश्चात ही एक प्रार्थना करती रही हूं, जो इस प्रकार है, “हे परमेश्वर, मेरी अल्प और तामसिक बुद्धि, अध्यात्म सीखनेमें कभी बाधक न बने एवं मैं अपनी बुद्धिका उपयोग, गुरु आज्ञापालनमें सदैव निर्विकल्प कर सकूं और इस

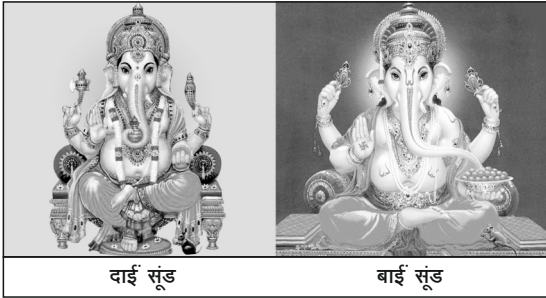
अध्यात्मशास्त्रको सीखने हेतु जो भी आवश्यक है उसे कर सकूं, ऐसी आप कृपा करें।”

शास्त्र कहता है कि यदि आपको अनुभूति हो जाए कि मेरे गुरु परब्रह्मस्वरूप हैं तो उनकी वाणीपर अटूट श्रद्धा रखने मात्रसे आपको अध्यात्मके सर्व सूक्ष्म पक्ष ज्ञात हो जाते हैं। किसी भी गुरुने कभी भी अपने किसी भी शिष्यको अध्यात्मके सर्व गूढ़ पक्ष शब्दोंमें नहीं सिखाए हैं: क्योंकि वे शब्दोंमें सिखाए ही नहीं जा सकते हैं ! अध्यात्मशास्त्र अनुभूतिजन्य शास्त्र है इसे पूर्ण रूपसे बुद्धिसे सीखने या समझानेका प्रयास करना निरर्थक है ! किन्तु गुरुकृपा पाने हेतु गुरुद्वारा ली जानेवाली सर्व परीक्षाओंको सहर्ष स्वीकार करना पड़ता है; क्योंकि इनमें उत्तीर्ण होना भी हमारे हाथमें नहीं होता है, वे ही परीक्षा लेते हैं और वे ही उत्तीर्ण करते हैं। हमें मात्र शरणागत रहना होता है, शेष वे करते हैं !

रही बात गुरु गोरक्षनाथके जन्मकी तो उच्च कोटिके सन्तोंमें संकल्पका सामर्थ्य होता है, वे अपने संकल्पसे कुछ भी कर सकते हैं तो गोरक्षनाथका जन्म भी उनके गुरुके संकल्पसे हुआ था ! सन्त, एक उन्नत जीवको ही क्यों, वे तो एक नूतन लोकका, एक नूतन सृष्टिका निर्माण कर सकते हैं और ऐसा हमारे कुछ मनीषियोंने किया है या करनेका प्रयास किया है, हमारे धर्मग्रन्थोंमें इनके अनेक साक्ष्य हैं ! यह सम्पूर्ण सृष्टि भी ईश्वरके मात्र एक संकल्पसे उत्पन्न हुई है। साधना करनेसे ही संकल्पका सामर्थ्य समझमें आता है और सन्तोंके पास ऐसा कुछ भी नहीं जो वे नहीं कर सकते हैं, यह सदैव ध्यान रखें ! इसीलिए सन्तको परमेश्वरका स्वरूप माना गया है !

आशा करती हूं, कुछ सीमातक आपकी शंकाओंका समाधान हो गया होगा और शेष भाग साधना करते रहनेसे निश्चित ही समझमें आ जाएगा। इतना ही नहीं, योग्य प्रकारसे साधना करने पर एक दिवस आपमें भी यह सामर्थ्य निर्माण हो सकता है !

सूक्ष्म जगत



अपने घरमें दाएं नहीं; अपितु बाएं सूंडवाले गणेशको क्यों रखें ?

इस तथ्यको सुस्पष्ट रूपसे बताने हेतु मैं धर्मप्रसारके मध्य हुए कुछ अनुभव एवं अनुभूतियोंको सर्वप्रथम आपसे साझा करती हूं, उसके पश्चात उसका शास्त्र बताउंगी जिससे आपको यह विषय अच्छेसे समझमें आ जाए।

१. ख्रिस्ताब्द २००० में झारखण्डके बोकारो जनपदमें धर्मप्रसारकी सेवा करती थी। प्रसारके मध्य एक साधक दम्पति हमसे (सनातन संस्थासे) जुड़कर साधना करने लगे। हमसे जुड़नेके एक माह पश्चात एक दिवस जब मैं उनके घर गई तो संध्याके सात बज रहे थे, उनका युवा पुत्र जो दसवीं कक्षामें था, वह घरपर नहीं था। जब मैंने पूछा कि वह कहां है तो वे दोनों दुःखी होकर कहने लगे “पिछले दो-तीन वर्षोंसे वह घरमें रहना ही नहीं चाहता है, विद्यालयसे आते ही वह घरसे अपने मित्रोंके घर चला जाता है और रात्रि नौ बजनेपर आता है, उसे कितना भी समझाते या डांटते हैं; किन्तु कुछ प्रभाव ही नहीं पड़ता है, वह अपने मित्रोंके घरपर पढ़ता है व कहता है कि घरमें मेरी पढ़ाईमें मन नहीं लगता है एवं मुझे रहनेका मन नहीं करता है। वह पढ़नेमें अच्छा है; इसलिए हम लोग उसे कुछ अधिक बोल भी नहीं पाते हैं।” मैंने उनकी अडचन सुनकर उनके पुत्रके कक्षाका निरीक्षण करनेका सोचा। जब गई तो देखा कि वहां दाहिने सूंडवाले गणेश उसके सिरहानेके ठीक सामने पूजाघरमें विराजमान हैं और पूजाघरसे प्रचण्ड शक्ति निकल रही है। मैं समझ गई कि उनके पुत्रको

पूजा घरकी शक्ति सहन नहीं हो रही है; इसलिए वह अपने कक्षमें रहना नहीं चाहता है। मैंने उन्हें सब शास्त्र बताया और पूजा घरको उन्हें अपने कक्षमें परिवर्तित करने हेतु कहा तथा दाहिने सूंडवाले गणेशको भी परिवर्तित कर बाएं सूंडवाले गणेशको लाने हेतु कहा। उनके दो ही कक्ष थे; इसलिए वे पृथक रूपसे पूजा घर बनानेमें असमर्थ थे ! और वे जो अपने मनानुसार शक्ति उपासना कर रहे थे, उसे रोककर उनके कुलदेवताकी साधना करने हेतु कहा। वे दोनों पति-पत्नी साधक वृत्तिके तो थे ही; अतः उन्होंने त्वरित सब कुछ परिवर्तित किया एवं उन्हें बहुत आश्चर्य हुआ कि उनका पुत्र कुछ ही दिवसोंमें स्वतः ही घरमें रहकर पढ़ाई करने लगा था और अन्य समय भी पूर्वकी भांति अपने घरमें रहता था और मित्रोंके घर कभी-कभी जाता था एवं एक दिवस उसने बताया कि अब उसकी एकाग्रतामें भी वृद्धि हुई है।

२. ख्रिस्ताब्द २००१ में मैं उत्तर प्रदेशके सुल्तानपुरमें धर्मप्रसारकी सेवा कर रही थी। एक दिवस हम एक व्यक्तिके घर प्रवचन हेतु गए थे। प्रवचनके पश्चात उनकी तीन युवा पुत्रियोंका मुझसे वार्तालाप (बातचीत) हुआ और कुछ क्षणोंमें ही आत्मीयता भी हो गई। उनके आग्रह करनेपर हम रात्रि उनके घर रुक गए। अगले दिवस उनकी ज्येष्ठ पुत्रीने कहा, “हमारे घरमें सभीमें आपसमें बहुत प्रेम है; किन्तु पता नहीं क्यों बिना कारण सभीको क्रोध आता है, विशेषकर हमारी माताजी और दादीमें बिना बात किए ही तनाव हो जाता है और घरका वातावरण बहुत बिगड़ जाता है।” उन्होंने पिछले दिवस ही सत्संगमें पूजाघरकी रचनाके विषयमें प्रवचनमें सुना था तो उन्होंने कहा कि आप हमारे घरमें गणेशजीकी सूंड देखकर बताएं कि क्या वह सही है और क्या पूजामें कोई चूकके कारण तो ऐसा नहीं हो रहा है ? जब हमने उनके घरका निरीक्षण किया तो ज्ञात हुआ कि उनके पूजा घरके अतिरिक्त सभी कक्षमें दाहिनी सूंडके गणेशजीके

चित्र या मूर्तियां थीं। सत्संगमें मैं उन्हें दाहिनी सूंडवाले गणेशके विषयमें बता ही चुकी थी; अतः उन्होंने वे चित्र हटा दिए और बाईं सूंडवाले गणेश, मात्र पूजाघरमें रखे। जब मैं एक सप्ताह पश्चात उनसे मिलने गई तब उन्होंने ऐसा बताया कि दाहिने सूंडवाले गणेशजीको हटानेसे उनके घरमें तनाव या कलहके वातवरणमें ५०% सुधार हो गया। शेष कलह व तनाव, उनके दोष एवं अन्य आध्यात्मिक कारणोंसे था; इसलिए उनमें सुधार योग्य प्रयत्न करनेपर ही सम्भव था।

३. ख्रिस्ताब्द २०१२ में धर्म यात्राके मध्य मैं चेन्नईमें थी। एक दिवस एक विद्यालयमें मेरा प्रवचन था। प्रवचनसे उस विद्यालयकी प्रधानाध्यापिका बहुत प्रभावित हुई और अगले दिवस अर्थात् रविवारको अपने घर भोजन हेतु हमें बुलाया। वे धनाढ्य वर्गसे थीं, उनका घर बहुत सुन्दर था; किन्तु उनके घर घुसते ही मेरे सिरमें बहुत भारीपन लगा, इतना कि मैं यह सोचने हेतु बाध्य हो गई कि इतनी शक्ति आ कहांसे रही है? वे जब भोजनकी व्यवस्था करने गईं तो मैं उनके कक्षका निरीक्षण करने लगी। एक सजावटकी कपाटिकामें (शोकेस) बहुत सी छोटी-बड़ी गणेशकी मूर्तियां मुझे दिखाई दीं। मैंने उनके पतिसे कहा, “लगता है आप दोनों गणेश भक्त हैं?” उन्होंने कहा, “नहीं, हमें गणेशकी भिन्न प्रकारकी मूर्तियां संग्रह करनेमें विशेष रुचि है अर्थात् यह हमारा ‘हॉबी’ है, ऐसा समझ सकते हैं! हम देश-विदेशमें जहां भी जाते हैं, गणेशजी प्रतिमा, हमें जहां भी दिखाई दे, उसे ले लेते हैं। उसके पश्चात उन्होंने अपने दो और कक्षोंमें भी गणेशकी अनेक प्रतिमाएं दिखाई। उनके कक्षोंमें तो इतनी शक्ति थी कि जैसे मेरी गर्दन ही अकड़ गई! मैं संकोचमें पड़ गई कि इन्हें कैसे बताऊं कि अनजानेमें इनसे क्या चूक हो रही है! मैं सब देखकर उनके बैठकमें गई। जब हमने भोजन कर लिया तो वे स्वतः ही बोल पड़ीं, “कलका सत्संग बहुत अच्छा था, आपने बच्चोंको बहुत सरल भाषामें ऐसी बातें बताईं जो मुझे भी ज्ञात नहीं थीं। मैंने कहा, “आज हिन्दुओंको धर्मशिक्षण कहां दिया जाता है,

जो धर्मकी बातें किसीको ज्ञात होंगी, थोड़ी बहुत जानकारी कथावाचकोंसे या इधर-उधर पढ़नेसे मिलती है या किसीके गुरु हों तो उनसे मिलती है, आपका निजी विद्यालय है और हमारे साधक आपके परिचित हैं, इसलिए कल प्रवचन हो पाया अन्यथा विद्यालयोंमें हिन्दू धर्मकी शिक्षाको साम्प्रदायिक कहकर मना कर दिया जाता है। वहीं मौलवी और ‘फादर, मदर और सिस्टर’ खुलेआम बच्चोंको मदरसे और ‘कान्वेंट’में इस्लाम और ईसाई धर्मकी घुट्टी, वहां पढ़नेवाले बच्चोंको पिलाते हैं। उन्होंने हामी भरी और कहा, “ईश्वरने हमें बहुत दिया है; इसलिए हम सन्तोंका आदर करते हैं एवं प्रवचन-सत्संग हमारे विद्यालयमें करवाते रहते हैं; किन्तु इतना सब कुछ करनेपर भी हमें एक बहुत बड़ी समस्या है, मेरे पतिको पिछले बारह वर्षोंसे अनिद्रा दोष है, उन्हें न रातमें और न ही दिनमें नींद आती है। हमने अनेक लोगोंसे उपाय पूछा है और किया भी; किन्तु दो-चार दिवस पश्चात उन्हें पुनः कष्ट होने लगता है। मुझे लगा जैसे गणेशजीने मुझे अपनी बात कहनेकी सन्धि दे दी। मैंने उनसे कहा, “आप गणेशकी प्रतिमा कबसे एकत्रित कर रहे हैं?” उन्होंने कहा “हमें भिन्न स्थानोंपर जाना बहुत अच्छा लगता है और हम विश्वके अनेक देशोंमें जा चुके हैं व हम सभी स्थानसे गणेशकी प्रतिमा पिछले पन्द्रह वर्षोंसे एकत्रित कर रहे हैं।” मैंने कहा, “तो चलिए आपके गणेशजीका निरीक्षण करते हैं।” निरीक्षण तो मात्र एक माध्यम था उन्हें सब समझाने हेतु और इसी क्रममें मैंने पाया कि ५०% गणेशकी प्रतिमा विकृत थी और ४०% दाहिने सूंडवाली थी तथा लगभग २००० भिन्न आकारके गणेश उनके घरमें थे! मैंने उनसे कहा, “आपके पतिको निद्रानाश आपके घरमें बड़े हुए शक्ति तत्त्वके कारण है और वे तत्त्व दाहिने सूंडवाले गणेशसे आ रहे हैं।” उन्हें यह विश्वास ही नहीं हुआ! उन्होंने कहा, “हमारे घर इतने सन्त और संन्यासी आए, किसीने यह नहीं कहा और आप यह कैसे कह सकती हैं कि गणेशजीने मेरे पतिका निद्रा नाश

किया है ?” मैंने उन्हें विचित्र आकृतिवाले विकृत गणेश जो आपको भी भारतके किसी भी सजावटकी सामग्रीका विक्रय करनेवालेके यहां (दूकानमें) मिल जाएंगे, उसके विषयमें बताया, साथ ही दायें व बाएं सूंडवाले गणेशके विषयमें बताया। उन्हें सब सुनकर बहुत आश्चर्य हुआ। उन्होंने कहा, “अब इनका क्या करें ?” मैंने कहा, “शास्त्र तो कहता है कि आपने सभी विकृत आकारके एवं दाहिने सूंडवाले गणेशका विसर्जन करना चाहिए और पूजा घरमें एक बाएं सूंडवाले गणेशको रखना चाहिए।” वे कहने लगे, “हम ऐसा नहीं कर सकते हैं, कुछ गणेशकी प्रतिमाएं जो हमने विदेशसे ली हैं, वह चालीस या पचास सहस्र (हजार) रुपएकी हैं, हम उन्हें विसर्जित नहीं कर सकते हैं।” तो मैंने उन्हें दो गत्तेकी पेटी (कार्टन बॉक्स) लाने हेतु कहा और उनसे कहा कि एकमें विचित्र आकृतिवाले विकृत गणेशकी प्रतिमाओंको रखें और दूसरेमें दाहिने सूंडवाले गणेशको रखें एवं उसे अपने शयन कक्षसे दूर कहीं रख दें। उन्होंने अनमने मनसे यह किया, कहावत है न मरता क्या न करता ! और तीसरे दिवस मैं जिनके घर रुकी थी उनके यहां उनका सन्देश आया कि बारह वर्ष पश्चात उस स्त्रीके पति दो रातसे अच्छेसे सो रहे हैं; इसलिए वे संध्या समय मिलने आना चाहते हैं। जब वे दोनों मुझसे मिलने आए तो वे इतने प्रसन्न थे कि जैसे उन्हें निद्रा क्या मिल गई, भगवान मिल गया ! वस्तुतः उनके पतिका आध्यात्मिक स्तर ४५% था और घरमें जो शक्ति थी वह उस स्तरके व्यक्तिके लिए सहन करना कठिन था; अतः उस बड़ी हुई शक्तिके कारण उन्हें निद्रा नहीं आती थी।

यह मैं आपको कथाएं नहीं बता रही हूं, सत्य घटनाएं बता रही हूं ! वस्तुतः ये सर्व अनुभूतियां ईश्वरने मुझे क्यों दीं ?, अब मुझे उनका कारण ज्ञात हो रहा है।

४. ऐसे ही २०११ में मैं अपने विद्यालयकी एक सखीके घर कोलकातामें धर्मयात्राके मध्य रुकी थी। एक दिवस वे आग्रह कर मुझे अपने एक परिचितके ‘मॉल’में ले गईं, जो मुख्य राजमार्गपर था और बहुत सुन्दर बना था;

किन्तु उसकी ‘दूकान’की ईकाइयोंको दो वर्षसे कोई ग्राहक क्रय करने नहीं आ रहे थे और वे उसका कारण जानना चाहते थे। वैसे मैं ऐसे कार्योंके लिए नहीं जाती हूं; किन्तु विद्यालयकी सखी थी; इसलिए संकोचमें उसे मना नहीं कर पाई। वह ‘मॉल’ सचमें बहुत अच्छा बना था और मुख्य मार्गपर था, वहां अन्य ‘दूकानें’ भी थीं। जब मैं उस ‘मॉल’के भीतर गई तो प्रवेश स्थानपर ही एक विशाल दाहिने सूंडवाले गणेशकी प्राण प्रतिष्ठित प्रतिमा खड़ी थी। उससे इतनी शक्ति आ रही थी कि वहां कोई ग्राहक आ ही नहीं रहा था। मैंने उनसे पूछा, “यह किसने रखवाया ?” तो उन्होंने एक गुरुजीका नाम लिया ! उस मूर्तिकी विधि-विधानसे कोई पूजातक नहीं करता था ! (ऐसे होते हैं आजके अनेक गुरु, अपने अधपके ज्ञानसे समाजकी हानि करते हैं), मैंने उन्हें सब शास्त्र बताया तो वे भी आश्चर्यचकित हो गए !

मूर्ति विज्ञान स्पन्दनशास्त्रपर आधारित ज्ञान है। अब आजके अधिकांश ‘गुरुओं’को सूक्ष्मका ज्ञान होता ही नहीं, थोड़े ग्रन्थ रटकर, थोड़ा संगीत सीखकर, गुरुपदपर बैठ जाते हैं ! स्पन्दनशास्त्र इत्यादिसे उन्हें क्या लेना-देना है ? भक्त मण्डली बड़े, विशाल आश्रम कैसे बने ?, प्रसिद्धि कैसे पाएं ?, उन्हें मात्र इसमें अधिक रुचि होती है !

अब आइए दोनों सूंडवाले गणेशमें क्या अन्तर है यह जान लेते हैं, यह शास्त्र हमारे श्रीगुरुद्वारा संकलित ‘गणपति’ नामक ग्रन्थसे संकलित की है।

दाईं सूंड : जिस मूर्तिमें सूंडके अग्रभावका मोड़ दाईं ओर हो, उसे दक्षिण मूर्ति या दक्षिणाभिमुखी मूर्ति कहते हैं। यहां दक्षिणका अर्थ है दक्षिण दिशा या दाईं दिशा। दक्षिण दिशा यमलोककी ओर ले जाने वाली व दाईं दिशा सूर्य नाडीकी है। जो यमलोककी दिशाका सामना कर सकता है, वह शक्तिशाली होता है व जिसकी सूर्य नाडी कार्यरत है, वह तेजस्वी भी होता है। इन दोनों अर्थोंसे दाईं सूंडवाले गणपतिको ‘जागृत’ माना जाता है। ऐसी मूर्तिकी पूजामें कर्मकाण्डान्तर्गत पूजा विधिके सर्व नियमोंका

यथार्थ पालन करना आवश्यक है। उससे सात्त्विकता बढ़ती है व दक्षिण दिशासे प्रसारित होनेवाली रज लहरियोंसे कष्ट नहीं होता।

दक्षिणाभिमुखी मूर्तिकी पूजा सामान्य पद्धतिसे नहीं की जाती; क्योंकि तिर्यक (रज) लहरियां दक्षिण दिशासे आती हैं। दक्षिण दिशामें यमलोक है, जहां पाप-पुण्यका लेखा-जोखा (हिसाब) रखा जाता है। इसलिए यह दिशा अप्रिय है। यदि दक्षिणकी ओर मुख करके बैठें या सोते समय दक्षिणकी ओर पांव रखें तो जैसी अनुभूति मृत्युके पश्चात अथवा मृत्यु पूर्व जीवित अवस्थामें होती है, वैसी ही स्थिति दक्षिणाभिमुखी मूर्तिकी पूजा करनेसे होने लगती है। विधि विधानसे पूजन न होनेपर यह श्रीगणेश रुष्ट हो जाते हैं।

बाईं सूंड : जिस मूर्तिमें सूंडके अग्रभावका मोड़ बाईं ओर हो, उसे वाममुखी कहते हैं। वाम यानी बाईं ओर या उत्तर

दिशा। बाईं ओर चन्द्र नाडी होती है। यह शीतलता प्रदान करती है एवं उत्तर दिशा अध्यात्मके लिए पूरक है, आनन्ददायक है। इसलिए पूजामें अधिकतर वाममुखी गणपतिकी मूर्ति रखी जाती है। इसकी पूजा सामान्य या प्रायिक पद्धतिसे की जाती है। इन गणेशजीको गृहस्थ जीवनके लिए शुभ माना गया है। इन्हें विशेष विधि-विधानकी आवश्यकता नहीं होती। यह शीघ्र प्रसन्न होते हैं। थोड़ेमें ही सन्तुष्ट हो जाते हैं। चूक होनेपर क्षमा करते हैं।

संक्षेपमें दाईं सूंडवाले गणेशसे शक्तिके स्पन्दन आते हैं और बाएं सूंडवाले गणेशसे आनन्दके स्पन्दन आते हैं। एक गृहस्थको शक्ति नहीं, आनन्द चाहिए होता है; इसलिए उन्हें बाएं सूंडवाले गणेशकी उपासना करनी चाहिए !

विज्ञापन

उत्तिष्ठ कौन्तेय

गंगाकी रक्षाके लिए १११ दिवससे अनशनपर बैठे स्वामी सानन्दका देहावसन, स्वामी दयानन्दने लगाया हत्याका आरोप

हरिद्वारमें गंगाकी रक्षाके लिए अनशनपर बैठे स्वामी ज्ञान स्वरूप सानन्दकी गुरुवार, ११ अक्टूबर २०१८ ऋषिकेशके 'एम्स' चिकित्सालयमें देहावसन हो गया ! अनशनके १११वें दिवस बुधवार, अक्टूबर १० को प्रशासनने स्वामी सानन्दको अनशन स्थलसे उठाकर चिकित्सालयमें भर्ती करवाया था।

सूचनाके अनुसार, धर्मनगरी हरिद्वारके मातृसदनमें गत ११० दिवसोंसे स्वामी सानन्द गंगाकी रक्षाके लिए अनशनपर बैठे थे। स्वामी सानन्दने गंगाकी रक्षाके लिए विधान (कानून) बनाए जानेकी मांग की थी। मातृसदनसे आए ब्रह्मचारी दयानन्दने आरोप लगाया कि स्वामी सानन्दकी हत्या हुई है और इस षड्यन्त्रमें एम्सके निदेशक (डायरेक्टर) प्रो. रविकान्त भी सम्मिलित हैं ! उन्होंने कहा कि पूर्वमें स्वामी निगमानन्दकी भी इसी प्रकार हत्या हुई थी एवं 'एम्स' संचालक शासनके दबावमें कार्य कर रहे हैं।

हिन्दुत्वके मानबिन्दुओंके लिए कार्य करनेवाले साधू-सन्तोंके प्रति सभी दलोंकी संवेदनशून्यता देखकर यह स्पष्ट हो गया है कि जबतक इस देशमें हिन्दू राष्ट्रकी स्थापना नहीं हो जाती है गंगा मांका ही क्यों हिन्दुओंके किसी भी मानबिन्दुका संरक्षण सम्भव नहीं है और न ही इनके प्रति कार्य करनेवाले धर्मनिष्ठोंके लिए, शासकवर्गमें आदरभाव है; इसलिए हिन्दू राष्ट्रकी स्थापना करना अपरिहार्य हो गया है !

॥॥॥॥॥॥

केरल उच्च न्यायालयने मुसलमानी स्त्रीको मस्जिदमें प्रवेश करने सम्बन्धी याचिका कर दी अस्वीकृत

केरल उच्च न्यायालयने गुरुवारको ११ अक्टूबरको अखिल भारतीय हिन्दू महासभाकी उस

जनहित याचिकाको अस्वीकृत कर दिया, जिसमें उसने मुस्लिम महिलाओंको नमाज पढ़नेके लिए मस्जिदोंमें प्रवेश दिए जानेकी मांग की थी। याचिकामें हिन्दू महासभाने सबरीमाला प्रकरणमें उच्चतम न्यायालयके निर्णयका सन्दर्भ दिया था, जिसमें शीर्ष न्यायालयने सभी आयुकी महिलाओंको प्रवेशकी अनुमति प्रदान कर दी है। याचिकामें कहा गया कि महिलाओंको मस्जिदोंके मुख्य कक्षमें प्रवेश करने और नमाज पढ़नेकी अनुमति नहीं है। यह उनके साथ भेदभाव है और संविधानके 'अनुच्छेद १४ और २१'का उल्लंघन है। यहांतक कि मक्कामें भी महिलाओंको प्रवेशकी अनुमति है !

जब हिन्दू देवालयोंके सम्बन्धमें किसी विशिष्ट देवालयके नियमकी उपेक्षा कर स्त्रियोंको वहां प्रवेश करनेके निर्देश न्यायालयद्वारा यह कहकर दिया जाता है कि इस देशका संविधान लिंगभेद नहीं मानता है तो मुसलमानोंके विषयमें इसप्रकारके लिंग भेदको क्यों माना जाता है ? क्या उनपर इस देशका संविधान लागू नहीं होता ? क्या न्यायालयद्वारा इस प्रकारका भेदभावपूर्ण निर्णय देना न्याय है, क्या हिन्दुओंकी धार्मिक भावनाओंके साथ खिलवाड करनेको न्याय कहेंगे ?

॥॥॥॥॥॥

'ब्रह्मोस डेटा लीक'में विषकन्या नेहा और पूजाके खातेसे फंसा निशांत, इस्लामाबादसे चलाए जा रहे थे दोनों खाते !

स्वदेशी सुपरसोनिक मिसाइल 'ब्रह्मोस'का विवरण (डेटा) पाकिस्तानी गुप्तचर विभाग 'आईएसआई'को रहस्योद्घाटित (लीक) करनेके आरोपी वैमानिक अभियान्त्रिकी (एयरोस्पेस इंजीनियर) निशांत अग्रवालको दो विषकन्याओंके फेसबुक खातेकेद्वारा 'हनी ट्रैप'में फंसाया गया था ! इनमें एक खाता नेहा शर्मा और दूसरा पूजा रंजनके नामसे चलाया जा रहा था।

ये जानकारी उत्तरप्रदेश पुलिसकी आतंक निरोधी दलने (एटीएसने) मंगलवार, ९ अक्टूबरको न्यायालयमें दी। ये दोनों खाते पाकिस्तानकी राजधानी इस्लामाबादसे चल रहे थे ! इन अवैध खातोंकेद्वारा भारतमें कई अन्य वरिष्ठ सरकारी अधिकारियोंको भी 'फेसबुक'पर जोड़नेका प्रयास किया गया था !

धूर्त पाकिस्तान नित्य नूतन हथकण्डोंसे भारतका अहित साध्य करनेमें लगा हुआ है, इससे ही उसे शीघ्र पाठ पढाया जाना अति आवश्यक हो गया है, यह समझमें आता है !

卐卐卐卐卐

गुप्तचर विभागने कहा, तीन रेलयानोंमें आतंकी संगठनोंके लोगोंके साथ दक्षिण भारत पहुंचे रोहिंग्या

भारतीय गुप्तचर विभाग 'आईबी' द्वारा गृह मन्त्रालयको एक ब्यौरा भेजा गया है, इसमें रोहिंग्या घुसपैठियोंके भारतके उत्तरपूर्वी राज्योंसे दक्षिणी राज्योंकी ओर पलायन करनेकी सूचना दी गई है ! ब्यौरेके अनुसार, दक्षिणमें जिन स्थानोंपर रोहिंग्या घुसपैठियोंका पलायन हुआ है, उनमें केरल और भाग्यनगर अर्थात हैदराबाद प्रमुख हैं । गुप्तचर विभागके विवरणमें जो सबसे चिन्ताजनक बात है वो यह कि आतंकी संगठन 'हरकत उल जिहाद अल इस्लामी'के कुछ आतंकी इन रोहिंग्या घुसपैठियोंके साथ देखे गए हैं ! 'हरकत उल जिहाद अल इस्लामी' बांग्लादेश और पाकिस्तानमें सक्रिय आतंकी संगठन है । इसे देशकी सुरक्षाके लिए बड़ा संकट माना जा रहा है ।

रोहिंग्या मुसलमान देशके लिए संकट हैं जब न्यायालय और शासन दोनोंको यह ज्ञात है तो उन्हें इस देशसे निकालनेमें इतना विलम्ब क्यों ? क्या राष्ट्रकी सुरक्षा इस देशके शासनतन्त्रके लिए सर्वोपरि नहीं है ?

卐卐卐卐卐

गोवाके मन्त्री सनातनके समर्थनमें आए, कहा, सनातन संस्था हिन्दू धर्मके लिए कार्य कर रही है

बम विस्फोटके प्रकरणमें 'इण्डिया टुडे'के 'स्टिंग ऑपरेशन'पर गोवाके मन्त्री सुदीन ढवलीकरने 'सनातन संस्था'का बचाव किया है । उन्होंने कहा है, "सनातन संस्था हिन्दू धर्म और संस्कृतिके लिए कार्य कर रही है । मुझे नहीं लगता कि वह देशके विरुद्ध कोई कार्य कर रही है । इस प्रकरणकी जांच हो रही है और होनी भी चाहिए । इसमें न्यायालयके निर्णयकी प्रतीक्षा करनी चाहिए । वह और उनका परिवार 'सनातन संस्था'के साथ हिन्दू धर्मके प्रसारके लिए जुड़े हुए हैं । सनातन संस्था हिंसामें विश्वास नहीं करती है । हम हिन्दू धर्मका प्रसार करनेवाले सभी संगठनोंका समर्थन करते हैं ।" उन्होंने आजतक और इण्डिया टुडेके रहस्योद्घाटनपर कहा है कि यदि दो लोग सनातन संस्थाके साधक होनेका 'दावा' कर रहे हैं तो उनका कैसे विश्वास कर लिया जाए ?

हम सुदीन ढवलीकरजीके इस वक्तव्यका हार्दिक अभिनन्दन करते हैं । जो भी हिन्दू 'सनातन संस्था'को निकटसे जान लेगा वह ऐसा ही कहेगा, अन्य हिन्दुत्वनिष्ठ मन्त्रीगण भी ऐसे ही सनातनके समर्थनमें सत्यका साथ दें, यह उनसे अपेक्षा है !

卐卐卐卐卐

अभिनेता विल स्मिथने आस्थाके साथ की हरिद्वारमें हिन्दू रीतिसे पूजा-अर्चना

'हॉलीवुड'के प्रसिद्ध अभिनेता विल स्मिथने मंगलवार ११ अक्टूबरको संध्या गंगा आरतीमें भाग लिया और मां गंगाकी पूजा-अर्चना की । विल स्मिथने बताया, वह अपने जीवनके अधूरे सपनों या इच्छाओंको पूरा करने निकले हैं और इसी कारण वे भारत आए हैं । वहीं भारतके आध्यात्मिक जीवन दर्शनको जाननेकी जिज्ञासा उन्हें हरिद्वार लेकर आई । यहां उन्होंने ज्योतिषाचार्य प्रतीक मिश्रपुरीसे भेंट की और हरिद्वार और गंगाके विषयपर चर्चा की । इसके पश्चात उनके गंगा आरतीमें सम्मिलित होनेकी इच्छापर संध्याकालीन गंगा आरती दर्शन भी कराए । युवा तीर्थ पुरोहित उज्ज्वल पण्डितने बताया कि पूजा पाठ, रुद्राभिषेकसे लेकर

मां गंगा आरतीमें उनकी आस्था, उनके उत्साहको दर्शा रही थी। उन्होंने प्रत्येक विषयको बहुत ही तन्मयतासे सुना।

एक विश्वप्रसिद्ध पाश्चात्य देशके अभिनेताने हिन्दू संस्कृतिको जाननेकी इच्छासे, जो उसे बताया गया, उसपर बिना प्रश्न किए, वह सब किया; क्योंकि उसे उस विषयका ज्ञान नहीं है, जबकि भारतके पश्चात्यवादके रंगमें रंगे बुद्धिजीवी अपने ही धर्म और संस्कृतिसे दूर जा रहे हैं ! उनमें यहांके दर्शनको जानने और समझनेकी इतनी उत्कण्ठा क्यों नहीं है ?, इसपर वे विचार करें।

卐卐卐卐卐

एक और कश्मीरी छात्रने पकड़ा आतंकका मार्ग, हुआ आतंकी संगठनमें सम्मिलित

देहरादूनमें पढ़ रहे कश्मीरी छात्रके आतंकी संगठन हिजबुल मुजाहिदीनमें सम्मिलित होनेकी सूचना है। यह दूनका दूसरा प्रकरण है, जब यहां पढ़ रहा कश्मीरी छात्र किसी आतंकी संगठनमें सम्मिलित हुआ है। छात्रकी माने वीडियो सन्देश जारी कर पुत्रके वापस लौटनेकी विनती की है। इधर, केन्द्रीय सुरक्षा विभागके साथ ही सैन्य गुप्तचर विभाग (मिलिट्री इंटेलीजेंस) और सेनाने देहरादूनमें सम्पर्क साधा है। जम्मू-कश्मीरके बुमराटका (कुलगाम) रहनेवाला छात्र शोएब अहमद लोन, नन्दाकी चौकी स्थित एल्पाइन संस्थानमें (इंस्टीट्यूट) बीएससी (आईटी) पांचवीं छमाहीका (समेस्टरका) छात्र है। उसने यहां २०१६ में प्रवेश लिया था।

कश्मीरके शिक्षित युवा जो भिन्न राज्योंमें रह रहे हैं, क्या ऐसे छात्रोंको आतंकके मार्गपर बिना उनकी बुद्धिको भ्रष्ट किए ले जाना सम्भव है ?, इससे ही भारतके साथ एक सुनियोजित छद्म युद्ध आतंकवादी कर रहे हैं, यह ज्ञात होता है!

卐卐卐卐卐

बलियाके एक विद्यालयमें इस्लामिक विधान (नियम), भारत माताकी जय बोलनेपर छात्रोंको

मिलता है दण्ड

उत्तर प्रदेशके बलिया जनपदके 'गांधी मोहम्मद अली मेमोरियल इण्टर महाविद्यालय'में 'भारत माताकी जय' एवं 'वन्देमातरम्' बोलनेपर छात्रोंको दण्ड दिया जाता है ! यह आरोप स्वयं महाविद्यालयके अर्थशास्त्रके शिक्षक संजय पाण्डेयने लगाया और छात्रोंने भी इसे लेकर अपनी पीड़ा सुनाई। इसे लेकर लगभग आधा दशकाधिक (दर्जन) बने भिन्न-भिन्न वीडियो सामाजिक प्रसार माध्यमोंपर (सोशल मीडियापर) प्रसारित हुए, जिसके कारण महाविद्यालय प्रशासनमें हड़कम्पसा मचा हुआ है। एक छात्रकी परिवादपर समाजसेवी शिवकुमार जायसवालने जब उक्त महाविद्यालयके छात्रोंसे स्थिति ज्ञात करनी चाही तो सबसे पहले अर्थशास्त्रके शिक्षक संजय पाण्डेयने ही राष्ट्र गान 'जन-गण-मन'के पश्चात भारत माताकी जय एवं वन्देमातरम्का उद्धोष किए जानेपर छात्रोंको दण्ड दिए जानेका आरोप लगाया !

अभी मात्र भारतमें मुसलमान २०% हैं तो यह स्थिति है जब ये ५०% हो जाएंगे तो क्या होगा इसपर इस देशका हिन्दू विचार करे ! (६.१०.२०१८)

卐卐卐卐卐

धर्मनिरपेक्ष मन्त्री केन्द्रीय अठावलेने कहा, कुछ मुसलमानोंके साथ गोरक्षाके नामपर अत्याचार हुआ है !

'रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इण्डिया'के अध्यक्ष और केन्द्र शासनमें मन्त्री रामदास अठावलेने शुक्रवार, ५ अक्टूबरको कहा है कि केन्द्रमें 'एनडीए'के शासनके पश्चात गायके नामपर मुसलमानोंको तंग किया गया और उनपर अत्याचार हुआ है। अठावलेने कहा कि वे चाहते हैं कि मुसलमानोंको गोरक्षामें आगे आकर भागेदारी करनी चाहिए, जो कि हिन्दुओंको भी अच्छा लगेगा और इससे बन्धुत्व (भाईचारा) बढ़ेगा। अठावलेने कहा कि कुछ मुसलमानोंके साथ गोरक्षाके नामपर बर्बरता हुई है। अठावलेने इस मध्य कहा कि वो सदैव हिन्दुओं और मुसलमानोंमें एकताके समर्थक रहे हैं।

अठावले जैसे धर्मनिरपेक्ष मन्त्रियोंको हम यह बताना चाहेंगे कि उन्हें मात्र मुसलमानोंपर हुए हिन्दुओंद्वारा आघात क्यों दिखाई देते हैं, जो नगण्य ही होते हैं। प्रतिदिन सहस्रों गौ माताका वध कर उनके मांसको भक्षण करनेवाले मुसलमानोंका वे विरोध क्यों नहीं करते हैं ? इस देशमें जबतक मुसलमान गोमांस भक्षण नहीं छोड़ते हैं, तबतक उनसे गोरक्षाकी आशा भी कैसे कर सकते हैं ? मन्त्रीजी, गोभक्षक और गोरक्षक नदीके दो तीर समान हैं, उनमें एकता कैसे सम्भव है ?

(६.१०.२०१८)

❖❖❖❖❖

ईर्ष्यालु धर्मान्धोंद्वारा ममता बनर्जीके द्वारा दुर्गा पूजा हेतु दिए गए अनुदानका किया गया विरोध

पश्चिम बंगालमें दुर्गा पण्डालोंको २८ कोटि रुपयेके अनुदानकी घोषणा करनेके पश्चात ममता बनर्जीको मुस्लिम समुदायके विरोधका सामना करना पड़ रहा है ! बुधवार, ३ अक्टूबरको कोलकातामें मुस्लिम समुदायके लोग ममता बनर्जीपर भेदभावका आरोप लगाते हुए सड़कोंपर उतरे ! 'ऑल इण्डिया यूथ माइनॉरिटी फोरम'के मोहम्मद कमुज्जमानने कहा कि जिस प्रकार ममता शासनने दुर्गा पण्डालोंको २८ कोटि रुपयोंका अनुदान दिया है, उसी प्रकार इमाम और मुअज्जिनोंके वेतनको (स्टायपेंडको) भी बढ़ाया जाए ! और कहा कि इमामके वेतनको बढ़ाकर ५ सहस्र रुपए किया जाए !

अब राजनेताओंद्वारा हिन्दुओंके त्योहारपर दिया जानेवाला अनुदान भी धर्मान्धोंको अप्रिय लगने लगा है ! यह सब तुष्टिकरणका ही परिणाम है। हिन्दुओं, जो ममता दीदी मात्र मुसलमानोंके तुष्टिकरणमें विश्वास रखती हैं, वे अब अकरस्मात हिन्दुओंके प्रति इतना सद्भाव क्यों रखने लगी हैं ? किंचित सोचें !

❖❖❖❖❖

विवाहेत्तर सम्बन्ध अब अपराध नहीं, उच्चतम

न्यायालयके इस अनुचित निर्णयका समाजमें दिखने लगा है दुष्परिणाम

उच्चतम न्यायालयने व्यभिचारको अपराधकी श्रेणीसे बाहर किया है; किन्तु इसके दुष्परिणाम भी अब दिखने आरम्भ हो गए हैं। ऐसा ही कुछ तमिलनाडुकी राजधानी चेन्नईमें हुआ है ! यहां २४ वर्षकी एक महिला पुष्पलताने इसलिए आत्महत्या कर ली; क्योंकि उसके पतिने उससे कहा कि अब न्यायालयने आईपीसीकी धारा ४९७ को समाप्त कर दिया है; इसलिए अब उसे व्यभिचार करनेसे कोई रोक नहीं सकता। पुलिस अब मृतकाके पति जॉन पॉल फ्रैंकलिनसे (२७) इस बारेमें पूछताछ कर रही है। पुलिसने बताया कि दोनोंने २ वर्ष पूर्व प्रेम विवाह किया था। दोनोंके परिजन उनके विवाहके विरुद्ध थे। विवाहके कुछ समय पश्चात पुष्पलताको क्षयरोग अर्थात 'टीबी'का रोग हो गया और उसके पतिने उससे दूरी बना ली।

जब न्यायालय ही ऐसे व्यभिचारके समर्थनमें निर्णय देगा तो समाज तो उसका आधार लेकर अनैतिक कर्म करेगा ही ! इसलिए हिन्दू राष्ट्रकी स्थापना करना अति आवश्यक हो गया है; क्योंकि तभी न्यायालयके निर्णय धर्म अधिष्ठित एवं समाज हितमें होंगे !

❖❖❖❖❖

'बुर्का' पहन आक्रमण कर रहे हैं आतंकी, सुरक्षा बल चिन्तित

दक्षिण कश्मीरके शोपियांमें पुलिस थानेपर हुए आक्रमणमें आतंकियोंके बुर्का पहनकर प्रहार करनेका प्रकरण उजागर हुआ है। यह जानकारी सुरक्षा बलोंके लिए चिन्ताजनक है; क्योंकि पिछली कई घटनाओंमें आतंकियोंने अन्वेषण अभियानमें (सर्च ऑपरेशनमें) आक्रमणके समय इसका आश्रय (सहारा) लिया था ! रविवार ३० सितम्बरको पुलिस थानेमें आक्रमण कर आतंकियोंने एक पुलिसकर्मीकी हत्या कर दी थी ! अधिकारियोंके अनुसार गत एक वर्षमें एक दर्जनसे

अधिक ऐसी घटनाओंकी पुष्टि हुई है, जिनमें आतंकियोंने बुर्केका आश्रय लिया।

बुर्केको अनेक देश, राष्ट्रहितका आधार देकर प्रतिबन्धित कर चुके हैं और आज जब आतंकवादी इसका सहारा भारतमें लेने लगे हैं तो क्या यहां भी इसे त्वरित प्रतिबन्धित नहीं करना चाहिए ? शासकवर्ग इसपर गम्भीरतासे विचार करे !

卐卐卐卐卐

भारी मात्रामें महाविनाशक रसायन 'फेंटानाईल हाईड्रोक्लोराईड' के साथ धर्मान्ध मोहम्मद सादिकको इन्दौरमें बनाया गया बन्दी

राजस्व गुप्तचर विभागने (डीआरआई) बुधवार सितम्बर २६, २०१८ को मोहम्मद सादिकको इन्दौरमें दस किलो 'फेंटानाईल हाईड्रोक्लोराईड' नामक रसायनके साथ बन्दी बनाया।

ये रसायन इतना घातक होता है कि मात्र दस किलो 'फेंटानाईल'से लगभग पचास लाख लोगोंको एक साथ ही मारा जा सकता है ! एक स्वस्थ व्यक्तिको मारनेके लिए इस घातक रसायनकी मात्र २ मिलीग्राम मात्रा ही बहुत मानी जाती है। 'सेंटर फॉर डिजीज कण्ट्रोल एण्ड प्रिवेंशन'के विवरणसे (रिपोर्टसे) यह ज्ञात हुआ कि अमेरिकामें इस प्रकारके रसायनसे २०१६ में एक ही वर्षमें बीस सहस्र लोग मारे जा चुके हैं ! ज्ञात हो कि मुहम्मद सादिक रसायनशास्त्रमें 'पीएचडी' है और रासायनिक अभिक्रियाओंके सन्दर्भमें सुप्रशिक्षित है। सादिक इस रसायनका निर्माण अर्थात् संश्लेषण इन्दौरमें कर रहा था।

राजस्व गुप्तचर निदेशालयकी (डीआरआई) इस सूझ-बूझ व साहसिक कृत्यके लिए हम उनका अभिनन्दन करते हैं व यही आशा करते हैं कि प्रशासन शीघ्रातिशीघ्र इनसे जुड़े लोगोंको कठोर दण्ड दे।

卐卐卐卐卐

अन्धश्रद्धा निर्मूलनवालोंका दुष्कृत्य, श्मशानमें दिया प्रीतिभोज व मांस खाया !

अपने जन्मदिवसका प्रीतिभोज आश्रयस्थलों, जलपानगृह आदिमें होते हुए तो देखा होगा; परन्तु क्या आपने कभी सुना या देखा है कि किसी व्यक्तिके श्मशान घाटमें 'पार्टी' दी हो ! ऐसा प्रकरण महाराष्ट्रके औरंगाबादमें सामने आया है। महाराष्ट्र 'अन्धश्रद्धा निर्मूलन समिति'की (एमएनएस) संस्थाके पदाधिकारीने पुत्रका जन्मदिवस भोज श्मशानमें आयोजित किया ! परभणी जिलाध्यक्षद्वारा अपने पुत्रके जन्मदिवसके भोजका आयोजन जित्तुरके श्मशानमें किया। जन्मदिवसके इस विचित्र भोजमें लोगोंको मांस परोसा गया ! प्रकरण सामने आनेके पश्चात् अन्धश्रद्धा निर्मूलन समितिने इस घटनासे स्वयंको पृथक् करते हुए विरोध किया है। 'महाराष्ट्र अन्धश्रद्धा निर्मूलन समिति'के कार्यकारी अध्यक्ष अविनाश पाटिलने कहा कि, इस आयोजनसे समितिका कोई लेना-देना नहीं है। इस प्रकारका कार्य अति उत्साहमें किया गया है। संगठन अन्धविश्वासके विरुद्ध कार्य करता है। श्मशानमें किया गया इस प्रकारका आयोजन समितिके आदर्शोंके विरुद्ध है। प्रकरण १९ सितम्बरका बताया जा रहा है। परभणीके समिति जिलाध्यक्ष पन्धारीनाथ शिंदेने अपने पुत्रके जन्मदिनपर प्रीतिभोजका आयोजन श्मशान घाटमें किया। इसमें कई लोग सम्मिलित हुए।

'टीओआई'में छपे समाचारके अनुसार, प्रकरण उस समय सामने आया, जब कुछ पत्रकार इस कार्यक्रममें भाग लेने पहुंचे थे। आयोजनसे पहले लोगोंने पूरे श्मशानमें गो-मूत्रका छिडकाव किया। इसके पश्चात् मन्त्रोच्चारण कर श्मशानको पवित्र किया गया। श्मशानमें मनानेके पीछे उनका उद्देश्य मात्र इतना था कि लोगोंको यह बताया जा सके कि श्मशानमें कोई आत्माएं नहीं रहती हैं।

जब आत्माएं होती ही नहीं हैं तो मन्त्र और गोमूत्रकी क्या आवश्यकता थी ? श्मशानमें आत्माएं रहती हैं या नहीं, यह जानने हेतु साधना करनेकी आवश्यकता होती है, बिना साधना किए ऐसे तर्क

देकर समाजको दिशाहीन करना पाप है !
धर्मशिक्षणके अभावके कारण ही हिन्दुओंसे ऐसे
दुष्कृत्य होते हैं। तामसिक स्थानपर शुभ कर्म करनेसे
उस कर्मसे कोई आध्यात्मिक लाभ नहीं मिलता है !
(२६.९.२०१८)

卐卐卐卐卐

**धर्मान्धोंका दुस्साहस, जागरणके लिए मन्दिरकी
स्वच्छता करनेपर वहां घुसकर की तोडफोड**

मुरादाबादमें भोजपुरके चकबेगमपुर गांवमें
जागरणके लिए मन्दिरकी स्वच्छता करनेपर
मुसलमानोंने मन्दिरमें घुसकर तोडफोड की, जिसमें
पथराव और गोलीबारी हुई और लगभग २०-२२ लोग
पत्थरबाजीमें चोटिल हो गए। चामुण्डामन्दिरपर कुछ
दिवसोंके पश्चात जागरण होना प्रस्तावित है। इस कारण
रविवार प्रातः कुछ लोग मन्दिरकी स्वच्छता करनेके
लिए गए थे। इस मध्य वहांपर कुछ लोग आ गए और
स्वच्छता करनेसे रोक दिया ! वे जागरण कराए जानेके
विरोधमें थे। इस मध्य धार्मिक स्थलमें तोडफोडकी गई।
पुलिसने वहां से पांच मुसलमानोंको बन्दी बना लिया व
अन्य आरोपी भाग गए हैं।

हिन्दू बहुल देशमें धर्मान्धोंका दुस्साहस अब
इतना बढ गया है कि ये अब हिन्दुओंके अपने मन्दिरमें
धार्मिक अनुष्ठान करनेमें आपत्ति करने लगे हैं;
इसलिए हिन्दुओंका संगठित रहना अति आवश्यक
हो गया है!

卐卐卐卐卐

**शत्रु राष्ट्र एवं दुष्टता और आतंकका पर्याय बना हुआ
देश पाकिस्तानने कश्मीरके आतंकियोंपर जारी
किया डाक टिकिट**

पाकिस्तानने कश्मीरकी घटनाओं और
आतंकियोंपर २० 'डाक' शुल्कपत्रक (टिकिट) जारी
किए हैं ! इसमें उसने उन लोगोंको हुतात्मा बताया है, जो
घाटीमें भारतके सुरक्षाबलोंके हाथों मारे गए हैं ! इसमें
बुरहान वानीका नाम भी सम्मिलित है !

ये सभी 'डाक टिकिट' ८ रुपएवाले हैं। इसमें कश्मीरकी
कई घटनाओंका वर्णन किया गया है। इसमें सुरक्षाबलोंके
हाथों मारे गए बर्बर आतंकियोंपर डाक टिकिट हैं, तो वहीं
रासायनिक आक्रमणपर भी एक डाक टिकिट जारी किया
गया है ! ये २० 'डाक' 'ईबे' और दूसरे ऑनलाइन
जालस्थलके माध्यम से विक्रय किए जा रहे हैं। इनको
कश्मीर दिवसपर करांची से जारी किया गया था। इसमें
कुछ आतंकी ऐसे हैं, जो गत कई वर्षोंमें घाटीमें मारे गए
हैं। 'ईबे'पर ये ५०० पाकिस्तानी रुपएमें उपलब्ध हैं। एक
डाकका मूल्य ८ रुपए रखा गया है। पाकिस्तानके एक
अधिकारीने कहा, इनकेद्वारा हम कश्मीरकी जनताको
बताना चाहते हैं कि हम उनके साथ हैं। पाकिस्तान इसे
स्वतन्त्रताका युद्ध बताता रहा है।

**पाकिस्तानकी इस धृष्टताके पीछे हमारी अशक्त
विदेश नीति है, जो इस शत्रु राष्ट्रके ऐसे दुष्कृत्योंको
करनेका दुस्साहस प्रदान करता है।**

卐卐卐卐卐

**सांसदोंके वेतन-भत्तोंपर चार वर्षोंमें व्यय हुआ
१९.९७ अरबका शासकीय कोष (खजाना) !**

गत चार वर्षोंमें लोकसभा और राज्यसभा सांसदोंके
वेतन और भत्तोंपर शासकीय कोषका १९.९७ अरब
रुपये व्यय किए गए ! 'सूचनाके अधिकार'से यह उजागर
हुआ है कि इस अवधिमें लोकसभाके प्रत्येक सांसदने
प्रति वर्ष औसतन ७१.२९ लाख रुपयेके वेतन-भत्ते
प्राप्त किए, वहीं राज्यसभा सांसदको प्रत्येक वर्ष
औसतन ४४.३३ लाख रुपयेका भुगतान किया गया !

मध्य प्रदेशमें नीमचके रहनेवाले 'आरटीआई'
कार्यकर्ता चन्द्रशेखर गौडने बताया कि अत्यन्त
प्रयासोंके पश्चात उन्हें 'सूचनाके अधिकार'के अन्तर्गत
भिन्न-भिन्न आवेदनोंसे यह जानकारी मिली। लोकसभा
सचिवालयसे मिली जानकारीके अनुसार, वित्तीय वर्ष
२०१४-१५ से लेकर वित्तीय वर्ष २०१७-१८ के
मध्य संसदके निम्न सदनके सदस्योंके वेतन
और भत्तोंके भुगतानके लिए कुल १५ अरब ५४ कोटि

२० लाख ७१, ४१६ रुपये व्यय हुए ! लोकसभाके सदस्योंकी (५४३ निर्वाचित सदस्य और 'एंग्लो इंडियन समुदाय'के दो मनोनीत सदस्य) संख्याके आधारपर गणना करें तो ज्ञात होता है कि इस अवधिके मध्य प्रत्येक वर्ष लोकसभा सांसदको 'औसतन' ७१२९३९० रुपयेका भुगतान किया गया !

वहीं, राज्यसभा सचिवालयके अनुसार, उच्च सदनके सदस्योंको वेतन और भत्तोंके रूपमें कुल ४ अरब ४३ कोटि ३६ लाख ८२९३७ रुपयोंका भुगतान हुआ ! राज्यसभाकी २५० की सदस्य संख्याके अनुसार देखें तो प्रत्येक एक सांसदके वेतन भत्तोंपर प्रत्येक वर्ष 'औसतन' ४४३३६८२ रुपये व्यय किए गए !

इस मध्य, राजनीतिक और चुनावी सुधारोंके लिए कार्य करनेवाले अशासकीय (गैर-सरकारी) संगठन 'एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स'के (एडीआर) संस्थापक सदस्य जगदीप छोकर्ने मांग की है कि शासकीय कोषपर बढ़ते भारके कारण इस भुगतानकी समीक्षा की जानी चाहिए। छोकर्ने कहा, "सांसदोंका वेतन भले ही दस गुणा बढ़ा दिया जाए; किन्तु वेतनके अतिरिक्त न तो उन्हें किसी प्रकारका परिवर्तनीय भत्ता दिया जाना चाहिए, न ही घर, वाहन, भोजन, चिकित्सा, 'हवाई' यात्रा, टेलीफोन और अन्य सुविधाओंपर उनके व्ययका भुगतान शासकीय कोषसे किया जाना चाहिए"।

स्वतन्त्रताके पश्चात इस तथाकथित लोकतन्त्रकी स्थिति सबके समक्ष है, जिसका मूल्य प्रत्येक देशवासी चुका रहा है ! इससे स्पष्ट होता है कि हमारे तथाकथित नेता, जिनमें राष्ट्रप्रेम नहीं है, वे चलचित्रमें पैसे लेकर कार्य करनेवाले नटोंसे भिन्न नहीं हैं ! (२.१०.१८)

卐卐卐卐卐

जालन्धरमें बलात्कारके आरोपी बिशपका नायकके (हीरोके) समान भव्य स्वागत, सभ्य समाजके मुखपर थप्पड़

जालन्धरमें बलात्कारके आरोपी बिशपका नायकके समान भव्य स्वागत किया गया। केरल नन बलात्कार प्रकरणमें केरल उच्च न्यायालयसे जमानत मिलनेके पश्चात बुधवारको बलात्कारका आरोपी बिशप फ्रैंको मुलक्कलके जालन्धर पहुंचनेके पश्चात जिस प्रकार उसका स्वागत किया गया, वह लज्जास्पद है। बता दें कि केरल उच्च न्यायालयने सोमवारको इस बलात्कारी बिशप फ्रैंको मुलक्कलको मुक्त करनेका आदेश दिया था और यह मंगलवारको ही केरलके कोट्टायम कारागारसे मुक्त हुआ है।

बता दें कि जालन्धरमें जुलाई माहमें ननने इस बिशप फ्रैंको मुलक्कलके विरुद्ध बलात्कार और शारीरिक उत्पीड़नकी शिकायत प्रविष्ट कराई थी। आरोपोंके अनुसार, आरोपी बिशपको कार्यके लिए अनेक बार केरल आता था। इस मध्य उसने कई बार ननके साथ बलात्कार किया।

एक बलात्कारके आरोपी बिशपका जिसे वेटिकनने भी उसके पदसे हटा दिया हो, उसका ऐसा भव्य स्वागत देखना देशकी प्रत्येक महिलाको पीड़ा पहुंचाने जैसा है। स्वागत करनेवाले लोगोंकी मानसिकतासे यह ज्ञात होता है कि उनके लिए व्यभिचारी व्यक्ति भी सम्माननीय है ! जिस देशमें बलात्कारियोंका इतना भव्य स्वागत होगा क्या उस समाजमें यह नैतिक साहस बचेगा कि वह अपनी स्त्रियोंके सम्मानके लिए खड़ा हो सके ? ईसाई समाज यौन शोषणके आरोपीके साथ ऐसा ही करता आया है, विदेशोंमें कितने ही पादरियोंपर बच्चों और स्त्रियोंके यौन शोषणका आरोप लगा है किन्तु उसे धन देकर उन्हें दबा दिया जाता है और वे निर्लज्ज होकर समाजमें धर्मगुरु बनकर घुमते रहते हैं ! ऐसे लोग जो इनका समर्थन करते हैं वे मानवताके खरे अर्थोंमें शत्रु हैं।

卐卐卐卐卐

'आइएसआइ'को गुप्त सूचनाएं देनेवाला सैनिकको बनाया गया बन्दी

पाकिस्तानके गुप्तचर विभाग, 'आईएसआई'को देशकी सुरक्षासे सम्बन्धित सूचनाएं देनेके आरोपोंमें पकड़े गए मेरठ सेनाक्षेत्रमें (कैंटमें) नियुक्त सैनिकको चण्डीगढ़में पूछताछके पश्चात पुनः मेरठ लाया गया है। गुप्तचर विभाग उसके माध्यमसे पकड़े साक्ष्य जुटाते हुए जांचमें जुटी है। यह सैनिक दो वर्ष पूर्व जम्मू कश्मीरमें था और अब पुनः कहीं नूतन नियुक्तिपर वहां जानेवाला था। मेरठ कैंटके सैनिक कंचन सिंहको गुप्तचर विभागने पाकिस्तानके गुप्तचर विभाग 'आईएसआई'को सूचनाएं भेजनेके आरोपोंमें कुछ दिवस पूर्व पकड़ लिया था। जिस विभागमें यह सैनिक नियुक्त था, उसका मुख्यालय वेस्टर्न कमांड चण्डीगढ़में है। संवेदनशील होनेके चलते सैनिकको चण्डीगढ़ ले जाया गया था, जहां नार्दन कमांड और वेस्टर्न कमांडके अधिकारियोंने उससे पूछताछ की। उच्चस्तरीय सूत्रोंके अनुसार गुरुवार, १८ अक्तूबरको फौजीको पुनः मेरठ लाया गया। बताया जा रहा है कि यह सैनिक दूरभाष और सामाजिक प्रसार माध्यमके द्वारा (सोशल नेटवर्किंग साइट्सके द्वारा) पाकिस्तानी गुप्तचर विभागके मध्यस्थोंके सम्पर्कमें था। इससे मिले साक्ष्यके आधारपर जांच विभाग 'आईएसआई'के नेटवर्क तक पहुंच सकती है।

मूल रूपसे यह जवान उत्तराखण्डके बागेश्वर प्रान्तके बिलौनी गांवका रहनेवाला है। गुरुवारको मेरठमें वायुसेना सहित देशभरके कई जांच विभाग डेरा डाले रहीं। सेना गुप्तचर विभाग (आर्मी इंटेलिजेंस), 'आईएसआई'के मध्यस्थोंकी शोधमें जुटी थी। इसीका पीछा करते हुए मेरठमें नियुक्त सैनिककी कुछ वार्ताएं पाकिस्तानमें हुईं! तीन माह तक फौजीको सर्विलांसपर रखा गया, जिसके पश्चात गत दिवसोंइसे बंदी बना लिया गया।

आए दिन सैनिकोंके देशद्रोही कृत्योंमें सम्मिलित होनेके समाचार मिलते रहते हैं, पाकिस्तान तो धूर्त और कनीच है ही जो नित्य नूतन षडयन्त्रोद्धार द्वारा भारतीय सैनिकोंको अपनी जालमें फंसानेका प्रयास करता है; किन्तु सैनिकोंमें भी धर्मका यदि बल हो तो ही वे किसी भी प्रलोभन या परिस्थितिमें अपने मातृभूमिके साथ विश्वासघात नहीं कर सकते हैं; इस हेतु

सैनिकोंमें धर्मकी शिक्षा देना अति आवश्यक है !
(१८.१०.१८)

卐卐卐卐卐

५०० रुपयेका लालच देकर धर्मान्ध ईसाई पशु-चिकित्सकने अव्यस्क लडकीका कराया धर्म परिवर्तन

झारखण्डके पाकुड जनपदमें एक अव्यस्क (नाबालिग) लडकीको धर्मान्तरणके लिए विवश करनेके आरोपमें एक वरिष्ठ पशु-चिकित्सकको बन्दी बना लिया गया है। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारीने यह जानकारी दी। पुलिस अधीक्षक शैलेन्द्र प्रसाद बर्नवालने बुधवार, १७ अक्तूबरको कहा कि लडकीके पिताके वक्तव्यके आधारपर पशु-चिकित्सकके विरुद्ध आईपीसी और 'झारखण्ड धर्मान्तरण निरोधक कानून-२०१७'की धाराओंके अन्तर्गत प्रकरण प्रविष्ट (दर्ज) किया गया।

इसका संज्ञान लेते हुए पुलिसने मंगलवार, १६ अक्तूबरको सांवलापुर गांवमें छापेमारी की, पशु-चिकित्सकको बन्दी बनाया और गांवमें चल रही एक धार्मिक सभाके स्थानसे १३ वर्षकी लडकीको छुड़ाया। लिट्टीपारा पुलिस थानेमें प्रविष्ट कराई गई प्राथमिकीमें रोडेगो गांवकी निवासी लडकीके पिताने कहा कि दालू सोरेन नामके पशु-चिकित्सकने उनकी पुत्रीको प्रलोभन दिया और ५०० रुपएकी प्रस्तुति (पेशकश) करके अपने वाहनमें उसे साथ ले गया।

पुलिसके अनुसार, आरोपीने लडकीको बताया था कि धार्मिक सभामें उसका धर्मान्तरण किया जाएगा। उसे विश्वास दिलाया गया था कि मिशनरी अधिकारी उसकी शिक्षा एवं अन्य आवश्यकताओंका ध्यान रखेंगे।

बर्नवालने बताया कि पुलिस इस आरोपकी भी जांच कर रही है कि सोरेन पहले भी ग्रामीणोंका धर्मान्तरण करा चुका है। ईसाई मिशनरियां सर्वत्र निर्धनोंको ही लक्ष्य बना, उनका छलसे धर्म परिवर्तन करते हैं यही उनका इतिहास रहा है। इसे रोकने हेतु इस देशमें ठोस धर्म परिवर्तन विधान लानेकी शीघ्र आवश्यकता है।

-तनुजा ठाकुर

साधकोंकी अनुभूतियां



बंगलुरुकी मीनू गुप्तकी अनुभूतियां
१. पतिको बोलनेपर भी तुलसीके पौधेका नूतन घरमें न लाना और वह एक अतिथिद्वारा भेंट स्वरूप दिया जाना

जब मैंने नामजप करना आरम्भ किया था तो प्रयास रहता था कि नामजप हर समय होता रहे; परन्तु कभी-कभी भूल जाती थी। यह अनुभूति उस समयकी है जब हमने नूतन घरका गृह-प्रवेश किया था, पूजा हमने पहले की थी व नवरात्रमें हमने अपने मित्रोंको घर पर बुलाया था और घरमें माताकी चौकी रखी थी। नूतन घरमें पतिने तुलसीका पौधा लाकर नहीं दिया था जो मैं उन्हें बहुत बार बोल चुकी थी; पुराने घरसे लेने नहीं दिया कि यह भी अपना ही घर है, नूतन घरमें दूसरा ले लेना। परन्तु उन्होंने लाकर नहीं दिया था, जिस दिन घरमें पूजा थी उस दिन शुक्रवारका दिन था, किसीसे सुना था कि शुक्रवारको तुलसीजीका पौधा घरमें लगाना चाहिए तो उस दिन बहुत तीव्र इच्छा थी कि आज पौधा लाना ही है; परन्तु घरके कार्योंकी व्यस्तताके कारण स्वयं नहीं जा पाई और पतिको पुनः बोला कि घर वापस आते समय पौधा ले आना; परन्तु वे पौधा नहीं लाए तो निराशा हुई और सोचा कि पुनः किसी दिन मैं ही लाऊंगी, अतिथि आने लगे, भजन-कीर्तन होने लगा। लगभग सभी आमन्त्रित लोग आ गए थे। ६:४५ के आसपास हमारे एक मित्र आए जिनके एक हाथमें उपहार था और दूसरे हाथमें एक सुन्दरसे गमलेमें तुलसीका पौधा था जो मेरे पतिने पकड़ा एवं कहा, “ले आ गई तुलसीजी तेरे घर।” मैं तो देखती ही रह गई, विश्वास ही नहीं हो रहा था, नेत्रोंसे अश्रु निकल गए व मांके लिए कृतज्ञताका भाव आया। (१६.९.१५)

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

भाईको साधना विषयक तथ्य बताते समय उसकी

अडचनसे सम्बन्धित सत्संगका त्वरित आना

एक बार अपने छोटे भाईको साधनाके विषयमें बता रही थी कि तुम लोग भी नामजप किया करो। भाई मांसाहारी है और कभी-कभी मद्य (शराब) भी पीता है। उसने कहा, “यदि मैं जप करूंगा तो मुझे मांसाहार व मद्य छोड़नी पड़ेगी जो मैं नहीं छोड़ सकता।” मैंने कहा, “गुरुमां तो कहती हैं कि मांसाहारी भी जप कर सकते हैं, उससे बात करते समय चलभाषमें एक सन्देश आया, बात पूरी होनेपर जब चलभाष देखा तो उसमें आश्रमसे धर्मधारा श्रव्य सत्संग व्हाट्सऐप्पपर आया था, विषय था ‘क्या मांसाहारी भी माला लेकर जप कर सकते हैं?’”, मुझे लगा जैसे मां पास ही हैं और कह रहीं हैं, “समष्टि साधनाका अच्छा प्रयास है, यही चाहिए था न तुम्हें” ! मैं घरमें इधर-उधर देखने लगी तो मांकी बात पुनः स्मरण हुआ कि गुरु सर्वज्ञ होते हैं। उसी समय कृतज्ञता व्यक्त करते हुए भाईको सत्संग भेज दिया।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

एक दिवस पूर्व हुई अनुभूतिका धर्मधारा सत्संगद्वारा उत्तर मिलना

मैं दोपहरमें कभी सोती नहीं हूं, कभी थक जाती हूं तो थोड़ा लेट जाती हूं, एक दिन इसी प्रकार दोपहरमें थोड़े समय लेटी; किन्तु अर्धनिद्राकी अवस्था थी; नेत्र बन्द किए तो थोड़े समय पश्चात ऐसा लगा जैसे मेरे माथेपर कोई हाथ फेर रहा था, मुझे बहुत अच्छा लग रहा था। तभी ध्यान आया घरमें कोई नहीं है, मैं ही हूं! भयभीत होकर आंखें खोलीं। मेरे साथ क्या हुआ मुझे समझमें नहीं आया; परन्तु अगले दिन मांका व्हाट्सऐप्पपर धर्मधारा श्रव्य सत्संग आया, विषय था, “अनुभूति किसे कहते हैं?” तब समझ आया कि पिछले दिवस जो मुझे अनुभूति हुई थी वह वायु तत्त्वसे सम्बन्धित अनुभूति थी। मांके लिए कृतज्ञताका भाव आया।

सेवासे सम्बन्धित अडचनका दूर होना और सेवा समयसीमाके भीतर पूर्ण कर पाना

एक दिन शनिवार रात्रिमें सीमा दीदीने एक सन्देश भेजा कि मासिक पत्रिकाकी सेवा है, कल अर्थात रविवार संध्यातक पूर्ण कर भेजनी है, मांको परम पूज्य गुरुदेवको गोवा भेजनी है, आप कर पाएंगी क्या ? असमंजसमें थी कि हां, कहां या नहीं; क्योंकि रविवारके दिन सब लोग घरपर होते हैं व रसोईघरका कार्य भी अधिक हो जाता है; परन्तु हां बोल दिया कि करूंगी। पूरी रात ठीकसे नींद नहीं आई कि सेवा करूंगी कैसे ? प्रातः शीघ्र उठी तो कुछ पृष्ठ ही पूरे कर पाई थी, तबतक सब लोग उठ गए थे तो भोजनके लिए रसोईघरमें गई, ईश्वरसे व मांसे प्रार्थना की कि हे प्रभु, मैं तो माध्यम मात्र हूं, आपही सब करवाकर लेंगे, सेवा दी है तो करवाकर ले लो, भोजन समाप्त होते राजेश भैयाका (हमारे व्यवसायमें सहभागी हैं) चलभाष आया कि जो लोग अमेरिकासे आए हैं, वे आज ही मिलना चाहते हैं, वैसे उनको सोमवारको मिलना था। पतिने बताया कि आज उनका पूरा दिन उन लोगोंके साथ जाएगा व संध्यामें उन्हें 'इस्कॉन' मन्दिर दिखाकर आएंगे ! मुझे इतनी प्रसन्नता हुई कि जैसे मेरी प्रार्थना स्वीकार हो गई, संध्या ६:४५ पर मैंने सेवाकी धारिका संगणकीय सम्पन्नद्वारा जैसे ही भेजी, उसी समय पतिनेघरकी घण्टी बजाई। उसके पश्चात तो राततक सोते-सोते कृतज्ञता ही व्यक्त करती रही। (सेवाके प्रति तीव्र उत्कण्ठाके कारण ऐसा हुआ है।) - सम्पादक

❦❦❦❦❦

बेटीकी परीक्षा परिणाममें अंकका अपेक्षासे अधिक अच्छा आना

अनुभूति उस समयकी है जब मेरी बेटी दसवीं कक्षाकी परीक्षा देनेवाली थी, परीक्षा दो भागोंमें होती है, पहले भागके अंक (नम्बर) दूसरे भागसे जुड़कर 'सीजीपीए' आती है। बेटीकी पहले भागकी परीक्षामें गणितका विषय अच्छा नहीं हुआ था, उसमें उसने १६

अंकका प्रश्न छोड़ दिया था, मैं भी उसे पढ़ा नहीं पाई थी तो मुझे बहुत ग्लानि होती थी कि इसकी १० 'सीजीपीए' नहीं बनेगी। मार्चकी परीक्षामें उसे अच्छेसे पढ़ाया था; परन्तु विश्वास था कि कम अंक आएंगे; क्योंकि पहले भागमें अंक कम हैं। नामजप करते समय कभी-कभी मनमें आता था कि इसके अंक मेरे कारण कम आएंगे, वह कहती भी रही, मैं ही ध्यान नहीं दे पाई। परीक्षाके पश्चात जब बेटीका परिणाम आया तो उसकी दसमेंसे दस 'सीजीपीए' आई। कैसे आई ?, समझमें नहीं आया। जब परीक्षा परिणाममें देखा तो उसकी मार्चकी परीक्षाके अंक पूरे होनेके कारण एक विषयमें 'अपग्रेडेशन' मिला था जोकि गणित था। उसका परिणाम देखकर तो मेरा मन बहुत आनन्दित हुआ व कृतज्ञताका भाव आया।

❦❦❦❦❦

मनमें विचार आते ही मांद्वारा सात्त्विक स्वरके स्तोत्र चलाने हेतु निर्देश आना

कल एक सुन्दर अनुभूति हुई। मनमें विचार आ रहा था कि प्रातः कोई भजन लगाया करूं; परन्तु कौनसा लगाऊं यह समझमें नहीं आ रहा था; क्योंकि तनुजा माने बताया था कि चित्रपट संगीतके भजन सात्त्विक नहीं होते। उसका उत्तर आज मांके व्हाट्सऐप्प गुट जो हम साधकोंके लिए बना है उसमें मिला जिसमें उन्होंने प्रातः कौनसे सात्त्विक स्वरके स्त्रोत लगाने चाहिए उसका लिंक साझा किया था। इसीसे मां हमारे मनकी बातें जान लेती हैं, इसका भान हुआ एवं आनन्द व कृतज्ञताका भाव आया। (७.९.२०१८)

❦❦❦❦❦

कर्मफल यदाचरति कल्याणि ! शुभं वा यदि वाऽशुभम् ।

तदेव लभते भद्रे ! कर्त्ता कर्मजमात्मनः ॥

अर्थ : मनुष्य जैसा भी अच्छा या बुरा कर्म करता है, उसे वैसा ही फल मिलता है। कर्त्ताको अपने कर्मका फल अवश्य भोगना पड़ता है।

दीपावली सात्त्विक रीतिसे कैसे मनाएं ?

कार्तिक मासकी अमावस्याको दीपावलीका पर्व हर वर्ष मनाया जाता है। भारतवर्षमें मनाए जानेवाले सभी त्योहारोंमें दीपावलीका सामाजिक और धार्मिक दोनों दृष्टिसे अत्यधिक महत्त्व है। इसे दीपोत्सव भी कहते हैं। 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' अर्थात् 'अन्धेरेसे ज्योति अर्थात् प्रकाशकी ओर जाइए' यह उपनिषदोंकी आज्ञा है। दीपावली स्वच्छता एवं प्रकाश का पर्व है। कई सप्ताह पूर्व ही दीपावलीकी पूर्वसिद्धता सभी आरम्भ कर देते हैं। लोग अपने घरों, व्यावसायिक स्थानों आदिकी स्वच्छता एवं रंगाई-पुताईका कार्य आरम्भ कर देते हैं एवं दीपावलीसे पूर्व सारी स्वच्छता एवं सजावट पूर्ण हो जाती है। सामान्यतः अमावस्या अशुभ मानी जाती है; किन्तु यह शास्त्र दीपावलीकी इस अमावस्यापर लागू नहीं होता। यह दिन शुभ माना जाता है; परन्तु समस्त कार्योंके लिए नहीं; अतः इसे शुभ कहनेकी अपेक्षा आनन्द या हर्षोल्लासका दिन कहना अधिक उचित होगा।

लोकप्रसिद्धिमें प्रज्ज्वलित दीपोंकी पंक्ति लगा देनेसे दीपावली और स्थान-स्थानमें मण्डल बना देनेसे दीपमालिका बनती है। 'कार्तिके मास्यामावास्या तस्यां दीपप्रदीपनम् शालायां ब्राह्मणः कुर्यात् स गच्छेत् परमम् पदम्' इस प्रकार दीपावली या दीपमालिका सम्पन्न करनेसे परम पद प्राप्त होता है, ऐसा शास्त्र वचन है। ब्रह्मपुराणमें लिखा है कि 'कार्तिककी अमावस्याको अर्धरात्रिके समय लक्ष्मी महारानी सद्गृहस्थके घरोंमें विचरण करती हैं; इसलिए अपने घरोंको सब प्रकारसे स्वच्छ, शुद्ध और सुशोभित कर दीपावली अथवा दीपमालिका बनानेसे लक्ष्मी प्रसन्न होती हैं और उनमें स्थाईरूपसे निवास करती हैं। इसके अतिरिक्त वर्षाकालमें लगे हुए जाले, मकड़ी, कीचड़ और दुर्गन्ध आदि दूर करने हेतु भी कार्तिक अमावस्याको दीपावली

लगाना हितकारी होता है, यह अमावस्या संध्याकालसे आधी राततक रहनेवाली होती है। यदि वह आधी रात न रहे तो संध्याकालीन लेना चाहिए।

इस दिन सभी लोग प्रातःकालसे ही घरको सजानेका कार्य आरम्भ कर देते हैं। रंगोली, वन्दनवार, पुष्प, केलेसे स्तम्भ एवं केलेके पत्ते इत्यादिसे वे सवेरे अपने घरको सजाते हैं एवं संध्या समयमें दीये जलाकर लक्ष्मी पूजन कर देवी लक्ष्मीका आवाहन करते हैं।

दीवालीपर पूजी जानेवाली भगवती महालक्ष्मी चल एवं अचल, दृश्य एवं अदृश्य सभी सम्पत्तियों और अष्टसिद्धियों एवं नौ निधियोंकी अधिष्ठात्री देवी अर्थात् साक्षात् नारायणी हैं। भगवान श्रीगणेश सिद्धि-बुद्धि और शुभ-लाभके स्वामी तथा सभी अमंगलों एवं विघ्नोंके नाशक हैं, ये विवेक प्रदान करनेवाले हैं; अतः दीपावलीके दिन इनके समवेत पूजनसे सभी कल्याण-मंगल एवं आनन्द प्राप्त होते हैं। इसके साथ ही इस दिवस कुबेरकी भी पूजा की जाती है जिससे अर्जित धनका संचय हो सके। दीपावलीके दिन चौमुख दीपक रातभर प्रदीप्त रखना, शुभ एवं मंगलप्रदायक होता है।

दीपावालीमें शुभ मुहूर्तमें पूजन करनेका महत्त्व

लक्ष्मीजी चंचल स्वभावकी होनेके कारण चंचला कहलाती हैं। ये एक स्थानपर अधिक समयतक नहीं टिकती हैं। इसलिए सभी गृहस्थ दीपावलीके दिन इनकी स्थापना ऐसे मुहूर्तमें करना चाहता है जिसके प्रभावसे भगवती लक्ष्मी उसके यहां स्थिर होकर रहें। ज्योतिषशास्त्रमें प्रत्येक महत्त्वपूर्ण कार्यको उसके लिए निर्दिष्ट शुभ मुहूर्तमें करनेका निर्देश है; क्योंकि कालचक्रमें प्रत्येक कार्यके लिए एक विशेष समय ही सर्वाधिक उपयुक्त होता है। अनुकूल समयके चयनकी इस प्रक्रियाको मुहूर्त-निर्णय कहते हैं। दीपावली-पूजनके मुहूर्तका घरकी आर्थिक स्थिति तथा व्यापारिक प्रतिष्ठानके व्यवसायपर बहुत प्रभाव पड़ता है।

इसी कारण प्रत्येक व्यक्ति दीपावलीमें श्रीगणेश-लक्ष्मीकी स्थापना और पूजा सर्वश्रेष्ठ मुहूर्तमें करनेकी आकांक्षा रखता है।

महालक्ष्मी पूजन सायंकाल प्रदोषकालमें करना चाहिए। ब्रह्मपुराणमें कहा गया है -

**कार्तिके प्रदोषे तु विशेषेण अमावस्या निषाबर्धके ।
तस्यां सम्पूज्येत देवी भोग मोक्ष प्रदायिनीम् ॥**

अर्थात् लक्ष्मी पूजन एवं दीपदानके लिए प्रदोष काल एवं रात्रिका पञ्चमांश प्रदोष काल कहलाता है, यह सर्वाधिक उपयुक्त एवं फलदायी काल माना गया है।

देवगुरु बृहस्पतिके मतानुसार कार्तिक मासमें अमावस्याको सूर्यास्त हो जानेके पश्चात् ही दीपावलीका पर्वकाल प्रारम्भ होता है। सायंकालीन प्रदोषकालमें सर्वप्रथम लक्ष्मी योग आता है। लक्ष्मी योग गृहस्थजनोंके लिए अत्यन्त शुभ फलदायक होता है। इस मुहूर्तमें दीपावलीकी पूजासे घरका आर्थिक संकट दूर होता है। लक्ष्मी योगका समय रात्रिके प्रथम प्रहरमें होनेके कारण यह मुहूर्त सबके लिए अत्यन्त सुविधाजनक होता है और यह योग लगभग २ घण्टे २४ मिनटतक रहता है। वस्तुतः यह मुहूर्त समाजके प्रत्येक वर्गके लिए शुभ है।

प्रदोष कालमें भी जब स्थिर लग्न प्रचलित होती है तब लक्ष्मी पूजन करना और अधिक फलदायी होता है। ऐसा माना जाता है कि यदि स्थिर लग्नके मध्य लक्ष्मी पूजा की जाए तो लक्ष्मीजी घरमें स्थिर हो जाती हैं; इसीलिए लक्ष्मी पूजाके लिए यह समय सबसे उपयुक्त होता है। वृषभ लग्नको स्थिर माना गया है और दीवालीके त्योहारके मध्य यह अधिकतर प्रदोष कालके साथ अधिव्याप्त होता है।

इस वर्ष दीपावलीके दिन प्रदोषकाल सायंकाल १७:२७ से २०:०६ मिनटतक रहेगा एवं महानिशीथ कालका मुहूर्त २३:५६ से २४:४७ के मध्य है। प्रदोष कालमें भी स्थिर लग्न समय सबसे उत्तम रहता है और इस दिन १७.५९ से १९.५३ तक वृषभ लग्न रहेगा। प्रदोष काल व स्थिर लग्न दोनों रहनेसे मुहूर्त शुभ रहेगा।

अतः लक्ष्मी पूजनका यह सर्वश्रेष्ठ मुहूर्त है। परन्तु शास्त्रोंमें कार्तिक कृष्ण अमावस्याकी सम्पूर्ण रात्रिको कालरात्रि माना गया है; अतः सम्पूर्ण रात्रिमें पूजा की जा सकती है।

महालक्ष्मी आवाहन और पूजन कैसे करें ?

इस दिन भगवती लक्ष्मी एवं भगवान गणेशकी नूतन प्रतिमाओं/चित्रोंका प्रतिष्ठापूर्वक विशेष पूजन किया जाता है। इस हेतु स्नान इत्यादि कर पूजाकी वेदी सजाएं! स्वच्छ धुली हुई चौकीपर लाल वस्त्र बिछा कर कमल या किसी अन्य पुष्प अथवा अक्षतके आसनपर लक्ष्मीकी प्रतिमाको स्थापित करें! बाईं ओर गणेशकी मूर्ति रखें! जलसे भरे कलशपर मौली बांधकर रोलीसे स्वस्तिकका चिह्न अंकित करें! पूजा स्थानको पवित्र कर स्वयं भी पवित्र होकर श्रद्धा-भक्तिपूर्वक सायंकाल शुभ मुहूर्तमें इनका पूजन करें! सर्वप्रथम पूर्व अथवा उत्तराभिमुख हो आचमन, पवित्री धारण, मार्जन-प्राणायाम कर अपने तथा पूजा सामग्रीके ऊपर गंगाजलयुक्त जल छिड़कें!

पूजनमें सर्वप्रथम स्वस्तिवाचन, कलशपूजन, संकल्प लेकर श्रीगणेश, महालक्ष्मी, ऋद्धि-सिद्धि, इन्द्र, वरुण, कुबेर-भण्डारी, शक्तियों सहित ब्रह्मा, विष्णु, महेश, कुलदेवता, स्थानदेवता, सूर्यादि समस्त ग्रह-नक्षत्रकी पूजा-अर्चना करें। लक्ष्मी तथा कुबेरके मन्त्रोंका यथा शक्ति जप करें। पूजनके अन्तमें लक्ष्मीजीकी आरती, मन्त्र पुष्पांजलि तथा क्षमा प्रार्थना करें।

पूजनमें सर्वप्रथम स्वस्तिवाचन, कलशपूजन, संकल्प लेकर श्रीगणेश, महालक्ष्मी, ऋद्धि-सिद्धि, इन्द्र, वरुण, कुबेर-भण्डारी, शक्तियों सहित ब्रह्मा, विष्णु, महेश, कुलदेवता, स्थानदेवता, सूर्यादि समस्त ग्रह-नक्षत्रकी पूजा-अर्चना करें। लक्ष्मी तथा कुबेरके मन्त्रोंका यथा शक्ति जप करें। पूजनके अन्तमें लक्ष्मीजीकी आरती, मन्त्र पुष्पांजलि तथा क्षमा प्रार्थना करें।

लक्ष्मी पूजनके पश्चात् अपने घरके तुलसीके गमलेमें, पौधोंके गमलोंमें, घरके आसपास, वृक्षके पास दीपक रखें और अपने घरके मुख्यद्वार इत्यादिमें भी

दीपक रखें अर्थात् सर्वत्र दीपकोंको प्रकाशित करें !
बड़ोंका आशीर्वाद लें ! छोटोंको भेंट-उपहार दें !

दूसरे दिन प्रातःकाल चार बजे उठकर पुराने सूपमें
कूड़ा रखकर उसे दूर फेंकनेके लिए ले जाते समय कहें
'लक्ष्मी-लक्ष्मी आओ, दरिद्र-दरिद्र जाओ'।

दीपवालीके मध्य कुछ अन्य बातोंका भी ध्यान रखें !

* आजकल अनेक लोग दीपावलीपर सिक्थवर्तिकाएं
(मोमबत्तियां) जलाते हैं, सिक्थवर्तिका (मोमबत्ती)
तमोगुणी होती है; अतः इसे सामान्य दिनोंमें भी घरमें
जलानेसे घरकी वास्तुमें अनिष्ट शक्तियां आकृष्ट होती हैं
एवं वास्तु अशुद्ध हो जाता है। दीपावली जैसे शुभकालमें
जब सभी अपने घरोंमें माता लक्ष्मीकी कृपा पाने हेतु
उनकी पूजा करते हैं, ऐसेमें उस दिवस मोमबत्ती जलाना
अर्थात् अपने घरमें देवी लक्ष्मीको नहीं; अपितु आसुरी
शक्तियोंको क्लेश एवं दरिद्रता हेतु आमन्त्रण देना है;
अतः मोमबत्ती जलाना पूर्णतः टालें !

* आजकल लोग 'रंग-बिरंगे' विद्युदीप (बिजलीके
बल्ब) जलाते हैं, वह भी तमोगुणी होते हैं; इसलिए
दीपावलीमें तिलके या सरसोंके तेलका दीप जलाकर
अपने घरमें सात्त्विकता निर्माण करना चाहिए, जिससे
देवी-देवताके तत्त्व हमारे घरपर आकृष्ट हों एवं हमारे
जीवनमें सुख समृद्धि आए। जो भी हिन्दू विदेशमें रहते हैं
वे यदि अधिक दीपक नहीं जला सकते हैं तो कमसे कम
पांच दीपक तो अवश्य जलाएं ! एक दीपक अपने पूजा
घर, एक तुलसीके पौधेके समक्ष, एक घरके बाहर द्वारपर,
एक घरके पिछवाड़ेमें और एक घरके मध्य स्थानमें और
प्रयास यह करें कि ये दीये मध्य रात्रितक तो अवश्य
जलते रहें !

* दीपवालीके समय पूजाघरमें एवं प्रवेशद्वारपर
सात्त्विक आकृतिकी रंगोली अवश्य बनाएं, इससे भी दैवी
तत्त्व आकृष्ट होते हैं।

* आजकल अनेक लोग कागदके फूल एवं
चिमिचिमीसे घरको सजाते हैं इसके विपरीत घरको
नूतन (ताजे) पुष्प, गेंदे एवं आम्रपल्लवसे बने वन्दनवार,

केलेके पत्ते या स्तम्भसे घरकी सजावट करनी चाहिए !
ध्यान रखें, व्रत त्योहारोंपर जहांतक सम्भव हो घरमें
किसी भी प्रकारके कृत्रिम सजावट नहीं करना चाहिए।
वैसे ही विदेशी पुष्प गुच्छ एवं प्लास्टिकके फूल इत्यादि
भी तमोगुणी होते हैं; अतः उन्हें भी इन शुभ दिवसोंपर
नहीं लगाना चाहिए।

* पटाखोंकी कर्कश ध्वनिसे देवताके तत्त्व घरमें
आकृष्ट नहीं होते हैं। वहीं शंख, मन्त्र, आरती इत्यादिसे
देवताके तत्त्व सहज ही आकृष्ट होते हैं; इसलिए
दीपावलीके दिवस ऐसे कृत्योंको करें जिससे देवी-
देवताके तत्त्व आकृष्ट हों ! इसलिए पटाखें न छोड़ें, इससे
वातारणमें तमोगुणका प्रमाण तो बढ़ता है ही, अनिष्ट
शक्ति वातारणमें आकृष्ट होकर काली शक्ति प्रक्षेपित कर
वातावरणको तमोगुणी बनाकर लक्ष्मीका प्रवेश वर्जित
करती हैं। साथ ही पैसे भी व्यर्थ जाते हैं। देवी देवताओंके
चित्रवाले पटाखेका निषेध कर ईश्वरीय कृपाके पात्र बनें !
ध्यान रखें, दीपावलीमें पटाखे चलाना यह पाश्चात्योंकी
देन है; अतः इस तमोगुणी कृतिका निषेध करें; क्योंकि
इससे स्वास्थ्य, धन एवं पर्यावरण सबकी हानि होती है।

जहांतक हो सके बाहरकी मिठाइयोंकी अपेक्षा घरमें
पकवान बनाकर और बांटें।

* शुभकामना पत्र देनेकी अपेक्षा मुंहसे बोलकर
शुभकामनाएं दें, उससे शुभकामनाएं फलित भी होती हैं
और प्रेम बढ़ता है।

* उपहारमें सात्त्विक उपहार दें जैसे किसी सन्तके
आश्रमसे ग्रन्थ एवं अन्य पूजा साहित्य इत्यादि लाकर
भेंटमें दें।

* सात्त्विक भारतीय परम्परा अनुसार नए परिधान
धारण करें, इससे भी देवताका तत्त्व आकृष्ट होता है।
काले एवं पाश्चात्य संस्कृतिवाले वस्त्र 'कमसे कम'
शुभदिनमें तो न पहनें !

* लक्ष्मी पूजन कर भावपूर्ण आरती कर, घरमें दीप
प्रज्ज्वलन आरम्भ करें, आनेवाला काल अत्यन्त विकट
है; अतः मां लक्ष्मीसे प्रार्थना करें कि उनकी कृपा हम

सबपर और राष्ट्रपर बनी रहे। यदि लक्ष्मी गणेशकी मिट्टीकी मूर्तिकी स्थापना करते हैं तो अगले दिवस गणेश-लक्ष्मीकी मूर्तिको विसर्जित करना न भूलें, ध्यान रखें, मिट्टीकी मूर्तिमें विधिवत पूजा न की जाए तो वह देवत्वहीन हो जाती है।

* मिठाईके डिब्बेमें छपे गणेश या लक्ष्मीके चित्र को, शुभकामना पत्रमें गणेश-लक्ष्मीके चित्रको कूड़ेदानमें न फेंकें, उन्हें जल समाधि या अग्नि समाधि दें।

दीपावलीकी इस शुभ वेलामें समष्टि अन्धकारके स्वरूपमें विद्यमान भ्रष्टाचार, व्यभिचार, अराजकता, दरिद्रता, क्षात्रवृत्तिके अभावके कारण हिन्दुओंमें निर्माण हुई नपुंसकता एवं धर्मग्लानि जैसे तमसको दूर करने हेतु हिन्दू राष्ट्र रूपी ज्योतिको प्रज्ज्वलित कर मां भारतीके आंगनमें दिव्य ज्योति प्रज्ज्वलित करनेकी संकल्पशक्ति सभी कर्म हिन्दुओंको प्राप्त हो एवं सभी साधक सम्पूर्ण विश्वमें दिव्य दीपावलीके प्रकाशको प्रसारित करने हेतु सिद्ध हों, भगवती लक्ष्मीके चरणोंमें यह प्रार्थना करते हैं।

दीप स्तुति

**शुभं करोति कल्याणम् आरोग्यम् धनसम्पदा।
शत्रुबुद्धिविनाशाय दीपज्योति नमोऽस्तु ते॥**

अर्थ : मंगलकारी, शुभदात्री, आरोग्य एवं धनसम्पदा देनेवाली, हे दीपककी ज्योति आपको नमन है, आप हमारे शत्रुकी विनाशकारी बुद्धिका नाश करें!

卐卐卐卐卐

दीप ज्योति परम ज्योति दीप ज्योति जनार्दनः।

दीपो हरतु मे पापं दीप ज्योति नमोऽस्तुते॥

अर्थ : दीपकी ज्योति परम ज्योति होती है, ज्योतिके रूपमें इस जनार्दनको नमन है, दीपकी ज्योति सभी पापोंका हरण करती है, इसे नमस्कार है।

आवश्यक सूचना

मध्य प्रदेशके इन्दौर जनपदमें हमने एक प्राकृतिक चिकित्सालय एवं शोध संस्थान आरम्भ किया है। निम्नलिखित चिकित्सा प्रणालीके विशेषज्ञ यदि हमसे जुड़कर किसी भी रूपमें इस कार्यमें सेवा प्रदान करना चाहते हैं तो वे हमें अवश्य ही शीघ्र सम्पर्क करें! इस क्षेत्रके विशेषज्ञ, जो वानप्रस्थी हैं, वे भी अपनी सेवा प्रदान कर सकते हैं।

१. आयुर्वेदिक चिकित्सा २. संगीत चिकित्सा
३. मुद्रा चिकित्सा ४. योग (आसन एवं प्राणायामद्वारा) चिकित्सा ५. प्राणशक्ति चेतना प्रणाली चिकित्सा ६. मिट्टी चिकित्सा ७. जल चिकित्सा ८. सूर्य किरण चिकित्सा ९. रंग (रत्नद्वारा) चिकित्सा १०. पञ्चगव्य चिकित्सा ११. सुगन्धित द्रव्य (अरोमा) चिकित्सा १२. बिन्दु दाब (एक्युप्रेषर) चिकित्सा १३. एक्युपंकचर चिकित्सा १४. नाडी चिकित्सा १५. होम्यो चिकित्सा १६. घरेलू सामग्री चिकित्सा १७. पंचकर्म चिकित्सा १८. मर्दन (मालिश) चिकित्सा १९. पिरामिड चिकित्सा २०. चुम्बक चिकित्सा २१. स्वमूत्र चिकित्सा २२. स्वरयोग चिकित्सा २३. जीव रसायन (बायोकेमिक) चिकित्सा २४. रेकी चिकित्सा २५. प्राणिक चिकित्सा २६. सप्तचक्र शुद्धि चिकित्सा २७. मन्त्र चिकित्सा २८. शक्तिपात चिकित्सा २९. संकल्प चिकित्सा ३०. ज्योतिष चिकित्सा ३१. ॐ चिकित्सा

अधिक जानकारी हेतु मात्र हमें इस सम्पर्क क्रमांकपर

(८४४८०७८९७६, 8448078976)

अपने सन्देश sms या whatsapp पर भेजें या healingatvedic@gmail.com पर पत्र भेजें!



सन्त कवयित्री मीराबाई

भारतमें ऐसा
व्यक्ति सम्भवतः
ढूँढनेसे भी नहीं
मिलेगा जो सुविख्यात
कृष्णभक्त मीराबाईके
नामसे परिचित
न हो ! राजस्थानके

राजकुलमें जन्मी मीराबाई (मीराबाई) हिन्दू सन्त कवयित्री थीं, जिनके भगवान श्रीकृष्णके प्रति समर्पित भजन उत्तर भारतमें अत्यन्त लोकप्रिय हैं। भगवद्भक्तिके भजन और स्तुतियोंके माध्यमसे भक्तोंको भगवानके और निकट पहुंचानेवाले सन्तों और कवियोंमें मीराबाईका नाम अत्यन्त आदरपूर्वक लिया जाता है। मीराका सम्बन्ध एक राजपूत परिवारसे था। उनकी राजसी शिक्षामें संगीत और धर्मके साथ-साथ राजनीति व प्रशासन भी सम्मिलित थे। एक साधुद्वारा बाल्यकालमें उन्हें कृष्णकी मूर्ति दिए जानेके साथ ही उनकी आजन्म कृष्ण भक्तिका क्रम प्रारम्भ हुआ, जो अनवरत चलता रहा। वे भगवान कृष्णकी दिव्य प्रेमीके रूपमें आराधना करती थीं।

मीराबाईका जन्म : प्रसिद्ध कृष्णभक्त कवयित्री मीराबाई जोधपुर, राजस्थानके मेडता राजकुलकी राजकुमारी थीं। मीराबाई मेडता महाराजके छोटे भाई रतनसिंहकी एकमात्र सन्तान थीं। उनका जीवन बड़े दुःख और कष्टमें व्यतीत हुआ था। बाल्यकालमें ही उनकी माताकी मृत्यु हो गई। इसलिए राव दूदा उन्हें मेडता ले आए और अपनी देख-रेखमें उनका पालन-पोषण किया। राव दूदा एक योद्धा होनेके साथ-साथ भक्त-हृदय व्यक्ति भी थे और साधु-सन्तोंका आना-जाना इनके यहां लगा ही रहता था। इसलिए मीरा बाल्यकालसे ही धार्मिक लोगोंके सम्पर्कमें आती रहीं। इसके साथ ही उन्होंने

तीर-खड्ग (तलवार), जैसे शस्त्र-चालन, अश्वारोहण (घुड़सवारी), रथ-चालन आदिके साथ-साथ संगीत तथा आध्यात्मिक शिक्षा भी पाई।

कृष्णसे प्रेम : उनका कृष्ण प्रेम बाल्यकालकी एक घटनाके कारण अपने चरमपर पहुंचा था। एक मान्यताके अनुसार बाल्यकालमें एक दिन उनके पड़ोसमें किसी धनवान व्यक्तिके यहां विवाह था और वरयात्रा (बारात) आई थी। सभी स्त्रियां 'छत'से उसे निहार रही थीं। मीराबाई भी वरयात्रा देखनेके लिए छतपर आ गईं। वरयात्राको देख मीराने अपनी मातासे पूछा कि "मेरा वर (दूल्हा) कौन है?" इसपर मीराबाईकी माताने परिहासमें ही भगवान श्रीकृष्णकी मूर्तिकी ओर संकेत करते हुए कह दिया कि यही तुम्हारे वर हैं। यह बात मीराबाईके बालमनमें एक ग्रन्थिकी भांति समा गई और अब वे कृष्णको ही अपना पति समझने लगीं। मीराबाईके बालमनमें कृष्णकी ऐसी छवि बसी थी कि यौवनकालसे लेकर मृत्युतक उन्होंने कृष्णको ही अपना सब कुछ माना। इसप्रकार जोधपुरके राठौड रतनसिंहकी पुत्री मीराबाईका मन बाल्यकालसे ही कृष्ण-भक्तिमें रम गया था।

विवाह : मीराबाईके अद्वितीय गुणोंको देखकर ही मेवाड नरेश राणा संग्रामसिंहने मीराबाईके घर अपने बड़े बेटे भोजराजके लिए विवाहका प्रस्ताव भेजा। यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया और भोजराजके साथ मीराका विवाह हो गया। इस विवाहके लिए पहले तो मीराबाईने अस्वीकृति दी; परन्तु परिवारवालोंके अत्यधिक दबाव देनेपर वह सिद्ध (तैयार) हो गईं। विवाहके समय विदाईपर वह फूट-फूट कर रोने लगीं और विदाईके समय श्रीकृष्णकी वही मूर्ति अपने साथ ले गईं, जिसे उनकी माताने उनका वर (दूल्हा) बताया था।

विवाहके दस वर्ष पश्चात ही मीराबाईके पति

भोजराजका निधन हो गया। पतिकी मृत्युके पश्चात ससुरालमें मीराबाईपर कई अत्याचार किए गए। ख्रिस्ताब्द १५२७ में बाबर और सांगाके युद्धमें मीराके पिता रतनसिंह मारे गए और लगभग तभी श्वसुरकी मृत्यु हुई। सांगाकी मृत्युके पश्चात भोजराजके छोटे भाई रतनसिंह सिंहासनासीन हुए। ख्रिस्ताब्द १५३१ में राणा रतनसिंहकी मृत्यु हुई और उनके सौतेले भाई विक्रमादित्य राणा बने।

लौकिक प्रेमकी अल्प समयमें ही इतिश्री होनेपर मीराने पारलौकिक प्रेमको अपनाया और कृष्ण भक्त हो गईं। वे सत्संग, साधु-सन्त-दर्शन और कृष्ण-कीर्तनके आध्यात्मिक प्रवाहमें पडकर संसारको निस्सार समझने लगीं। उन्हें राणा विक्रमादित्य और मन्त्री विजयवर्गीयने अत्यधिक कष्ट दिए। राणाने अपनी बहन ऊदाबाईको भी मीराको समझानेके लिए भेजा; किन्तु कोई परिणाम न निकला। वे कुल मर्यादाको छोडकर भक्त जीवन अपनाए रहीं। मीराको स्त्री होनेके कारण, चित्तौडके राजवंशकी कुलवधू होनेके कारण तथा असमय विधवा हो जानेके कारण अपने समाज तथा वातावरणसे जितना विरोध सहना पडा उतना कदाचित ही किसी अन्य भक्तको सहना पडा हो। उन्होंने अपने काव्यमें इस पारिवारिक संघर्षके आत्मचरित-मूलक उल्लेख कई स्थानोंपर किए हैं।

कालान्तरमें मीराको 'राव बीरमदेव'ने मेडता बुला लिया। मीराके चित्तौड त्यागके पश्चात गुजरातके 'सुल्तान' बहादुरशाहने चित्तौडपर अधिकार कर लिया। विक्रमादित्य मारे गए तथा तेरह सहस्र महिलाओंने जौहर किया। कुछ मास उपरान्त जोधपुरके राव मालदेवने बीरमदेवसे मेडता छीन लिया। वे भागकर अजमेर चले गए और मीरा ब्रजकी तीर्थ यात्रापर चल पड़ीं जहां मीरा वृन्दावनमें रूप गोस्वामीसे मिलीं। वे कुछ कालतक वहां रहकर द्वारिका चली गईं।

उन्हें निर्गुणपन्थी सन्तों और योगियोंके सत्संगसे ईश्वर भक्ति, संसारकी अनित्यता तथा विरक्तिका

अनुभव हुआ था। तत्कालीन समाजमें मीराबाईको एक विद्रोहिणी माना गया। उनके धार्मिक क्रिया-कलाप, राजपूत राजकुमारी और विधवाके लिए स्थापित नियमोंके अनुकूल नहीं थे। वह अपना अधिकांश समय कृष्णको समर्पित मन्दिरमें और भारत भरसे आए साधुओं व तीर्थ यात्रियोंसे मिलने तथा भक्ति पदोंकी रचना करनेमें व्यतीत करती थीं।

हत्याके प्रयास

पतिकी मृत्युके पश्चात मीराबाईकी भक्ति दिन-प्रतिदिन और भी बढ़ती गई। वे मन्दिरोंमें जाकर वहां विद्यमान कृष्ण भक्तोंके सामने कृष्णजीकी मूर्तिके आगे नाचती रहती थीं। मीराके लिए आनन्दका वातावरण तो तब बना, जब उनके कहनेपर राजाने महलमें ही कृष्णका एक मन्दिर बनवा दिया। महलमें मन्दिर बन जानेसे भक्तिका ऐसा वातावरण बना कि वहां साधु-सन्तोंका आना-जाना प्रारम्भ हो गया। मीराबाईके देवर राणा विक्रमजीतसिंहको यह सब अप्रिय लगता था। ऊदाजीने भी मीराबाईको समझाया; किन्तु विरक्त मीरा भगवान श्रीकृष्णमें रमती गईं और वैराग्य धारण कर जोगन बन गईं। भोजराजके निधनके पश्चात सिंहासनपर बैठनेवाले विक्रमजीतसिंहको मीराबाईका साधु-सन्तोंके साथ उठना-बैठना अरुचिकर था; अतः उसके मीराबाईको मारनेके दो प्रयासोंका चित्रण मीराबाईकी कविताओंमें हुआ है। एक बार फूलोंकी टोकरीमें एक विषैला सर्प भेजा गया; परन्तु टोकरी खोलनेपर उन्हें कृष्णकी मूर्ति मिली। एक अन्य अवसरपर उन्हें विषका प्याला दिया गया; किन्तु उसे पीकर भी मीराबाईको कोई हानि नहीं पहुंची।

द्वारिकामें वास

इन सब कुचक्रोंसे पीडित होकर मीराबाई अन्ततः मेवाड छोडकर मेडता आ गईं; परन्तु यहां भी उनका भक्तिपूर्ण 'स्वच्छन्द' व्यवहार स्वीकार नहीं किया गया। तब वे तीर्थयात्रापर निकल पड़ीं और द्वारिकामें बस गईं। वे मन्दिरोंमें जाकर वहां विद्यमान कृष्ण भक्तोंके सामने

कृष्णकी मूर्तिके आगे नाचती रहती थीं। उनका यह नृत्यके माध्यमसे साधना और भक्तिका क्रम अनवरत चलता रहा। मान्यता है कि चित्तौडसे कतिपय ब्राह्मण उन्हें बुलानेके लिए द्वारिका भेजे गए। मीरा रणछोडसे आज्ञा लेने हेतु द्वारिकाके मन्दिरके गर्भगृहमें गईं और उन्होंने अन्दरसे द्वार बन्द कर लिया। जब वे बाहर नहीं आईं तो द्वार खोलकर देखा गया। न वे मिलीं न उनकी देह! परन्तु उनका उत्तरीय (दुपट्टा) अवश्य श्रीकृष्णके विग्रहके गलेमें लिपटा हुआ था, वे उन्हींमें अन्तर्धान हो गईं थीं। उनकी सदेह मुक्तिके पश्चात् ख्रिस्ताब्द १५५४ में मीराके नामसे चित्तौडके मन्दिरमें गिरिधरलालकी मूर्ति स्थापित हुई। यह मीराका स्मारक और उनके इष्टदेवका मन्दिर दोनों था। गुजरातमें मीराकी अत्यधिक प्रसिद्धि हुई। हित हरिवंश तथा हरिराम व्यास जैसे वैष्णव भी उनके प्रति श्रद्धा भाव व्यक्त करने लगे।

एक अन्य मान्यता है कि मीराबाईके मनमें श्रीकृष्णके प्रति जो प्रेमकी भावना थी, वह जन्म-जन्मान्तरका प्रेम था। मान्यतानुसार मीरा पूर्व जन्ममें वृन्दावनकी एक गोपिका थीं। उन दिनों वह राधाकी प्रमुख सखियोंमेंसे एक हुआ करती थीं और मन ही मन भगवान् कृष्णको प्रेम करती थीं। इनका विवाह एक गोपसे कर दिया गया था। विवाहके पश्चात् भी गोपिकाका कृष्ण प्रेम समाप्त नहीं हुआ। सासको जब इस बातका पता चला तो उन्हें घरमें बन्द कर दिया। कृष्णसे मिलनेकी तडपमें गोपिकाने अपने प्राण त्याग दिए और कलियुगमें जोधपुरके पास मेडता ग्राममें राठौर रतनसिंहके घर गोपिकाने मीराके रूपमें जन्म लिया। मीराबाईने अपने एक अन्य दोहेमें जन्म-जन्मान्तरके प्रेमका भी उल्लेख किया है:

“आकुल व्याकुल फिरुं रैन दिन, विरह कलेजा खाय ॥

दिवस न भूख नींद नहीं रैना, मुखके कथन न आवे बैना ॥

कहा करुं कुछ कहत न आवै, मिल कर तपत

बुझाय ॥

क्यों तरसाओ अंतरजामी, आय मिलो किरपा कर स्वामी।

मीरा दासी जनम जनम की, परी तुम्हारे पाय ॥”

मीराबाईके मनमें श्रीकृष्णके प्रति प्रेमकी उत्पत्तिसे सम्बन्धित एक अन्य कथा भी मिलती है। इस कथानुसार, एक बार एक साधु मीराके घर पधारे। उस समय मीराकी आयु प्रायः ५-६ वर्षकी थी। साधुको मीराकी माने भोजन परोसा। साधुने अपनी झोलीसे श्रीकृष्णकी मूर्ति निकाली और पहले उसे भोग लगाया। मीरा मांके साथ खडी होकर इस दृश्यको देख रही थीं। जब मीराकी दृष्टि श्रीकृष्णकी मूर्तिपर गई तो उन्हें अपने पूर्व जन्मकी सभी घटनाओंका स्मरण हो गया और तत्पश्चात् मीरा कृष्णके प्रेममें मग्न हो गईं।

जीव गोस्वामीसे भेंट

मीराबाईके दर्शन और ज्ञानसे सम्बन्धित एक प्रसंग अत्यन्त चर्चित है। मीराबाई वृन्दावनमें भक्त शिरोमणि जीव गोस्वामीके दर्शनके लिए गईं। गोस्वामीजी अपनी साधनाकी मान्यताके अनुसार स्त्रियोंको देखना भी अनुचित समझते थे। उन्होंने मीराबाईसे मिलनेसे निषेध कर दिया और अन्दरसे ही कहला भेजा कि हम स्त्रियोंसे नहीं मिलते। इसपर मीराबाईने सन्देशवाहकके माध्यमसे जो उत्तर भिजवाया वह बड़ा मार्मिक था। उन्होंने कहा, वृन्दावनमें श्रीकृष्ण ही एक पुरुष हैं, यहां आकर ज्ञात हुआ कि उनका एक और प्रतिद्वन्द्वी उत्पन्न हो गया है। मीराबाईका ऐसा मधुर और मार्मिक उत्तर सुन कर जीव गोस्वामी नंगे पांव बाहर निकल आए और बड़े प्रेमसे उनसे मिले।

ऐसे ही अनेकानेक प्रसंग उनके आध्यात्मिक जीवनमें घटित हुए। संसारकी चिन्तासे स्वयंको मुक्त रखते हुए भगवद्भक्तिकी प्रेरणा देनेवाली सन्त मीराबाई सभीके लिए आदर्श हैं। उनकी भगवान् श्रीकृष्णमें अटूट निष्ठाको देखते हुए उन्हें कोटि-कोटि नमन भी अपर्याप्त ही हैं।

हिन्दू राष्ट्रकी स्थापनाकी दिशा

हम इस पत्रिकाके माध्यमसे हिन्दू राष्ट्रकी स्थापनाकी क्या आवश्यकता है ?, यह आपको बताते ही रहते हैं; पिछले कुछ अंकोंसे हम हिन्दू धर्म राज्यकी स्थापनाकी दिशा क्या होनी चाहिए ?, वह इस पत्रिकाके माध्यमसे आपको बता रहे हैं, इसी क्रममें प्रस्तुत है अगला भाग । ये तथ्य सनातन भारतीय संस्कृति संस्थाद्वारा प्रकाशित ग्रन्थ 'हिन्दू राष्ट्रकी स्थापनाकी दिशा' से उद्धृत हैं।

हिन्दू राष्ट्रकी स्थापनाकी दिशा

ब्राह्मतेजका (आध्यात्मिक बलका) महत्त्व

१. 'ब्राह्मतेज' क्या है ?

'ब्राह्मतेज'का अर्थ है, साधना करनेसे उत्पन्न होनेवाला आध्यात्मिक बल !

२. ब्राह्मतेजकी आवश्यकता

हिन्दू राष्ट्रकी स्थापनाका शिवधनुष धर्माचरणी हिन्दुओंको ही उठाना है। 'शिवधनुष' शब्दका उपयोग इसलिए किया है; क्योंकि यह कार्य केवल बाहुबलसे नहीं हो पाएगा। इसके लिए दैवी सामर्थ्य भी आवश्यक है। केवल शारीरिक, मानसिक अथवा बौद्धिक स्तरपर कार्य करनेसे हिन्दू राष्ट्रकी स्थापना नहीं हो पाएगी। इसके लिए आध्यात्मिक स्तरपर भी प्रयत्न करने पड़ेंगे। हिन्दू राष्ट्रकी स्थापनाके लिए क्षात्रतेजके साथ ब्राह्मतेज (आध्यात्मिक बल) भी आवश्यक है।

३. तेजसे कार्य कैसे होता है ?

अणुबमसे परमाणुबम अधिक शक्तिशाली होता है; क्योंकि वह अणुसे अधिक सूक्ष्म होता है। अर्थात् जो जितना अधिक सूक्ष्म है, वह उतना अधिक शक्तिशाली है। कोई भी कार्य विविध स्तरोंपर कैसे होता है, इसका विचार करनेपर ब्राह्मतेजका सामर्थ्य समझमें आएगा।

३ अ. पञ्चभौतिक (स्थूल, वैज्ञानिक स्तर) : शत्रु कहां हैं ?, यह पञ्चज्ञानेन्द्रियोंसे ज्ञात होता है। उदाहरणके लिए, वह दिखाई दे अथवा उसकी हलचल ज्ञात हो, तो

उसे बन्दूककी गोलीसे मारा जा सकता है; परन्तु यदि वह चुपचाप कहीं छिप जाए, तो बन्दूकधारी उसे नहीं मार पाएगा। यहां मारनेके लिए केवल स्थूल शस्त्र बन्दूकका उपयोग किया गया है।

३ आ. पञ्चभौतिक (स्थूल) और मन्त्र (सूक्ष्म) साथ-साथ : प्राचीनकालमें धनुषपर चढ़ाया हुआ बाण मन्त्रोच्चारणके साथ छोड़ा जाता था। मन्त्रोच्चारणसे उस बाणपर शत्रुका नाम सूक्ष्मरूपसे अंकित हो जाता था और वह बाण, तीनों लोकोंमें कहीं भी छिपे हुए शत्रुको ढूँढकर मार डालता था।

३ इ. मन्त्र (सूक्ष्मतर) : अगले चरणमें बन्दूक, धनुष-बाण आदि स्थूल शस्त्रोंके बिना केवल विशिष्ट मन्त्रसे शत्रुको मारा जा सकता है।

३.ई. व्यक्त संकल्प (सूक्ष्मतम) : 'अमुक कार्य हो जाए', इतना-सा विचार भी किसी गुरु अथवा सन्तके मनमें आ जाए, तो वह कार्य हो जाता है। इससे अधिक उन्हें दूसरा कुछ नहीं करना पड़ता। इस प्रकारके कार्य करनेकी शक्ति ७०% आध्यात्मिक स्तरके सन्तोंसे ही होती है।

(सर्वसाधारण व्यक्तिका आध्यात्मिक स्तर २०% होता है। मोक्षप्राप्त व्यक्तिका आध्यात्मिक स्तर १००% होता है।)

३ उ. अव्यक्त संकल्प (सूक्ष्मातिसूक्ष्म) : इसमें 'अमुक कार्य हो जाए', ऐसा संकल्प सन्तके मनमें आए बिना भी वह कार्य हो जाता है। इसका कारण है, सन्तका अव्यक्त संकल्प। इस प्रकारके कार्य ८०% से अधिक आध्यात्मिक स्तरके सन्तोंसे ही होते हैं।

३ ऊ. अस्तित्व (अति सूक्ष्मातिसूक्ष्म) : इस अन्तिम चरणमें मनमें संकल्प भी नहीं करना पड़ता। सन्तके केवल उपस्थित रहनेसे, समीप रहनेसे अथवा सत्संगसे कार्य हो जाता है। ९०% से अधिक आध्यात्मिक स्तरके सन्तोंसे ही ऐसे कार्य होते हैं।

३ ए. संकल्पसे होनेवाले कार्य, अर्थात् ब्राह्मतेजसे होनेवाले कार्य :

संकल्पसे कार्य होनेके लिए न्यूनतम ७०% आध्यात्मिक स्तर होना चाहिए। संकल्प कैसे कार्य करता है?, यह अगले उदाहरणसे ध्यानमें आएगा।

कल्पना कीजिए कि मनुष्यके मनकी शक्ति १०० इकाई (यूनिट) है। प्रत्येक मनुष्यके मनमें दिनभर कुछ-न-कुछ विचार आते ही रहते हैं। इन विचारोंमें शक्ति व्यय होती रहती है। किसीके मनमें दिनभरके १०० विचार आए, तो उसकी उस दिनकी अधिकांश शक्ति समाप्त हो जाएगी। परन्तु यदि विचार ही नहीं आए, अर्थात् मन निर्विचार रहा और ऐसे व्यक्तिके मनमें विचार आया कि 'अमुक कार्य हो जाए'; तब उस एक विचारको सफल बनानेके लिए १०० इकाई शक्ति सक्रिय हो जाती है। इसीलिए उस विचारके (संकल्पके) अनुसार कार्य हो जाता है। इसीको 'ब्राह्मतेज' कहते हैं।

विचार यदि सतका होगा, तब उसमें अपनी साधनाकी शक्ति व्यय नहीं होती। ईश्वर ही वह कार्य पूर्ण करते हैं; क्योंकि वह सतका अर्थात् ईश्वरका कार्य है। यह होनेके लिए व्यक्तिको नामस्मरण, सत्संग, सत्सेवा तथा सतके लिए त्याग, इस मार्गसे साधना करते हुए मनकी ऐसी अवस्था प्राप्त करनी चाहिए कि उसमें असतके विचार ही न आए।

यह सुनकर किसी-किसीको विश्वास नहीं होगा कि संकल्पसे भी कार्य होते हैं। वे लोग समझ लें कि विश्वकी उत्पत्ति ही ईश्वर संकल्पसे हुई है; अतः संकल्प जैसा शक्तिशाली और कुछ भी नहीं है।

हम पुराणोंमें ऋषि-मुनियोंके शाप देनेकी कथाएं पढ़ते हैं। इस शापमें संकल्पकी ही शक्ति होती है। ऋषि-मुनियोंको यह संकल्पशक्ति साधनासे ही प्राप्त होती थी। हिन्दू राष्ट्रकी स्थापनाके लिए केवल शारीरिक स्तरपर प्रयत्न करना पर्याप्त नहीं होगा, इसके लिए तो साधनासे संकल्पशक्ति प्राप्त कर कार्य करना होगा।' (२३.४.२०१२)

४. ब्राह्मतेजका महत्त्व

अ. 'ब्राह्मतेजमें क्षात्रतेज होता ही है; इसलिए ऋषि, राजाको शाप दे सकते थे।' (१.५.२०१२)

आ. सन्तोंमें विद्यमान ब्राह्मतेजके कारण ही उनके कार्यक्रममें लाखों लोग श्रद्धापूर्वक स्वेच्छासे आते हैं। उन्हें बुलानेके लिए राजनीतिक दलोंकी भांति पैसे नहीं देने पड़ते अथवा वाहनकी निःशुल्क व्यवस्था नहीं करनी पड़ती है।

इ. किसी भी राजनीतिक दलका विदेशमें प्रचार नहीं होता; परन्तु आध्यात्मिक संस्थाओंका होता है; क्योंकि आध्यात्मिक संस्थाओंमें धर्मकी व्यापकता एवं आध्यात्मिक बल अर्थात् ब्राह्मतेज होता है।

(२३.४.२०१२)

५. क्षात्रतेजके साथ ब्राह्मतेजका महत्त्व बतानेवाले उदाहरण

५ अ. भगवान परशुराम : इनका वर्णन इस प्रकार किया गया है -

अग्रतः चतुरो वेदाः पृष्ठतः सशरं धनुः ।

इदं ब्राह्मं इदं क्षात्रं शापादपि शरादपि ॥

अर्थ : जिन्हें चार वेद कण्ठस्थ हैं, अर्थात् पूर्ण ज्ञान है। जिनकी पीठपर धनुषबाण हैं, अर्थात् शौर्य है; ब्राह्मतेज एवं क्षात्रतेजसे युक्त इनका (परशुरामजीका) जो कोई विरोध करेगा, उसे वे शापसे अथवा बाणसे पराजित करेंगे।

भगवान परशुरामने ब्राह्मतेज एवं क्षात्रतेजके बलपर २१ बार पृथ्वीको दुर्जन क्षत्रियोंके भारसे मुक्त किया था। वाल्मीकि ऋषिने इस कार्यको 'राजविमर्दन' कहा था। जिसका अर्थ है, दुर्जन राजनीतिज्ञोंका नाश।' यहां ध्यानमें रखने योग्य बात यह है कि भगवान परशुरामने केवल शस्त्रसे ही नहीं, शापसे भी अर्थात् ब्राह्मतेजसे भी, दुष्ट राजनीतिज्ञोंका विनाश किया था।

५ आ. छत्रपति शिवाजी महाराज : ये अपनी कुलदेवी श्री भवानीदेवीके अनन्य भक्त थे। उनके मुखमें सदैव, 'जगदम्ब जगदम्ब'का जप होता रहता था।

उनकी सेना भी लडते समय 'हर हर महादेव' का जयघोष करती थी। इसलिए सेना एवं संसाधन अल्प होनेपर भी, वे पांच बलवान मुसलमान राज्यसत्ताओंको झुकाकर 'हिन्दवी स्वराज्य'की स्थापना कर पाए। उनकी इस साधनाके कारण ही उन्हें सन्त तुकाराम महाराज एवं सन्त समर्थ रामदास स्वामीजीके आशीर्वाद मिले तथा बड़े-बड़े संकटोंसे उनकी रक्षा हुई। देवताओंकी भक्ति करनेसे हमें दैवी सहायता मिलती है, जिससे हमारे कार्य सफल होते हैं, इसका यह उत्तम उदाहरण है।' (२३.४.२०१२)

६. हिन्दू राष्ट्रकी स्थापनाके लिए ब्राह्मतेज एवं क्षात्रतेजका बल आवश्यक !

'हिन्दू राष्ट्रकी स्थापनाके लिए ब्राह्मतेज प्राप्त हो, इस उद्देश्यसे समष्टिकार्य करनेवाले १०० सन्त तथा हिन्दू राष्ट्रकी स्थापनाके लिए ५ लाख सक्रिय राष्ट्रप्रेमियों और धर्मप्रेमियोंकी आवश्यकता है। अगले ४ वर्षोंमें सनातन संस्थाके १०० साधक सन्तत्व प्राप्त करेंगे। इससे वातावरणसे रज-तम घटेगा तथा राष्ट्रप्रेमियों और धर्मप्रेमियोंके सर्व ओर सुरक्षा-कवच बनेगा। इस सुरक्षाकवचसे उन्हें बल मिलेगा। इससे हिन्दू राष्ट्रकी स्थापना करना सम्भव होगा।' (१.४.२०१३)

जैसे अन्धेरेमें दीपकका प्रकाश उपयोगी होता है; परन्तु घने कोहरेमें दीपकका प्रकाश भी निष्प्रभावी होता है। उसी प्रकार वर्तमान रज-तम युक्त वातावरणमें कार्य करनेके कारण हम अपनी साधनाकी क्षमताका उपयोग पर्याप्त मात्रामें नहीं कर पाते। सन्तोंके प्रभावसे जब यह रज-तमका आवरण दूर होगा, तभी हिन्दू राष्ट्रकी स्थापनाके लिए राष्ट्रप्रेमियों तथा धर्मप्रेमियोंकी कार्यक्षमताका पूरा उपयोग हो पाएगा।

७. हिन्दू राष्ट्रकी स्थापनाके युद्धमें सनातनके साधकोंका मुख्य योगदान ब्राह्मतेजके रूपमें रहेगा

'हिन्दू राष्ट्रकी स्थापनाके लिए ब्राह्मतेज और क्षात्रतेज दोनों नितान्त आवश्यक हैं। समर्थ रामदास

स्वामी-छत्रपति शिवाजी महाराज, आर्य चाणक्य-सम्राट चन्द्रगुप्त, ये जोड़ियां इतिहासमें ब्राह्मतेज और क्षात्रतेजके आपसमें मिलकर कार्य करनेके उत्तम उदाहरण हैं। सनातनका हिन्दू राष्ट्रकी स्थापनाका कार्य प्रमुख रूपसे ब्राह्मतेजपर आधारित रहेगा।

क्षात्रतेज, दुष्प्रवृत्तियोंके विरुद्ध संघर्ष करनेकी शारीरिक और मानसिक क्षमता है। यह क्षमता एक वर्षमें भी प्राप्त की जा सकती है; परन्तु ब्राह्मतेजके विषयमें ऐसा नहीं है। इसे प्राप्त करनेके लिए तन-मन-धनका त्याग करते हुए १०-१५ वर्ष तो साधना करनी ही पडती है। सनातनके साधकोंने ऐसी साधना की है। इसलिए वे ब्राह्मतेजके माध्यमसे हिन्दू राष्ट्रकी स्थापनामें सम्मिलित होंगे।

हिन्दू राष्ट्रकी स्थापनाके कार्यमें अन्य अधिकतर संगठनोंमें साधनाकी नींव न होनेके कारण, वे क्षात्रतेजका उपयोग करेंगे तथा सनातनके साधक ब्राह्मतेजका उपयोग करेंगे।' (१.८.२०१२)

इस्लामके विषयमें गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोरके विचार

"ईसाई व मुसलमान मतावलम्बी अन्य सभीको समाप्त करने हेतु कटिबद्ध हैं। उनका उद्देश्य केवल अपने मतपर चलना नहीं है; अपितु मानव धर्मको नष्ट करना है। वे अपनी राष्ट्र भक्ति 'गैर-मुस्लिम' देशके प्रति नहीं रख सकते। वे संसारके किसी भी मुस्लिम एवं मुस्लिम देशके प्रति तो निष्ठावान (वफादार) हो सकते हैं; परन्तु किसी अन्य हिन्दू या हिन्दू देशके प्रति नहीं। सम्भवतः मुसलमान और हिन्दू कुछ समयके लिए एक दूसरेके प्रति दिखावटी मित्रता तो स्थापित कर सकते हैं; परन्तु स्थायी मित्रता नहीं।" सन्दर्भ - रवीन्द्र नाथ वाङ्मय, २४ वां खण्ड पृष्ठ २७५, टाइम्स आफ इण्डिया, १७-०४-१९२७, कालान्तर

स्वास्थ्यका रक्षक : सैन्धव लवण



सैन्धव लवण और समुद्री लवण

सैन्धव लवण अथवा सेन्धा 'नमक' (नमक फारसी शब्द है) एक प्राकृतिक लवण है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है 'सिन्धु या सिन्धुके क्षेत्रसे आया हुआ'। समुद्री लवणसे होनेवाली हानियोंके विपरीत सैन्धव लवणसे स्वास्थ्यकी दृष्टिसे अनेकानेक लाभ होते हैं। जबकि समुद्री लवण, आयुर्वेदके अनुसार स्वास्थ्यके लिए घातक है। समुद्री लवण जो पहलेसे ही हानिकारक है, उसमें अतिरिक्त अप्राकृतिक 'आयोडीन' डालकर पूरे देशको बेचा जा रहा है, जिससे कई गम्भीर रोग हो रहे हैं। सामान्यतः उपयोगमें लाया जानेवाला समुद्री लवण उच्च रक्तचाप, मधुमेह आदि गम्भीर रोगोंका भी कारण बनता है; क्योंकि यह अम्लीय (acidic) होता है, जिससे रक्तमें अम्लता बढ़ती है और रक्त अम्लता बढ़नेसे कई रोग होते हैं।

समुद्री लवणसे हानियां

समुद्री लवणका सन्तुलित मात्रामें सेवन नहीं करनेसे रक्तदाबपर (ब्लडप्रेसरपर) कुप्रभाव पड़ता है। इसका अधिक सेवन रक्तप्रवाहको अनियन्त्रित कर देता है। वैज्ञानिकोंके अनुसार समुद्री लवण अधिक खानेवालोंमें केशकी समस्या बनी रहती है। ऐसे व्यक्तियोंके केश अधिक झड़ते हैं एवं केशमें सुदृढ़ता भी नहीं रहती। समुद्री लवणका नित्य सेवन पेटके लिए भी हानिकारक होता है। इससे मेदरोग (मोटापा), उदर

पीड़ा, भार असन्तुलन (वजन बढ़ना) आदि समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं। अधिक लवणके सेवनसे त्वचा सम्बन्धी कई रोगोंके होनेकी आशंका रहती है; क्योंकि समुद्री लवण खानेसे शरीरमें आवश्यकतासे अधिक स्वेद (पसीना) आने लगता है, जो शरीरके लिए हानिकारक होता है। इसप्रकार स्पष्ट है कि समुद्री लवणका अधिक मात्रामें सेवन करनेसे शरीरको कई प्रकारकी हानियां हो सकती हैं; अतः प्रयास करें कि अपने नित्य जीवनमें समुद्री लवणके (सफेद नमकके) स्थानपर सेंधा लवणका उपयोग करें ! यह आपको स्वस्थ एवं रोगमुक्त बनाए रखेगा; क्योंकि समुद्री लवण वैसे ही घातक है और उसपर उसमें अप्राकृतिक आयोडीनकी मिलावट 'करेला और नीम चढ़ा'की उक्तिको चरितार्थ करती है। समुद्री लवणमें आयोडीनकी उपस्थिति इसे अत्यधिक विषैला (जहरीला) पदार्थ बना देती है। जिसके नित्य प्रतिदिन सेवनसे नपुंसकता जैसे गम्भीर रोग हो रहे हैं।

औद्योगिक, अप्राकृतिक 'आयोडीनयुक्त' लवणके दुष्प्रभावोंको देखते हुए विश्वके ५६ देशोंने इस लवणपर ६२ वर्षोंसे पूर्वसे ही प्रतिबन्ध लगा रखा है। इन देशोंकी सूचीमें अमेरिका, जर्मनी, फ्रांस, डेनमार्क जैसे विकसित देश भी सम्मिलित हैं। डेनमार्क शासनने ख्रिस्ताब्द १९५६ में 'आयोडीनयुक्त' लवणपर इस प्रमाणके आधारपर प्रतिबन्ध लगाया था; क्योंकि वहांके अधिकांश लोग इसके प्रयोगसे नपुंसक हो गए थे। जनसंख्या इतनी न्यून हो गई कि देशके अस्तित्वके नष्ट होनेका संकट उत्पन्न हो गया था। यह तथ्य जानते हुए भी हमारे यहांके भ्रष्ट नेताओंने यह विधान (कानून) बना दिया कि 'आयोडीनरहित' लवण भारतमें नहीं बिक सकता। कालान्तरमें भाजपाके नेतृत्ववाले प्रधानमन्त्री अटलबिहारी वाजपेयीके केन्द्र शासनने १३ सितम्बर, २००० को एक आदेश जारी करते हुए भारतके लवण

उद्योगको आयोडीनयुक्त लवण ही बेचनेकी अनिवार्यतासे मुक्त कर दिया था; किन्तु वर्ष २००५ के कांग्रेस शासित भारत 'सरकार'के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याणमन्त्री, डॉ. ए. रामडोसने पुनः अपना भ्रष्ट और जनताके स्वास्थ्यसे खिलवाड करनेवाला आदेश लागू कर दिया और सम्भवतः यह आदेश आज भी लागू है; परन्तु यह आदेश लवणके विक्रयपर लागू होता है, सेवनपर नहीं; अतः जिन्हें अपने स्वास्थ्यकी चिन्ता है, वे हानिकारक समुद्री लवणके स्थानपर सेन्धा लवणका सेवन कर सकते हैं और यह करना भी चाहिए; क्योंकि ये समुद्री लवण पानीमें कभी पूर्णतः नहीं घुलता; अतः इसे वृक्क (किडनी) भी नहीं निकाल पाता और यह पथरीका भी कारण बनता है। ये लवण नपुंसकता और पक्षाघातका (लकवेका) बहुत बड़ा कारण है, समुद्री लवणसे शरीरको मात्र ४ प्रकारके पोषक तत्त्व मिलते हैं। जबकि सेन्धा लवणके उपयोगसे रक्तचापपर नियन्त्रण रहता है; क्योंकि ये अम्लीय नहीं; अपितु क्षारीय है (alkaline) और जब कोई क्षारीय पदार्थ अम्लसे मिलता है तो अम्लीय दुष्प्रभावोंको नष्ट कर देता है और रोग नहीं होते। सेन्धा लवण शरीरमें पूर्णतः घुलनशील है। सेन्धा लवणकी शुद्धताके कारण ही इसे व्रतमें खाते हैं। सेन्धा लवणकी प्रकृति शीतल होती है और यह शरीरमें ९७ प्रकारके पोषक तत्वोंकी पूर्ति करता है। इन पोषक तत्वोंके अभावमें ही पक्षाघातकी (लकवेकी) आशंका बनी रहती है। आयुर्वेदके अनुसार सेन्धा लवण त्रिदोष अर्थात् वात, पित्त और कफको दूर करता है। यह पाचनमें सहायक होता है, साथ ही, इसमें पाए जानेवाले पोषक तत्व 'पोटैशियम' और 'मैग्नीशियम' हृदयके लिए लाभकारी होते हैं; इसीलिए इसे आयुर्वेदिक औषधियों जैसे लवण भाष्कर, पाचन चूर्ण आदिमें भी प्रयोग किया जाता है।

सहस्रों वर्षोंसे प्रचलित हमारी आयुर्वेद चिकित्सा पद्धतिमें भी भोजनमें सेन्धा लवणके ही उपयोगका परामर्श दिया जाता है, समुद्री लवणका नहीं।

९० के दशकके व्यापारिक वैश्वीकरणके उपरान्त बहुराष्ट्रीय प्रतिष्ठानोंके दुष्प्रचारके पश्चात् 'आयोडीन'को खानेपर बल दिया गया है, जो मात्र एक षड्यन्त्र है और कुछ नहीं। 'आयोडीन'के लिए समुद्री लवण खानेकी आवश्यकता नहीं है; क्योंकि यह हमें आलू, लहसुन, अरबीके साथ-साथ हरी शाकोंसे (सब्जियों से) भी पर्याप्त मात्रामें मिल जाता है।

सेन्धव लवणके अन्य लाभ :

सेन्धा लवण पाचन तन्त्रको सुदृढ़ करनेमें प्रभावी होता है। यह एक औषधिकी भांति कार्य करता है जिससे पाचनमें सुधार आता है। यह क्षुधा (भूख) बढ़ानेमें सहायक है और अम्लता (एसिडिटी) भी न्यून करता है।

नियमित रूपसे सेन्धा लवण खानेसे शरीरमें रक्त-संचरण सुचारु रूपसे होता है और शरीरमें विद्यमान विषाक्तता (टॉक्सिक) दूर होती है। यह शरीरके रक्तचापके स्तरका सन्तुलन बनाए रखता है। सेन्धा लवण शरीरका भार (वजन) न्यून करनेमें सहायता करता है। नींबूके रसके साथ सेन्धा लवण पेटके कीड़ोंको नष्ट करता है और वमन (उल्टी) रोकता है। यह मांसपेशियोंकी ऐंठन दूर करता है। इसके लिए एक गिलास पानीमें थोड़ासा सेन्धा लवण मिला कर पिएं ! यह 'साइनस' और श्वास रोगोंके उपचारमें सहायक है। सेन्धा लवणसे शरीरकी रोग प्रतिरोधक प्रणाली सुदृढ़ होती है। सेन्धा लवणसे मंजन करनेपर यह दांतोंको स्वच्छ करता है और उन्हें अधिक श्वेत बनाता है, इसके लिए लवणका अत्यधिक पिसा होना आवश्यक है। सेन्धा लवण अस्थियों (हड्डियों) और कोशिकाओंको सुदृढ़ बनाता है। सेन्धा लवणका उपयोग सौन्दर्यवृद्धिमें भी किया जाता है। इसके उपयोगसे शरीरकी मृत त्वचासे मुक्ति मिलती है। अनिद्रा होनेपर भी सेन्धा लवण प्रभावकारी है, जिन्हें अनिद्रा रोग हो, वे समुद्री लवणके स्थानपर सेन्धा लवण प्रयोग करें तो उन्हें इस रोगमें लाभ होगा। -दिनेश दवे

आइए, सीखें संस्कृतनिष्ठ हिन्दी



विनम्र निवेदन



उपासनाके आश्रम हेतु अर्पण का विज्ञापन

बैंक स्थानान्तरण अथवा अर्पण राशि जमा नीचे दिए गए विवरणके अनुसार की जा सकती है :

खाता नाम : वैदिक उपासना पीठ

बैंक : आईसीआईसीआई बैंक

खाता क्रमांक : 194505000050

खातेकी प्रकृति : चालू

आईएफएससी कोड - ICIC0001945

शाखा पता : डी 22, डिफेंस कॉलोनी, नई दिल्ली - 110024

धनादेश (चेक) अथवा डिमाण्ड ड्राफ्ट 'वैदिक उपासना पीठ' के खातेमें नई दिल्लीमें देय

दान, आयकर अधिनियम, 1961 की धारा '80 जी' के अन्तर्गत छूट प्राप्त है।

दानराशि जमा करानेके पश्चात प्राप्तिपत्र (रसीद) प्राप्त करने हेतु -

कृपया हमारे संगणकीय पते (इ-मेल आईडी) vedicupasana@gmail.com पर अथवा सम्पर्क क्रमांक + 91-9717492523 / +91-9999670915 पर WhatsApp सन्देश भेजकर सूचित करें !

न्यायोपार्जित वित्तस्यै दशमांशेन धीमतः ।

कर्तव्योविनियोगश्चत ईश्वर प्रीत्यर्थमेव च ॥

- स्कंद पुराण

अर्थात : धर्मके मार्गका अनुसरणकर, अर्जित धन भी तभी शुद्ध होता है, जब उसका दस प्रतिशत भाग ईश्वरीय कार्य, धर्म-कार्य या संत-कार्यमें अर्पण किया गया हो।

अवैदिक शब्द

संस्कृतनिष्ठशब्द

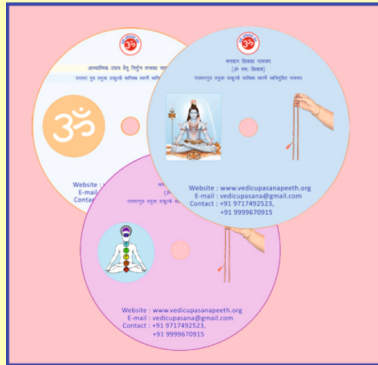
ओहदा	पद
पुल	सेतु
बू	गन्ध
कै	वमन
अंगूर	द्राक्ष
इन्साफ	न्याय
बेनाम	अनाम
मल्लाह	नाविक
नाफरमानी	अवज्ञा
आक्रा	स्वामी
निगाहबान	संरक्षक
दमा	श्वासरोग
तब्दील	परिवर्तित
नेकराय	उचित मत
उम्दा	श्रेष्ठ, उत्तम
प्याला	कटोरी, पात्र
खराश	छीलन, रगड़
उम्मीद	आशा, अपेक्षा
एहसान	उपकार, आभार
आह	निश्वास, दीर्घश्वास
मरम्मत	जीर्णोद्धार, सम्यक्
इलाज	उपचार, चिकित्सा
पर्दा	आड, ओट, द्वारपट
गैर	अन्य, दूसरा, पराया
कमोबेश	न्यूनाधिक, थोडा-बहुत
कारगुजारी	कार्यपटुता, कौशल, कार्यक्षमता
तिमारदारी	रोगीकी सेवा सुश्रूषा, सेवा-सुश्रूषा
दूरअंदेश	दूरदर्शी, आगमसोची, परिणामदर्शी
तफ्तीश	अन्वेषण, परीक्षण, अनुसन्धान, अन्वीक्षण

राष्ट्र एवं धर्मके रक्षणका महत्त्व अंकित करनेवाला उपक्रम

वैदिक उपासना पीठद्वारा व्हाट्सऐपके माध्यमसे श्रव्य हिन्दू वार्ताका (ऑडियो हिन्दू वार्ता) शुभारम्भ हो चुका है, इसे जिस गुटसे प्रसारित किया जा रहा है उसका नाम 'राष्ट्र आराधना' । इस गुटमें हिन्दुत्व एवं हमारे राष्ट्रके ऊपर हो रहे आघात, लव जिहाद, धर्मान्तरण, गोरक्षा, बांग्लादेशी घुसपैठ, पकिस्तान एवं बांग्लादेशके हिन्दुओंपर हो रहे अत्याचार जैसे विषयोंपर समाचार आदान-प्रदान किए जाते हैं । जो भी व्यक्ति, संगठन, संस्था, अभी बताए गए विषयोंपर अपने विचार या सामाचार या स्वयं या संस्थाद्वारा किए जा रहे प्रयत्नोंको इस हिन्दू वार्तामें डालने हेतु इच्छुक हों या श्रव्य हिन्दू वार्ता सुनने हेतु इच्छुक हों वे हमें +९१ ९७९७४९२५२३, ९९९९६७०९९५ (+91 9717492523,9999670915) इस चलभाष क्रमांकपर 'मुझे राष्ट्र आराधना गुटमें जोड़ें' यह सन्देश लिखकर भेज सकते हैं।

श्रव्य हिन्दू वार्ता

राष्ट्र आराधना गुट



तनुजा
ठाकुरके
सात्त्विक
स्वरमें
विविध
पद्धतियोंमें
वास्तु-

शुद्धि, चक्र - शुद्धि, व्यष्टि साधना एवं अनष्टि शक्तिके कष्टके निवारणार्थ सगुण (भिन्न देवताओंकी) एवं निर्गुण नामजपकी विविध ध्वनि चक्रिकाएं (CD) हमारे पास उपलब्ध हैं।



तनुजा ठाकुरके
प्रेरणादायी
सुवचनोंका संग्रह
प्रस्तुत करनेवाला,
वैदिक उपासना
पीठद्वारा प्रकाशित
प्रथम धर्मग्रन्थ,
जिसमें धर्म,

अध्यात्म, साधना राष्ट्ररक्षण तथा
धर्मजागृति विषयक एवं प्रत्येक व्यक्तिद्वारा
पठनीय सुविचारोंका संग्रह हैं।

‘व्यक्तिगत प्रेमकी अपेक्षा राष्ट्रप्रेम और धर्मप्रेम करके देखें, इनमें अधिक आनन्द है !’- परात्पर गुरु डॉ. जयंत आठवले

साधना व धर्माचरणका महत्त्व अंकित करनेवाला उपक्रम

वैदिक उपासना पीठद्वारा whatsapp के माध्यमसे श्रव्य (ऑडियो) सत्संग आरम्भ किया गया है! इस उपक्रम अन्तर्गत whatsapp के माध्यमसे प्रत्येक दिवस धर्मशिक्षणके साथ ही हिन्दू राष्ट्रकी स्थापना हेतु हिन्दू समाज सिद्ध हो, इस हेतु सामयिक विषयोंपर भी सत्संग एवं व्याख्यान प्रसारित किए जाते हैं। इनका लाभ लेने हेतु अपना और आपके जनपदका नाम लिखकर, चलभाष (मोबाइल) क्रमांक +९१ ९७१७४९२५२३, अथवा ९९९९६७०९१५ (+919717492523, 9999670915) पर 'मुझे जागृत भव गुटमें जोड़ें' यह सन्देश लिखकर भेजें एवं घर बैठे इस उपक्रमका लाभ लें!



धर्मधारा सत्संग
जागृत भव गुट



उपासना प्राकृतिक चिकित्सा एवं शोध केन्द्र



कष्ट अनेक.....समाधान एक

उपासना

अपनी समस्याओंसे सम्बन्धित मार्गदर्शन हेतु इस केन्द्रके सदस्य बनें!

सम्पर्क : + 91 9717492523, + 91 9999670915

website : www.vedicupasanapeeth.org, e-mail : upasanawsp@gmail.com